आज का नाटक

(नौ बहुमंचित नाटिकाएं)

डॉ० राघव प्रकाश



साहित्यागार

चौड़ा रास्ता, जयपुर

मूल्य तीस रुपये

प्रथम संस्करण 1984

प्रकाशक
साहित्यागार
धामाणी मार्केट की गली
चौड़ा रास्ता, जयपुर 302 003

मुद्रक मंगलम् आर्ट प्रिण्टर्स, जयपुर

AAJ KA NATAK (One Act Plays)
by Dr Raghava Prakash

नेपथ्य से

ये सभी नाटिकाए मच से गुजरकर ही इस रूप को प्राप्त कर सकी हैं। देश के बहुत से शहरो और कस्बो मे विभिन्न देशकर्मी दलो द्वारा विभिन्न बार इनका मचन हुआ है। इह राष्ट्रीय और प्रादेशिक स्तर के अनेक पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं। 'अन्नपूर्णा रेस्टोरण्ट' को दूरदशन द्वारा भी प्रदर्शित किया गया है।

ये नाटिकाए हमारी आज की जिदगी, विशेष रूप से युवा जिन्दगी के घावो की पीडा को प्रस्तुत करती हैं, और ऐसी पीडा को जो निरन्तर बदलत रहने के दौर मे है, अत इनकी भावी प्रस्तुतिया मे भी हर कुशल निर्देशक इह हर बार पुनरचित करते रहने की समावनाए पा सकते हैं।

ये रग शब्द अब प्रकाशित होकर रगकर्मियो के समीप पहुच रहे हैं, इसी मे इनकी व्यापक्तर मचीय सायक्ता निहित है।

कल का नाटक के 'ग' की इस छटपटाहट को समर्पित

"मुझे लगता है इस धरती पर सत्तर करोड़ बबूलों का एक जंगल था बीहड़ जंगल। कमाल है उनमें क्या एक भी चन्दन नहीं था जिससे आजादी की वीणा बन पाती।" (पृ 167)

क्रम

मैदान में आजाओ

चेतन
प्रकाश] (बेरोजगार नवयुवक)

मजदूर

पूंजीपति

अफसर

नवीन (मजदूर का लड़का)

अजय (प्रकाश का लड़का)

स्थान चौराहा — समय अपराह्न

सपाट रंगमंच। चेतन और प्रकाश दर्शकों से बातें करने लगते हैं।)

चेतन — (दर्शकों से) नमस्कार!

प्रकाश — (दर्शकों से झुककर, अदा के साथ) नमस्कार!

चेतन — आप भी क्या सोचेंगे, न जान न पहचान खाम-ख्वाह मे नमस्कार करके गले पडते है। जी नहीं। आप भले ही हमे न जानते हो, हम सब को बहुत अच्छी तरह जानते हैं

प्रकाश — और जानने मे मुश्किल भी क्या है? इस दुनिया मे आदमी के दो ही तो रंग है, दो ही धर्म और दो ही जातियां

चेतन — रोजगार

प्रकाश — और बेरोजगार

चेतन — और आपको यह जान कर कितनी हार्दिक प्रसन्नता होगी कि मै चेतन और यह प्रकाश

प्रकाश — हम दोनो चेतन प्रकाश

चेतन — दिन दहाडे

प्रकाश — बेरोकटोक

चेतन — धडल्ले से बेरोजगार हैं। (विराम) हम से सब सवाल पूछ लो, हम सबका जवाब दे सकते है

प्रकाश — मगर मेहरबानी करके, एक सवाल मत पूछिए

चेतन — कि क्या करते हो? आजकल क्या करते हो?

प्रकाश — इस सवाल से मैं कांप उठता हू, भयभीत हो जाता हू

चेतन मेरा खून सूग जाता है मेरी सास घुटने नगती है -

प्रकाश यया करता हू मैं आजकल ?

चेतन ऐसी वात नही है मैं पुछ करता नही हू । करने के लिए मेरे पास दिन भर वहुत काम है । मैं टारे मारता हू किर्रे मारता हू -

प्रकाश मैं झक मारना हू

चेतन मैं मक्खी मारता हू । आप ही वताइये, मक्खी मारना कोई सहज काम है ? कोई मार कर तो वताये एकाध ? लेकिन मैं हू कि सुवह से शाम तक मक्खी मारता हू

प्रकाश और तुम्ही क्या ? यहा पर सव मक्खी मारते है । जो जितना वडा है वह उतनी ही ज्यादा मक्खी मारता है

चेतन मगर अपनी अपनी किस्मत है, किसी को मक्खी मारने पर तनख्वाह मिलती है, हमे मक्खी मारने पर मक्खी भी नही मिलती ।

प्रकाश मक्खी तुमको मिलेगी भी कैसे ? कोई अफसर या सेठ तुम्हारा चाचा-मामा है ?

चेतन नही ।

प्रकाश तुम्हारा वाप नेता या मिनिस्टर है ?

चेतन नही ।

प्रकाश तो क्या है तुम्हारा वाप ?

चेतन (गर्व के साथ) मजदूर ।

प्रकाश	(चिढ़ाने के स्वर में मुँह बिदकाते हुए) मजदूर तो फिर मजदूर बाप को नमक मिर्च लगा कर चाटो। (गम्भीर होते हुए) ऐसे कुछ नहीं होने-वाला जब तक एक काम नहीं करोगे।
चेतन	क्या?
प्रकाश	(जोर देकर) और वह काम करना ही होगा।
चेतन	कौनसा?
प्रकाश	इस चौराहे पर खड़े होकर सब को गाली बकी जाय।
चेतन	तुम्हारा दिमाग खराब है।
प्रकाश	लेकिन बिना किसी को गाली बके हमारी सुनता कौन है? अगर तुम दूसरों का नुकसान नहीं कर सकते तो तुम्हें पूछेगा कौन? यह दुनिया बड़ी मक्कार है, इसके डण्डे मारो तो कुतिया की तरह यह तुम्हारे तलवे चाटेगी और साधु बने रहे तो धक्का मारकर चली जायेगी।
	(मजदूर का प्रवेश। बड़बड़ाते हुए मंच के एक ओर से दूसरी ओर जाते हुए)
मजदूर	फैक्ट्रियों को तो इन्होंने अपने बाप का राज समझ रखा है। आदमी आदमी नहीं हुआ स्साला कोई बीड़ी-सिगरेट हो गया। जब चाहा जलाई और पी फिर मोड़ कर फेंक दी।
प्रकाश	(मजदूर से) किस पर बड़बड़ा रहे हो भाई?
मजदूर	अपनी किस्मत पर।
चेतन	तो हो क्या गया?

(मजदूर प्रकाश की बगल मे आकर खडा हो जाता है)

मजदूर — तुम पर गुजरे तब मालूम हो क्या हो गया ? कुल-मिलाकर दस साल की सर्विस के बाद आज फैक्ट्री से हटा दिया। अब पूछे कोई उन हटाने वालो से कि मेरे बच्चे खायेंगे क्या पहनेंगे क्या ? स्सालो, खुद की तोन्दो का घेरा तो कुल-मिलाकर बराबर बढा रहे हो और हमारे पेट पर लात मार कर पिचकाने मे तुम्हे मजा आता है ?

चेतन — दस साल बाद फैक्ट्री से निकाल दिया ? तुम ढग मे काम नही करते होगे ?

मजदूर — ढग से ही तो काम करता था, उसी का तो यह नतीजा है। वह था एक माकड दादा, कुलमिला कर एकदम कामचोर। लेकिन हमेशा मनेजर के डण्डा किये रहता था, डण्डा। हटाते उसको भी ? मैनेजर को नानी याद आ जाती कुल मिलाकर।

प्रकाश — (चेतन स) सुना तुमने ? यह है शराफत का प्रसाद। (मजदूर से) तुमको फक्ट्री से निकाल दिया और तुम्हारी यूनियम क्या भाड भौंकती रही ?

मजदूर — हू, यूनियन मे भी तो दरार पड गई। कुल-मिलाकर दो सौ मजदूरो की छटनी कर दी और किसी ने चू तक नही को।

चेतन — यही तो मारा जाता है मजदूर (यहा से तीनो पात्र भापए दन क अन्दाज म बोलन लगत ह)

प्रकाश — लेकिन अब हाथ पर हाथ रख कर नही बैठा जा सकता। हमे मिलकर कुछ न कुछ करना ही होगा। अलग-अलग अपनी-अपनी किस्मत को कोसते रहने से कुछ नही होगा, कुछ नही होगा ऐसे और हम एक हो जाये तो ये सेठ कुछ नही कर सकते।

चेतन — मुझे मालूम है हम सब को एक होना होगा और धन पर बैठे इन अजगरो के दात तोडने होगे।

प्रकाश — आदमी पैदा होता है तो आप समझते हैं उसके केवल एक पेट ही पैदा होता है? उसके दो दो हाथ पैर भी तो पैदा होते है? पेट है बेचारा एक और हाथ पर हैं चार चार। क्या वजह है कि चार हाथ-पैर मिलकर भी एक छोटे से पेट को नही भर सकते?

चेतन — सब भर सकते हैं। ये लम्बे-लम्बे हाथ इस छोटे से पेट को या चुटकियो मे भर सकते हैं, चुटकियो मे। पर इन हाथो की कमाई, इन हाथो की गाढी कमाई पेट तक पहुच ही नही पाती। फिर कहा चली जाती है वह?

मजदूर — सेठ की तोद मे, अफसर की जेब मे।

प्रकाश — किसान सुबह से शाम तक हल चलाता है, मजदूर रात-दिन फैक्ट्री मे लोहा कूटता है। सब खून का पसीना करते हैं, दिन-रात।

चेतन — लेकिन किसान और मजदूर के पसीने की बूदें कहा गिरती हैं?

मजदूर — सेठ के मटके मे, अफसर के मटके मे।

प्रकाश — हमे पूजीपति के उस मटके को, अफसर के उस मटके को फोडना होगा।

चेतन — पूजीपति कहता है (यग्य से) अगर तुम गरीब हो तो तुम्हारी किस्मत का दोप। तुम्हारा भगवान तुम से नाराज है तो हम क्या कर ?

(पीछे पूजीपति का प्रवेश। वह इस सारे प्रसग को भाप कर चौक उठता है और सोचने लगता है)

मजदूर — कुल मिलाकर पूजीपति को करना ही क्या है ? अब करना तो हमे है, हमे करना है। हमे सारे किसानो को एक करना है सारे मजदूरो को एक करना है। (पूजीपति मजदूर का अपने पास बुलाने का अनेक प्रकार के इशारो स प्रयास करता है। मजदूर पूजीपति की तरफ देखता हुआ भी पहले तो आगामी वाक्य को अपने मूल स्वर म बोलता रहता है, किन्तु धीरे धीरे स्वर को धीमा करता हुआ अपनी बात को बीच म ही छोड कर पूजीपति क पास जाने लगता है) हमे सारे किसाना और मजदूरा को एक करना है। और उन्ह कहना और उन्हे कहना है—(पूजीपति के पास चला जाता है–तथा इशारा द्वारा ही मालूम पडता है कि उसका पूजीपति से नौकरी सम्बधी समभौता हो गया है। चेतन और प्रकाश दोना एक और आश्चय की दृष्टि से मजदूर को देखते हैं। मजदूर लौट कर हडबडाहट के स्वर म बोलने लगता है।) हा तो कुल-मिलाकर मैं आप से कह रहा था...मैं कह रहा था कि ..

मैं कुछ कह रहा था आपसे ? कुल मिलाकर मैं क्या कह रहा था आपसे

चेतन तुम कह रहे थे कि सारे किसानो और मज़दूरो को एक करना है और उन्हे कहना है

मजदूर हा हा, कुल मिलाकर याद आया कि सारे किसाना और मजदूरो को एक करना है और उनको कहना है, कहना ही नही समझाना है कि पूजीपति से टक्कर लेने मे कोई फायदा नही है—कोई फायदा नही है

चेतन अरे तुम उल्टा बोल गये

प्रकाश कहो कि पूजीपति से टक्कर लेने मे ही फायदा है

मज़दूर नहीं ई समझाता हू, समझाता हू । हा तो कुल मिलाकर बहनो और भाइया ! हमे सारे किसाना और मज़दूरा को एक करना है और उन्हे कहना है कहना ही नही समझाना है कि अगर तुम्हारा दिमाग खराब है और तुम्हे कुल मिलाकर टक्कर लेनी ही है तो टक्कर पूजीपति से नही अफसर शाही से लो

प्रकाश यह क्या बक रहे हो तुम

मजदूर समझाता हू, समझाता हू । कुलमिलाकर पूजीपति से लडागे तो वह मिल बन्द कर देगा, कारखानो के ताले लगा देगा, मजदूरा की छटनी कर देगा । और तब हमारी रूखी-सूखी रोटी भी बन्द हो जायेगी । इसलिये पूजीपति से लडो मत, उससे

मिल जुलकर काम करो। हा तो कुल-मिलाकर भाइयो और बहनो ! मेरे साथ बोलिए दुनिया के सेठो मजदूरो एक हो (क्रमश धीमे स्वर मे यही बोलते हुए पीछे हटता हुआ नेपथ्य मे चला जाता है।)

चेतन — नही सेठ और मजदूर एक कभी नही हो सकते। उनका रिश्ता जोक और आदमी का है, बिल्लो और चूहे का है

प्रकाश — और इस रिश्ते को मजबूत बनाता है अफसर

चेतन — पू जीपति नाजायज़ मुनाफा कमाता है और अफसर चू नही करता। पू जीपति टैक्स की चोरी करता है और अफसर चू नही करता। क्यो ?

प्रकाश — क्योकि अफसर को रिश्वत मिलती है, घूस मिलती है। अफसर गरीबो की खेती को रौदने के लिए पू जीपति को मनचाही छूट देता है।

चेतन — पू जीपति पनपता ही इसलिए है कि अफसर के हाथ मे पू जीपति की चोटी ढीली है और चोटी ढीली क्यो न हो। अफसर के हाथ मे रिश्वत, अफसर के मु ह मे रिश्वत।

(इसी बीच अफसर मच से गुजरता है और 'अफसर' शब्द को सुनकर ठिठक जाता है।)

प्रकाश — हा, अफसर कुछ नही देखता, सिफ रिश्वत देखता है, अफसर कुछ नही सुनता, सिफ रिश्वत सुनता है। (प्रकाश के इस कथन के प्रारम्भ से ही अफसर प्रकाश को इशारे से अपने पास बुलाने का प्रयास करता रहता है।) अगर हमे पू जीपति से लडाई लडनी

है, अगर हमे पूजीपति से टक्कर लेनी है—तो तो (क्रमश धीमे होते स्वर म कहता हुआ अफसर के पास जाकर सविस मिलने की समझौता-परक भगिमा धरता हुआ लौटकर हड़बड़ाहट क स्वर म बोलने लगता है। इस बीच अफसर चला जाता है) हा तो बहनो और भाइयो! मैं आप से कह रहा था मैं ही आपसे कह रहा था और आप भूले नही होंगे इस बात को कि मैं ही आप से कह रहा था और आप को यह बात बहुत अच्छी तरह याद होगी कि मैं आप से कुछ कह रहे था हा हा मैं कह रहा था कि अगर आपको नौकरी प्राप्त करनी है तो

चेतन ओफ हो, तुम यह नही कह रहे थे। तुम कह रहे थे कि अगर हम पूजीपति से लडाई लडना है तो...

प्रकाश हा, हा, याद आया। हा तो बहनो और भाईयो! मैं कह रहा था कि अगर हमे पूजीपति से लडाई लडनी है तो हमे अफसर की मेहरबानी से नौकरी प्राप्त करनी होगी।

चेतन यह बीच मे अफसर की मेहरबानी कहा से आ गई?

प्रकाश समझाता हू, समझाता हू हा तो बहनो और भाइयो, अगर अफसर नौकरी नही देगा तो खाओगे क्या? जब खाओगे नही तो लडोगे कैसे? और लडोगे नही तो पूजीपति की तोद कैसे

फाटाग ? हा ता बहनो और भाइयो ! मेरे कहने का साराश यह है कि यह है कि अब आप सब अपने अपने घर जा सकते हैं

(प्रकाश वाक्य का अन्तिम अश बोलते बोलते शीघ्रता से साथ नेपथ्य में चला जाता है)

चेतन (जाते हुए प्रकाश को हिकारत से देखता हुआ गम्भीर स्वर में—) लेकिन आप अपने घरों में जा भी कैसे सकते हैं ? आपके घरो पर तो पूजीपति का ताला है, और उसकी चाबी है अफसर की जेब में। घर आपका, ताला धन्ना सेठ का और चाबी ? चाबी अफसर की जेब में। आज से ही नहीं हजारों वर्षों से। यहा पर ही नहीं, दुनिया के कोने कोने में। और यह धन्ना सेठ बडा जालिम है। यह उस चाबी को एक अफसर की जेब से दूसरे अफसर की जेब में, दूसरे की जेब से तीसरे अफसर की जेब में घुमाता रहता है। और कमाल तो यह है कि न तो यह धन्ना सेठ ही मरता है न अफसर की जेब ही फटती है।

(मच के पीछे से अफसर गुजरता है। चेतन को देखकर ठिठक जाता है तथा कुछ दृढ निश्चय के साथ शीघ्रता से वापस चला जाता है। चेतन बिना किसी अवरोध के ऊंचे स्वर में बोलता रहता है।)

आप समझते हैं आप अपने घरों में रहते हैं ? जनाब ! आप घरों में नहीं किराये के सुविधापरस्त तम्बुओं में रहते हैं। जी हा, तम्बुओं में। मुझ

मालूम हैं वे दोनो, और ग्राप मे से हर ग्रादमी लल्लो चप्पो करके किराये के तम्बुग्रो मे पहुच गया है। लेकिन ये धन्ना सेठ, ये अफसर कभी भी इन तम्बुग्रो के आग लगा सकते हैं

(इसी बीच दो सिपाही मच पर ग्राते हैं। अफसर भी ग्राता है और चेतन को पकडने के लिए सिपाहियो को निर्देश देता है। सिपाही चेतन के दोनो हाथो को पकड लेते हैं तथा उसे पीछे घसीटने का प्रयास करते हैं। चेतन उनसे सघर्ष करता हुग्रा तीव्र स्वर के साथ बोलता रहता है।)

चेतन (ग्रपने दोनो बाजुग्रो को ग्रचानक सिपाहियो के द्वारा पकडा हुग्रा देख कर हतप्रभ सा, स्थिति को पहचानता हुग्रा।) नही नही मैं कहता हू तुम पहले से ही तम्बुग्रो को छोड कर मदान मे ग्राजाग्रो। तुम्हारा बदन झुलसने से पहले ही मैदान मे ग्राजाग्रो। मैदान मे सर्दी है, गर्मी है, बारिश है, ववण्डर है पर मैदान मे ग्रादमी का दम नही घुटता। इन दमघोटू तम्बुग्रो के जलने से पहले ही मैदान मे ग्राजाग्रो मदान मे ग्राजाग्रो मैदान मे ग्राजाग्रो (दोनो सिपाहियो के द्वारा घसीटने के बावजूद भी ग्रावेश म 'मदान मे ग्राजाग्रो' कहता हुग्रा ग्रन्त म सिपाहियो के द्वारा नेपथ्य म घसीट दिया जाता है।)

(ग्रन्धकार)

दूसरा दृश्य

(पुन प्रकाश। पूंजीपति का एक हाथ मे छडी और दूसरे हाथ मे मजदूर के गले मे बधी रस्सी थामे हुए प्रवेश। मजदूर अपने हाथो और घुटनो के वल बन्दर की तरह धीरे-धीरे चलता हुआ आता है।)

पूंजीपति (रस्सी खीचते हुए और धमकाते हुए) अबे चल जल्दी चल। (कूल्हे पर ठोकर मारता है। मजदूर ऊपर उठने की कोशिश करता है तो पूंजीपति छडी मारता है।) ऊपर उठता है, हाथो पर चल, बन्दर की तरह। (मजदूर हाथो से चलने लगता है) हा ऐसे, इस तरह। (इसी बीच दर्शक दीर्घा मे रगमच के सामने स्कूल की ड्रेस मे बस्ता लटकाए नवीन 'गीत गाता चल' गुनगुनाता हुआ रगमच के एक छोर से दूसरे छोर की ओर जाता है। मच पर अपने पिता को देखकर अचानक ठिठक जाता है और रगमच पर चढ जाता है।)

नवीन कौन? बापू? आपके गले मे रस्सी?

मजदूर नवीन है! यह रस्सी नही बेटे, यह तो नौकरी है नौकरी।

नवीन यह नौकरी है! (पूंजीपति की ओर आक्रोश की मुद्रा मे देखकर) और ये कौन है? कौन है आप हमारे बापू के गले मे रस्सी डालनेवाले?

पूंजीपति (मजदूर के पुट्ठो पर ठोकर मारते हुए) अपने लडके को तमीज सिखाओ कि सेठ साहब से कैसे बात करनी चाहिये?

(पूजीपति जब जब मजदूर के मारता है नवीन और अधिक भय तथा आक्रोश म मन ही मन बौखलाता रहता है)

मजदूर ऐसे नही बोलने बेटे । ये तो सेठ साहब हैं मालिक हैं । (गिडगिडायी हँसी) है है है अभी बच्चा है साहब, नासमझ (लडके से) इनके बहुत बडी फक्ट्री है । ये तुम्हे भी नौकरी दे देंगे । (पूजीपति से) दे देंग ना सेठ साहब ?

पूजीपति नौकरी ? हा-हा दे देंगे । नौकरी का क्या है, बशर्ते कि यह हमारी फक्ट्री की तमीज सीख सके ।

मजदूर वो तो मैं सब सिखा दूगा ! है हं हं बच्चा है ना अभी है ह है

(नवीन झुंझलाकर जाने लगता है)

पूजीपति (डाटते हुए) कहा जा रहे हो ?

नवीन क्यो ? पढने कॉलेज मे ।

पूजीपति नौकरी कॉलेज मे है क्या ? पूछो अपने बापू से कि नौकरी कालेज मे है क्या ? (मजदूर चुप रहता है। इस पर मजदूर के पुट्ठा पर ठोकर मारते हुए) बताओ अपने राजकुमार को कि नौकरी कहा है ?

मजदूर है है बेटा, नौकरी तो सेठ साहब की फक्ट्री मे है ।

पूजीपति (व्यग्यात्मक नम्रता के साथ) और तुम पढ कर करोगे भी क्या राजकुमार ? नौकरी तो हम तुम्ह वसे ही दे देंग, फिर पढने से फायदा ?

नवीन नही मैं पढने जाऊगा ।

पूजीपति	(मारता है मजदूर के) इसे तमीज सिखाओ।
नवीन	(आक्रोश मे) सेठजी
मजदूर	वेटा जिद्द नही करते। पढने मे रखा ही क्या है। और नौकरी तो सेठ साहब है ना सेठ साहब ?
पूजीपति	(स्वीकृति मे गरदन हिलाता है) लाओ ये किताबे हमे दे दो।
	(नवीन किताबो को पीठ के पीछे छिपा लेता है)
मजदूर	दे दो वेटा
नवीन	नही, मैं किताब नही दूगा।
मजदूर	मालिक कल परसो ही किताबे खरीदी है। अभी किताबे नयी है ना किताबो से थोडा प्रेम है
पूजीपति	(गर्व के साथ अपनी जेब से पर्स निकाल कर मजदूर से कहता है) इन किताबो की कीमत क्या है ?
मजदूर	(चुप)
पूजीपति	(मजदूर को ठोकर मारता हुआ) इन किताबो की कीमत बोलोजी कीमत कीमत।
नवीन	नही। मैं किताबे नही बेचूगा। (वह किताबो को पीठ पीछे और मजबूती से पकड लेता है।)
पूजीपति	(नवीन से) हमारे यहा जिद्द नही चलती। (मजदूर से जोर से) किताबो की कीमत बोलोजी
मजदूर	याद नही मालिक। यही कोई होगी पच्चीस तीस रुपये। हे है हैं
पूजीपति	(पर्स से पचास रुपये जमीन पर फेकते हुए) यह लो पचास रुपये। छीन लो इसकी किताब और जला दो इन्हे।

मजदूर जमीन पर बिखर हुए रुपयों को उठाने के लिए लपकता है और पूंजीपति नवीन की किताबें छीनकर दूसरी तरफ फेंक देता है। नवीन किताबों की तरफ जाने लगता है।)

पूंजीपति (डांटते हुए) कहां जाते हो? (लड़का डर कर रुक जाता है और सहम जाता है) ये किताबें ही तो तुम्हारा दिमाग खराब करती हैं, वरना आदमी तो पैदायशी नंगा और भूखा है। पैदा होते ही रोता है और जिंदगी भर उसे रोने से फुरसत नहीं मिलती

मजदूर हैं अब तो यह भी मजदूर बन गया न मालिक? हैं हैं अब तो इसको भी मजदूरी ? है ना साहब ?

पूंजीपति दो कौड़ी का लड़का नहीं और मजदूरी मांगते हो? (विराम) मिलेगी मिलेगी। पांच सौ रुपये महीना। हमारी छड़ी संभालने के पांच सौ रुपये। (छड़ी देता है) लो राजकुमार यह छड़ी लो नवीन अकड़ कर खड़ा रहता है और छड़ी नहीं लेता)

पूंजीपति (जोर स) संभालो हमारी छड़ी।

(नवीन विवशता के साथ झटके से छड़ी ले लेता है।)

मजदूर (गिड़गिड़ाकर) मालिक। है है हैं मैं खड़ा हो सकता हू?

पूंजीपति (जोर से) नहीं ई। हजार रुपये महीना तुमको झुकने के लिए ही तो देते हैं। भूल जाओ कि तुम

//

कभी खड़े भी थे । और फिर तुम सब खड़े होकर करोगे भी क्या ? खड़े होने के लिए तो हम ही बहुत है । (नवीन से) तुम भी राजकुमार झुकना सीखो, अभी से झुकने की आदत डाल लो, वरना हमारी फैक्ट्री का दरवाजा बहुत छोटा है, है है हें

नवीन (यथावत अकड़कर सीधा खड़ा रहता है)

पूंजीपति (झुकाने का प्रयास करते हुए) झुको राजकुमार, झुको । झुकने के लिए ही तो पाच सौ रुपये देते है । झुको झुको ।

नवीन (पूंजीपति के जोर लगाने के बावजूद भी नवीन अकड़ कर खड़ा रहता है) नही मैं नही

पूंजीपति (गुस्से मे मजदूर को मारता है) अपने राजकुमार को झुकना सिखाओ ।

मजदूर सेठ साहब कह रहे ह तो झुक जाओ बेटा, झुकने मे तुम्हारा जाता ही क्या है ?

नवीन हूं झुकने मे जाता ही क्या है ? (बड़बड़ाता हुआ सहम कर झुक जाता है)

पूंजीपति अब आओ राजकुमार ! हम तुम्हे हमारी फैक्ट्री का दरवाजा दिखाने चलते है ।

(पूंजीपति हाथ मे मजदूर के गले की रस्सी पकड़े हुए है, मजदूर घुटना के बल बन्दर की तरह चलत हुए तथा नवीन झुका हुआ हाथ म छड़ी सभाले नेपथ्य की ओर जाने लगते है उनके चले जाने के बाद नेपथ्य म अफसर का व्यक्त प्रकाश के गले म रस्सी बांध हुए प्रवेश ।)

अफसर (प्रकाश को झुकाते हुए) बनो वन्दर वन्दर बनो (प्रकाश के परो पर बूट की मारते हुए) यू इडियट, तुम्हे वन्दर बनना नही आता। (प्रकाश को झुकाते हुए) झुक। और झुक। थोडा और। हा। बस। तुम्हारे बेटे को बुलाओ। (विराम) सुना नही तुमने ? तुम्हारे बेटे का भी बुलाओ।

प्रकाश (ललचाते हुए) उसे भी सर्विस ?

अफसर यस यस बुलाओ उसे।

प्रकाश अजय ! अजय !! बेटा जल्दी आओ। साहब ने बुलाया है। (अजय जल्दी-जल्दी आता है और अपने पिता को गौर से देखता हुआ ठिठक जाता है।)

अजय (परेशानी और आश्चय) डैडी। आपके लग गई क्या ?

प्रकाश नही। लगी नहीं बेटा

अजय तो आप हाथो के बल क्यो खडे ह ?

प्रकाश बेटा, सर्विस मे हाथो के बल ही खडा होना पडता है।

अजय और गले मे रस्सी ?

(अजय रस्सी को पकडने की कोशिश करता है किन्तु अफसर उसे झटक देता है)

प्रकाश यह रस्सी ही तो खाने को देती है। बेटा, साहब को गुड मार्निग करो।

अजय (मूड बिगाड कर खडा रहता है)

प्रकाश (डाटते हुए) अजय! गुड मोर्निंग करो साहब को।

अजय (खीझकर, मुह फेर कर) डैडी के साहब गुड मोर्निंग ।

अफसर और हम तुम्हें भी सर्विस दे दे तब ? तब भी डैडी के साहब गुड मार्निंग !

प्रकाश बेटे कहो— साहब गुड मोर्निंग ।

अजय (चुप)

प्रकाश (डाटते हुए) अजय ! कहो गुड मोर्निंग साहब ।

अजय (विद्रोह) मैं डैडी की तरह बन्दर नहीं बनूंगा डैडी के साहब गुड मोर्निंग ।

(अफसर प्रकाश की पीठ पर मारते हुए क्रोध के साथ)

अफसर अपने साहबजादे को अभी तक यह नहीं बताया कि इन हाथों की लम्बाई कितनी है ? (अजय से) बेवकूफ । तू यह नहीं जानता, इन हाथों की लम्बाई कितनी है । (अजय को झिझोडते हुए) अच्छे से अच्छे अकड़ को बन्दर बना कर रख देते हैं ये । (जोर से) यह फायल हाथ मे रखो और मैं चाहूंगा कि जिन्दगी भर यह फायल ही हाथों में रहे । (अजय सीधा खड़ा रहता है और फायल बेमन से झटके से ले लेता है ।)

अफसर (झिझोडते हुए) अकड़ कर खड़े होने की जरूरत नहीं । झुको और झुको । (अफसर अजय की गर्दन पकड़ कर झुका देता है) झुके रहो हमेशा, ऑलवेज ।

(पूंजीपति का मजदूर के गले में रस्सी बांधे हुए, उसे बन्दर की तरह चलाते हुए प्रवेश । पीछे नवीन भी झुका हुआ छड़ी संभाले आता है ।)

पूंजीपति अजी मैंने कहा नमस्कार, हुजूर नमस्कार।

अफसर आइये सेठ साहब आपका ही तो इन्तजार था। (मजदूर को देखकर उसकी पीठ ठोकते हुए) वाह! आप का बन्दर तो बहुत मोटा हो रहा है। किस चक्की का आटा खिलाते है आप?

पूंजीपति हैं हैं ह साहब! खाने को तो आप की ही चक्की का आटा खाता है। हैं हैं हैं इन मूर्खों का आटा मिल जाय तो बस फूलने लगते है। है हैं —हैं या समझो कि है हैं हैं हुजूर आटा तो आपके घर भी पहुच जायेगा है है है मेरा मतलब बोरी दो बोरी हैं हैं हैं।

अफसर वो तो ठीक है। लेकिन हमारा बन्दर दिखने मे ही दुबला-पतला है। वैसे बहुत ताकतवर है। हो जाय दोनो की भिडन्त? क्या?

प्रकाश नही, मैं लडना नही चाहता।

अफसर शटअप। तुम होते कौन हो चाहनेवाले? और आठ सौ रुपये तुम्हे आपस मे लडने के लिए ही तो देते हैं।

मजदूर (पूंजीपति से) मैं भी नही लडूंगा।

पूंजीपति हैं हैं कायर है क्या? फिर हजार रुपये महीना कोई शरीर फुलाने के मिलते हैं तुम्हे?

अफसर (प्रकाश को ठोकर मारता हुआ) यस। स्टाट। लडो।

प्रकाश नही में नही लड़ूगा।

पूजीपति (मजदूर को मारता हुआ) शुरु हो, भाई, लडो।

मजदूर मैं नही लड़ूगा।

(पूजीपति और अफसर दोनों मजदूर और प्रकाश को लडाने की काफी कोशिश करते है। उन्हे एक दूसरे की तरफ आगे धकेलते रहते हैं। किन्तु व वापस दूर हो जाते है। नवीन और विजय दोना परस्पर पूजीपति और अफसर को मारने के लिए इशारे करते है और काफी सघर्ष होने के बाद नवीन छडी को पूजीपति के मारता है तथा मजदूर के गले की रस्सी पूजीपति के हाथ से छीनकर मजदूर को मुक्त करा कर नेपथ्य मे भगा ले जाता है। इसी प्रकार अजय फायल को अफसर के सर पर मार कर, रस्सी खीचकर, प्रकाश को स्वतन्त्र कराकर भगा ले जाता है। अजय और प्रकाश दोनो की ये क्रियाए प्राय एक साथ होती हैं। अन्त मे अफसर और पूजीपति हक्के-बक्के खडे रहते हैं। इसी बीच चेतन पागल की पोशाक मे विक्षिप्त अवस्था म मच पर आता है। उसे देखकर पूजीपति और अफसर इशारो मे मत्रणा करने लगते हैं)

चेतन • (अपने आप हसते हुए पागल की तरह) है हैं है मैदान मे आजाओ मैदान मे आजाओ (रोता हुआ) मैदान मे आजाओ मैदान मे आजाओ (अफसर और पूंजीपति को देखकर हसते हुए) है हैं है तुम भी मैदान मे आ जाओ - तुम भी मैदान मे आजाओ

पू जीपति और अफसर दोनो चेतन का पकडने का तय करते हैं और फिर उसकी दोनो बाहो को पकड लेते हैं तथा घसीटते हुए नेपथ्य की ओर ले जाने की कोशिश करत है।

चेतन (स्थिति भांपते हुए पुन आकाश म उठता हुआ स्वर) नही नही। मैं कहता हू मैदान मे आजाओ मैं कहता हू अब भी वक्त है मैदान मे आजाओ। इन दमघोटू तम्बुओ से मदान मे आजाओ मैदान मे आजाओ मैदान मे आजाओ मैदान मे आजाओ।

(इसी बीच पू जीपति और अफसर चेतन को घसीटते हुए ले जात हैं। चेतन गिर जाता है, उनसे सघष करत हुए छूटने का प्रयास करता रहता है और अपना उक्त कथन बोलता हुआ अन्त मे पू जीपति और अफसर के साथ घिसटता हुआ नेपथ्य मे चला जाता है। और अब इस खाली रगमच पर पर्दा गिराया जा सकता है।)

[अन्धकार]

अन्नपूर्णा रेस्टोरेण्ट

पात्र	बाबू	फटे हाल युवक
	लाला	रेस्टोरेण्ट का मालिक अधेड, मस्त मौला, अक्खड ।
	पिट्टू	नौकर—किशोर वय

प्रथम दृश्य

(रगमच पर अन्धेरा। एक साधारण सा रेस्टोरेण्ट। मच के एक तरफ बडी टेबिल पर स्टोव, केतली कप प्लेट गिलास आदि रखे हुए। बाबू का चोरी करने के इरादे से प्रवेश। दुबकते-सहमते हुये इधर उधर चीजो को देखता है। इतने म हाथ से टकराकर कोई बर्तन गिर जाता है। उसकी आवाज से जागकर नेपथ्य से लाला का बडबडाता स्वर सुनाई पडता है। अगडाइया लेते, बडबडाते लाला का मच पर प्रवेश। एक कोने म बाबू दुबकने का प्रयत्न करता है।)

लाला (आखे मलते और उबासिया लेते हुए) ये चूहे नहीं कमा कर खाने देगे। हजार बार कहा है कि चूहो की दवा डाल दे पर यह सुनता कहा है! (रोशनी करता है। रोशनी म चौंधियाती आखो से बाबू को देखकर सहमे स्वर म) कौन है! चिट्टू! तू इधर क्या कर रहा है? (लडके को गौर से देखता हुआ) है! कौन हो? कौन हो तुम? चोर! चोर! चिट्टू जल्दी आ, चोर है चोर।

लाला (चिट्टू आखें मलता हडबडाता हुआ आता है।) अबे जल्दी आ - यह बडा चूहा है। अभी समझते है इसे। इधर से पकडले इसकी कमर। पकड! (लाला बाबू के बाजुओ को वश म कर लेता है और चिट्टू बाबू की कमर को कस कर पकड लेता

है। फिर दोनो उसे जमीन पर गिरा देते है और लाला उसको मारने लगता है।)

लाला (चिट्टू से) जाना अन्दर से मेरा घोटा तो लाना जरा।

(चिट्टू डण्डा लेने अन्दर दौड पडता है।)

लाला क्यो बे स्साले, यहा कोई हराम का माल समझा है या कमाकर रख गया था तू ? आने दे मेरा घोटा, अभी चोरी करना बताता हू तुझे।

(चिट्टू डण्डा लेकर आता है। डण्डा झपट कर बाबू को मारने लगता है। बाबू मार खाने से बचने का प्रयास करता है।)

बाबू मत मारो लालाजी मैंने कुछ नही चुराया माफ कर दो लालाजी छोड दो मुझे -

लाला अबे स्साले हट्टा कट्टा जवान होकर चोरी करता है। अरे डूब मर कही जाकर, क्या ? काम नही होता है तो भीख माग। लाखो मागते है, एक तू भी सही, क्या ? मैं म तेरा गला घोट दूगा आज। (गला दबोचने का प्रयास करता है। लडका रूधे गले से चीखता है। लाला गला छोड देता है।) तुझे पता नही यह बजरगबली का अन्नपूर्णा रेस्टोरेण्ट है। सारे देश का खाना पकता है इसमे स्साले अभी चखाता हू चोरी करने का मजा। (धक्का देता है।)

बाबू बहुत मजबूरी थी लालाजी

लाला मजबूरी ? मजबूरी तो वेश्या की होती है तेरी क्या मजबूरी।

बाबू तीन साल से बी ए किए बैठा हूं

लाला (चिट्टू भी लाला के आवेशित रूप के साथ स्वयं भी कृत्रिम आक्रोश का अभिनय करता रहता है।) बी ए पास हो और चोरी करते हो। कालेज मे यही पढाया जाता है तुम्हे ? चोरी करो और झूठ बोलो क्या ? लानत है तुम्हारी पढाई पर जो चोर पैदा करती है। स्साली निकम्मी पढाई ! न इधर का रक्खे न उधर का। और क्या करते हो।

बाबू कुछ नही। नौकरी की तलाश मे हू, मिलती ही नही।

लाला मिलती नही तो फिर चोरी करो ! क्या ! सारी दुनिया नौकर हो गई और तुम्हे नौकरी नही मिलती।

बाबू मिलती है पर रिश्वत मागते है—दो हजार तीन हजार। कहा से लाऊ मै तीन हजार ? घर मे खाने को दाना नही। आप ठीक कहते हैं लालाजी, मेरी भी कई बार इच्छा हुई कि डूब मरूँ कही जा कर नदी मे कूद जाऊ। रेल से कट जाऊ कम-से कम यह नौबत तो नही देखनी पडे। कहा से दू म रिश्वत ?

लाला (और अधिक तमककर) तो तुम भी रिश्वत देकर उन मक्कारो की जेब भरना चाहते हो। मनुष्य

नक्लची। न दीन का रहा न दुनिया का। (थोड़ा विराम—सामान्य स्वर में) कितने की नौकरी चाहते हो?

बाबू — यही कोई ढाई सौ-तीन सौ तक

लाला — तीन सौ तक! नाक घिस घिस कर मर जाओगे, नौकरी नहीं मिलेगी, क्या? दफ्तरों में लुटेरे बैठे हैं, लुटेरे, गैंग की गैंग। हाय रिश्वत हाय पैसा। पैसे की जोंकें आठ साल तक चप्पलें घिसता रहा तुम्हारी दुनिया की सड़कों पर बेरोजगार। दफ्तर-दफ्तर में कुत्ते की तरह भटकता रहा नौकरी के लिए। सबके दरवाजे बन्द। फिर खुद का ही यह धन्धा खोल लिया। कानखोल कर सुन लो! खाना, कपड़ा और डेढ़ सौ रुपये दूंगा, क्या? काम अच्छा किया तो और बढ़ा दूंगा। बोलो है मंजूर?

बाबू — (गद्गद् भाव से स्वीकृति में सर हिला देता है।)

लाला — (सर हिलाने की नकल करते हुए) यह मुण्डी हिलाने से काम नहीं चलेगा, बोलो मंजूर है? सुबह नाश्ता, दोपहर को खाना, चार बजे चाय फिर रात को खाना। दूध भी मिल जायेगा बचेगा तो। क्या? नंगा रहने नहीं दूंगा। मोटा खाओगे मोटा पहनोगे। क्या? यह पैण्ट फैण्ट हमको अच्छी नहीं लगती है। पहले बोल देता हूं। पजामा सिला दूंगा, क्या? अन्दर दरी-चद्दर है सोने के लिए। और सुनलो! मेरे पास

अलग-अलग भी रहती नहीं है — मुनिसिपैल्टी का मारा है — क्या? (चिट्टू को आवाज़) चिट्टू अबे चिट्टू—

चिट्टू (अन्दर से) आया लालाजी। (कोई दिखाई न आता है)

लाला सुनता नहीं है? तुझे भी नींद आती है क्या? जा अन्दर से मरहम ले आ। जहाँ इसके लगी है, वहाँ लगा दे, ठीक हो जायेगा। क्या?— (चिट्टू अन्दर से मरहम लिये हुए दौड़ा चला आता है।)

लाला मरहम रखनी पड़ती है। महीने में एक दो बार साला कोई-न-कोई आ ही धमकता है। और फिर हमसे भी नहीं रहा जाता। क्या? हम भी अपने हाथ सीधे कर लेते हैं। (ऊँचे स्वर में) हमारा गुस्सा है तेज। हम इसके लिये एक-दूसरे की नहीं सुनते। और फिर लग भी जाती है कहीं गुस्से में। तो मरहम भी रखनी पड़ती है। क्या?

बानू (सहमे हुए) और काम क्या है यहाँ।

लाला (अपनी पूर्ववत् मुस्कराहट के साथ)। काम? बहुत है। सिख जाओगे, सिख। सुबह चार बजे उठना, चिट्टू से झाड़ू लगवाना, भट्टी जलवाना क्या? दूध-चाय नाश्ते का इन्तजाम। सामान भी तैयार कर-वाओगे बरतन भी साफ करवाओगे और गल्ला भी सम्भालना पड़ेगा, क्या? रात में पूरे ग्यारह बजा करेंगे। बोलो मंजूर है?

बाबू (सिर हिलाते हुए) ठीक है।

लाला ठीक-वीक नहीं। साफ बोल दो। यहाँ जोर जबर-दस्ती नहीं चलती। करना हो तो रहो वरना खिसक जाओ और किसी की जेब साफ करना क्या ?

बाबू जाने दीजिए न लालाजी उस बात को

लाला नहीं मैं साफ बोल देता हूँ। अपने कोई लाग-लपट नहीं है। यहाँ आगे से गडबड की तो भट्टी मे झोंक दूँगा भट्टी में, क्या ? (फिर शान्त होते हुए) हाँ रुपयों की जरूरत हो तो बोल देना। रुपया है हाथ का मल। रुपये ने दुनिया खरीदी है रुपये ने हमको नहीं खरीदा क्या ? बस, ईमान नहीं बेचना, वरना (डण्डा उठाकर बाबू को देते हुये) लो यह घोटा लो, अन्दर रख दो। और सुनो ध्यान से रखना जरूरत पडती ही रहती है। (बाबू डण्डा लेकर अन्दर जाने लगता है। चिट्टू से —) चिट्टू ! इसे खाना खिला दो। (बाबू जाते हुए रुक जाता है) थोडा दूध भी। और सुनो, यहाँ आओ। (चिट्टू नजदीक आता है) देख थोड़ी मलाई भी बहुत मार खाई है।

(चिट्टू स्वीकृति से सर हिलाता हुआ चला जाता है। बाबू इसी बीच सकपकाता खडा रहता है। थोड़े विराम के बाद धीमे स्वर में कहता है —)

बाबू मैं खाना नहीं खाऊँगा।

लाला (तमक कर) खाना क्यो नही खाओगे ।

बाबू भूख नही है ।

लाला फिर झूठ । देखो हमे गुस्सा मत दिलाओ । यहा रहना है तो खाना खाओ ठूस ठूस कर । (बाबू के शरीर को झिझाडते हुए) इस कंकाल से काम नही होने का, क्या ? यहा नटने नटाने की चीं-चपर नही चलेगी । तुम मेरे कोई मेहमान नही हो जो तुम्हारी मनुहार करता रहू, क्या ? भूख लगने पर खा लिया करना अपने आप । खाना खाकर सो जाना । और सुनो ? बदन दुख रहा हो तो चिट्टू से दबवा लेना । क्या ।

(बाबू विवश होकर स्वीकृति मे सिर हिलाता है)

लाला अब मुण्डी ही हिलाते रहोगे या अन्दर भी चलोगे ।

(दोनो ही अन्दर चले जाते है अधकार ।)

दूसरा दृश्य

(वही सब कुछ । सुबह का समय । चिट्टू टेबिल आदि को पोछता हुआ । लाला कुर्सी पर बठा है । सामने गल्ला रखा हुआ है ।)

चिट्टू (टेबिल पोछते हुए लाला की ओर मुखातिब होकर) लालाजी, किस चिडिया को पकड लिया आपने भी ।

लाला	तो तरी छुट्टी थोड़े ही हो रही है ?

चिट्टू	मेरी छुट्टी की क्या बात है । बी ए पास थोड़े ही हू जो काम करने मे शर्म आये । यहा नही, और कही कर लूगा । पर वह आप की छुट्टी न कर दे कही । चोर आदमी का क्या भरोसा

लाला	अबे चुप रह । यह दुनिया ही स्साली चोर है । यही तो चोरी करवाती है । वरना चोरी करना आदमी कोई मा के पेट से थोड़े ही सीख कर आता है, क्या ? यह पेट है स्साला पेट । हजार नाच नचवाता है—कमीना कही का

चिट्टू	सो तो ठीक है.. मगर जरा ध्यान ही रखना

लाला	तू इसकी फिकर मत कर । ये लोग स्साले क्या चोरी करेंगे ? ककड़ी-मूली जैसे तो आदमी है—चोरी करेंगे । चोरी करने मे दम चाहिये दम । कॉलेजों मे सडा-गला पढ लिया तब तो चू नही की । स्साले नामरद । पढने मे पसीना आता है ता किताबे जलायगे, खिड़कियां तोडेंगे आग लगायेंगे' हडताल करेंगे । टी बी के मरीज, क्या खाकर करेंगे क्रान्ति ? कायरा की सेना है कायरो की, क्या ? खर, तू तो उसके खाने-पीने का ख्याल रखना । नया आदमी है, खाने मे थोडा शरमाता होगा, क्या ?

(चिट्टू स्वीकृति मे सर हिलाकर मुह बिदकाता हुआ अन्दर चला जाता है ।)

लाला — (स्वगत) ऐसी औलाद से तो अच्छा था यह देश वाझ ही रह जाता।

(इसी बीच बाबू का प्रवेश। आश्चर्य और शिकायत के स्वर में)

बाबू — लालाजी, यह रसोई है या कबाडखाना। ओफ्फोह, गन्दगी के मारे नाक सडी जा रही है। दूध मे चूहे तैर रहे है—चूहे। और और आटे मे झीगुर

लाला — बेटा कॉलेज मे तितलियो की खुशबू सू घ सू घ कर यह नाक थोडी चौडी हो गयी है। (इसी बीच चिट्टू भी मच पर आ जाता है और लाला के बिगडने के साथ साथ वह खुश होने लगता है।)

यह पढाई तुम लोगो को बर्बाद करके छोडेगी। मै रेस्टोरेण्ट से देखता रहता हू कि कॉलेज मे ऐसे सज धज कर जाते है जैसे नौकरी करने तो अब सीधे स्वर्ग मे ही जायेगे। मैं कहता हू, बन्द करो ऐसी पढाई और खुदवा दो सारे कॉलेज मे भट्टिया। क्या? कम से कम तुम भट्टी फूकना तो जानोगे। स्साला धोबी का कुत्ता घर का न घाट का। अब तुम मुझसे ज्यादा मत बकवाओ। और बदबू आती है तो खुद करो साफ क्या?

बाबू — साफ किससे करे। झाड़ू तो टूटी पडी है। झाड़ू के लिए पैसे भी तो दो।

लाला — ले जा गल्ले मे से। मने क्या तेरा हाथ रोका है। (बाबू गल्ले म से पसे लकर चला जाता है और चिट्टू का प्रवेश)

चिट्टू (भड़कान बे स्वर म) लालाजी इन पढ लिखा की तो बुद्धि भिस्ट हो जाती ह ।

लाला (गम्भीर स्वर म) नही रे पढा-लिखा पढा लिखा ही होना ह । तुम हा ढोर निरे कद्दू क्या ?

चिट्टू कद्दू ।

लाला हा, ढोरो की-सी रसोई बना रखी ह । सड रहो ह स्माली उसी मे काम किये जा रहे हो। देखो वह बडा है तुमसे । उसके सामने ज्यादा चीं-चपर मत किया करो वरना मैं तुम्हारी भी हवा निकाल दूगा । समझे ? मैं जरा हवा खा आता हू, क्या ?

चिट्टू हवा ।

बाबू हा हवा ।

(लाला गल्ल म स रुपय जेब म भरता हुआ बाहर चला जाता है । बाबू मच पर शीघ्रता से आता है ।)

बाबू (रोब म) चिट्टू पहले रसोई मे झाड़ू लगाओ ।

चिट्टू बाबू, नये-नये रगरुट आये हो ना ! हमने रसोई मे आज तक झाडू नही लगाई कही सुना तक नही कि रसोई मे झाडू भी लगती है । अजी गिराक कोई यहा देखने आता है । (धीरे से) नई-नई बकरी ज्यादा ही मीगणी करती है ।

बाबू बकरी की मीगणी, तुमने किसको कहा ?

चिट्टू (हड़बडाते हुए) मैंने आपको थोडे ही कहा है ।

बाबू तो फिर किसको कहा ?

चिट्टू (हड़बडात हुए) हमारे घर पर जा बकरी है ना मेरा मतलब वो बकरी होती है ना, वो अभी नई-

नई आयी है, बहुत मीगणी करती है मैंने उससे कहा— मत कर, मत कर, मत कर, पर वह मानती ही नहीं

बाबू	देख, ज्यादा किच-पिच—किच पिच नही, वरना रगड दू गा । यह उठा उस दूध को और अन्दर ले चल ।

(चिट्टू बडबडाता हुआ दूध के भगोने की ओर जाता है ।)

बाबू	(चिट्टू को झिझोडते हुए) क्या कहा ? हमसे ज्यादा किच-पिच करने की जरूरत नही, हा ? हम भी कॉलेज के दादा हैं । एक मिनट मे भुरता बना देते हैं । (इसी बीच लाला शराब के नशे मे लडखडाते हुए प्रवेश कर चुका होता है ।)

लाला	क्यो महाभारत कर रहे हो भई ?

चिट्टू	बाबूसाहब कहते हैं, रसोई मे भी झाड़ू लगाओ

लाला	तो रसोई मे कूडा डालने को तो नही कहते ?

बाबू	हा हा, झाड़ू के लिये कहते है और झाडू लगेगी । रोज़ लगेगी । हम लालाजी आप से भी कह देते है साफ स.फ । हमें यहा रहते एक महीना हो गया है, हमने भी बहुत बर्दाश्त की है । एक तो सारा होटल साफ होगा –रोज । चमाचम । खाने पीने का मामला है, रोज सफाई से रहेगा । हा । और यह भी कह देते है कि रेस्टोरेण्ट चलाना है तो पीना-वीना छोड दो । जी जलता है हमारा, यह सब देख कर, हा ।

लाला	अरे सुन लिया भई, अब आगे से

बाबू	सुन लिया नहीं लालाजी। कान खोलकर सुन लो। आखिर गल्ले का सारा पैसा जाता कहा है? पसा घर भी नहीं पहुचता। फिर रात ही रात कहा रफू-चक्कर हो जाता है? नौकर है तो क्या हुआ? हमारे भी मन है हमारा भी जी जलता है बुरी बात देखकर। खून पसीना करके पैसा कमा कर देते हैं, लेकिन रात की रग-रेलिया के लिए नहीं। हा। साफ कह देते है। (चिट्टू दुबकता हुआ अन्दर खिसक जाता है।)

लाला	अरे तो भई तुम हमको धीरे से ही समझा दो। हम कोई बुरा थोडे ही मानते हैं।

बाबू	बुरा मानो चाहे भला मानो। हम साफ कहे देते है। रेस्टोरेण्ट चलाना हो तो ढग से रहो वरना हम भी दफा हो जायेंगे यहा से। जी जलता है हा। (चिट्टू मच पर प्रवेश करता हुआ कहता है—)

चिट्टू	बिल्ली ने कान निकाल लिए हैं लालाजी। (बाबू रोबीली मुद्रा म चिट्टू की तरफ घूरता है और चिट्टू सहम कर अन्दर चला जाता है।)

लाला	देख बाबू हम हैं अधेड। अब तुम जानो जमाना है खराब। कुछ लत पड ही जाती है। वसे तुम्हारे आने के बाद तो मैंने सब कुछ कम कर दिया है। और बाबा हम बिल्कुल बन्द कर देंगे क्या? अब यह हरामजादा मन है, कभी ललचा भी जाता है। पर एक बात बताओ, आज तुम मे यह इतनी गर्मी कहा से ?

बाबू इस मे गर्मी की क्या बात है। मेहनत का खाते है पसीने का पीते है। घौंस मे तो हे नही, फिर किसी की लल्लो चप्पो क्यो करे। बुरा लगा वह कह दिया। आप ही के यहा ता काम कर आर आप हो का बुरा देखे। ऐसा नही होता हमसे। जिसका नमक खायें उसी का बुरा। जिस हाडो मे पकाये उसो मे छेद। कोई सरकारी नौकर थोडे ही हू

लाला बस बस बस ! जाओ अब एक ठण्डा फैण्टा पी लो, थोडी गर्मी उतर जाय।

(बाबू की बाहें पकड कर नेपथ्य की ओर ले जाते हुए) चिट्टू बाबू को एक ठडा फैण्टा देना, बर्फ डालकर ।

तीसरा दृश्य

(सब कुछ वही। सुबह का समय। बाबू सब्जी से भरा एक भारी थला लटकाये पर से लगडाता हुआ मच पर आता है। थैला जोर से जमीन पर गिरात हुए चिट्टू को आवाज देता है।)

बाबू चिट्टू अरे चिट्टू ! तोड दिया सालो ने पैर। (चिट्टू आता है चिट्टू से) यह सब्जी है धोकर काट लो।

(चिट्टू थला सभालते हुए)

चिट्टू क्या सब्जी लाये हो बाबू ?

बाबू क्या सब्जी लाऊ । बाजार मे तो जैसे आग लग रही है । टमाटर तीन रुपये किलो, गोभी चार रुपये किलो । सस्ती से सस्ती मूली है, वह भी आठ आने । (जूता खोलने की कोशिश करता है पर दर्द के मारे खोल नही पा रहा ।) अरे यह जूता तो खोल जरा

चिट्टू गिर गये थे क्या कहीं ? क्या हो गया बाबू ?

बाबू हो क्या गया खाक ! जुलूस निकल रहा था इन निकम्मो का । जब देखो जुलूस, हडताल, मीटिंग, भाषण । न खुद काम करें न दूसरो को करने दे । (लाला का लडखडाते हुए प्रवेश)

लाला क्या आज भी हडताल हो गई !

बाबू कहा से तशरीफ ला रहे है आप ? कुछ खैर-खबर भी है दुनिया की ?

लाला (लापरवाही से) क्या हो क्या गया ।

बाबू हो क्या गया ! सब्जी मण्डी से निकलते ही वो घण्टा घर है ना वहा जुलूस आ रहा था । वही पर तागे का घोडा बिदक गया । भगदड मच गई । पुलिस भी खडी थी । पुलिस ने समझा कि मैंने घोडे को बिदका दिया सो उन्होने मेरे ही ऊपर चलाई लाठी । यह देखो सीधी टखने पर लगी है । देखो देखो मास ही निकल आया । (लाला गौर से देखने लगता है)

लाला स्साली अत्याचारी सरकार ! ऐसे तो अंग्रेज भी नही थे । कभी किसी सिपाही का लडका मरे न

तब मालूम हो सालो को अरे चिट्टू, एक कपड़ा लाना।

बाबू (जोर से) कोई साफ सुथरा। (लाला से आवेश में) इस हरामजादी धरती की किस्मत में तो पहले ही गरीबी लिखी है ऊपर से ये जुलूस हुए साले और। और यह जनता भी कैसी है बेशर्म कहीं की! स्साली निखट्टी! बेबात जुलूस और हड़ताल होती रहेगी और यह सहती रहेगी। लालाजी, गधे पर भी ज्यादा बोझ रखो तो स्साला लात मारने लगता है और यह जनता? हजारों साल की गुलामी के बाद भी चूं नहीं करती। सहे जायेगी सहे जायेगी चुपचाप। स्साली गैंडे की खाल। जितना मारो उतनी ही सुस्त होगी। इसका सा खून चूसते जाओ, खुजाते जाओ। ठण्डी बर्फ की तरह। हां। और आप? आप कहां थे रात भर? फिर वही रास्ता। नशे में धुत्त! आपको बीसियों बार कहा है कि यह पीना वीना नहीं चलेगा

साली देखो बाबू, सर पर चढ़ने की जरूरत नहीं। अपनी औकात समझकर चीं-चपड़ करो। यह मत भूलो कि तुम मेरे डेढ़ सौ कौड़ी के नोकर हो। मेरी इच्छा होगी वैसा ही करूँगा। क्या?

बाबू अजी आपको तो क्या, मैंने अपने बाप को भी नहीं बख्शा है इस मामले में। रात रात भर घर से बाहर! घर में बीबी इन्तजार करे और आप गलियों में गुलछर्रे उड़ाये

लाला — चुप करा! (लडखडाते हुए बाबू की बाह पकड लेता है) अब चौ चपर की तो हवा निकाल दू गा। यह रेस्टोरेण्ट तुम्हारे बाप का नही है जो इतना रौब झाड रहे हो। क्या?

(बाबू लाला का गला दबोचने का प्रयत्न करते हुए)

बाबू — मेरे बाप तक पहुचे तो गला घोट दू गा। समझे। सभालो यह तुम्हारी नौकरी

लाला — फूट फूट। तेरे जैसे छप्पन सौ साठ बी ए आते हैं मेरे पास। क्या? मेरी ही बिल्ली और मुझे ही गुर्राये।

बाबू — यह बात है! तो लालाजी हम जाते है। (जाने के लिए अपना सामान बटोरते हुए) फिर भी कहे देता हू, आपके इस रेस्टोरेण्ट को साफ सफाई से, हिफाजत मे रखा है, हा। छ महीने हो गये। आठ हजार कमा कर दिये है ऊपर से किसी ग्राहक की शिकायत नही। देखो जब तक चलाओ इसको साफ रखना। चमाचम। हा। (जोर से) अरे चिट्टू! गोभी के फूलो मे कीडे हैं, जरा ध्यान से काटना। (लाला से) और दूधवाले को खीचते रहना, पानी बहुत मिलाता है। (चिट्टू को) दूध ठण्डा हो गया हो तो जमा दे उसे।

लाला — अरे भट्टी मे जाने दो तुम दूध को। तुम निकलो यहा से।

बाबू — जाते है जाते है लालाजी! हम तो और कही ढूढेंगे नौकरी। अब काम करने की शर्म तो है नही। लेकिन लालाजी हम तो आपके भले की कह रहे

है। आपके बीवी-बच्चा का भी भविष्य है कुछ। नौकर-चाकरो का तो क्या? नौकर तो आते जाते ही रहते हैं। हमारे जसे छप्पन सौ साठ नौकर आयेंगे आपकी डेढ सौ कौडिया मे। लकिन लालाजी रेस्टोरेण्ट वर्बाद न होने पाये। इससे आप का ही नही दस आदमियो का पेट भरता है। बर्बाद हो गया और हम इधर से गुजरे तो हमारा भी जी जलगा। हा। अच्छा लालाजी नमस्कार। (चला जाता है।)

चिट्टू हमने तो पहले ही कहा था लालाजी, किस चोर का रखा है। यह खिचडी ज्यादा दिन नही पकेगी।

लाला (आग बबूला होकर) चिट्टू चुप। जाओ दौडो, उसे मनाकर लाओ। (चिट्टू जल्दी स जाने लगता हा है कि) नही, मैं ही जाता हू। (लाला लडखडाता हुआ बाहर जाता है आर देखता है कि बाबू भी दरवाजे के बाहर दीवार स लगा खडा है। लाला उसे वापस अन्दर ले जाता है।)

[अन्धकार]

तीसरा तहसीलदार

पात्र		
	तहसीलदार—दो	नाहर सिंह
	रजिस्ट्री बाबू	तहसीलदार—तीन
	चपरासी	किसान
	लाला अमीचन्द	उदय
	कुछ सिपाही	

पहला दृश्य

स्थान तहसील कार्यालय समय सुबह साढे दस बजे

(तहसीलदार—दो फुर्तीला। फाइलें शीघ्रता के साथ देख रहा है। बीच बीच म घडी भी देखता जाता है। इसी बीच ढीले अ दाज मे चपरासी का प्रवेश।)

तहसीलदार दो नन्दू क्या बजा है ? (नन्दू हडबडाता है) साढे दस बजे भी कोई तहसील मे आने का टाईम है ?

चपरासी साब, पहलेवाले तहसीलदार खन्ना साब बारह बजे आते थे तो मैं ग्यारह बजे आता था। आज तो म और दिनो से कुछ जल्दी ही आया हू।

तह० दो खन्ना साहब आते होगे बारह बजे। यह तहसील है तहसील, कोई होटल नही, जब चाहा आये और चल दिए। कल से ठीक दस बजे दफ्तर साफ मिलना चाहिए। रजिस्ट्री बाबू को भेजो।

चपरासी साब मैं ही अभी आया हू तो रजिस्ट्री बाबू कहा से आयेगे।

तह० दो जाकर देखो तो सही। (चपरासी बाहर जाने लगता है। तहसीलदार झु झलाता है) हू ! लेट आने की तो सारे देश ने कसम ही खा रखी है। (फाइल देखने लगता है, चपरासी का प्रवेश)

चपरासी रजिस्ट्री बाबू तो अभी नही आए।

तह० दो कोई छुट्टी तो नही आयी है उनकी ?

चपरासी छुट्टी आएगी भी तो कल ही आएगी।

तह० दो ठीक है। ये फाइल उनकी मेज पर रख दो। (चपरासी फाइले धीरे धीरे उठाता है।) सुस्ती नही। मरे-मरे नही चलना, जल्दी जाओ।

चपरासी ले जा तो रहा हूं साब। (बडबडाता है) आदमी कोई मशीन थोडे ही है।

तह० दो शटअप। काम करो।
(चपरासी फाइलें शीघ्रता स ले जाने लगता है। इसी बीच रजिस्ट्री बाबू का प्रवेश)

चपरासी लो साब, यह बाबूजी भी आ गए।
(रजिस्ट्री बाबू तहसीलदार को नमस्कार करता है। खुशामदी स्वर म)

रजि० बाबू नमस्कार हुकुम।

तह० दो (अक्खड स्वर म) नमस्ते। खन्ना साहब का ट्रांस्फर हो गया है और अब नया तहसीलदार आ गया है। कल मे घडी का दस का टकारा यहा आकर सुनेंगे। (चपरासी स) तुम क्या सुन रहे हो ? (चपरासी सहम कर चला जाता है।)

रजि० बाबू साहब आज तो यो समझो कि

तह० दो कल से। ठीक दस बजे।

रजि० बाबू (खुशामदी स्वर मे) है है ह (चपरासी से तीव्र स्वर म) अरे नन्दू ! जा कर दो चाय और पान तो ले आ जरा है है कैसा पान खायगे साहब ?

तह० दो (चुप। घूरता रहता है। नन्दू चुपचाप स्थिति भापता रहता है)

रजि० बाबू मेरा मतलब ममाले का ही या फिर जर्दे का ?

तह० दो म पान नही खाता। और चाय भी

रजि० बाबू है है ह खन्ना साहब तो जर्दे का खाते थे। तीन सौ नम्बर का। इस कस्बे मे तो मिलता ही

नही । कस्वा क्या है, गाव है गाव । कुछ भी नही मिलता यहा तो ? जर्दा भी जयपुर से लाना पड़ता था । कई वार तो डी० एल० लेकर में लेने जाता था । खन्ना साहव का जर्दा क्या खुशवू निकलती थो ? क्या पान खाते थे ?

तह० दो वावूजी पान और चाय सिफ लन्च टाइम मे । (विराम) आज सब रजिस्ट्रिया कर देनी है । कागज टेविल पर पहुचा दिए हैं । मैं कैश खोलकर आता हू ।

(तहसीलदार और वावू दोनो पीछे के दरवाजे से चले जाते हैं । सामने से लाला अमीचन्द का प्रवेश ।)

लाला अरे नन्दू ! तेरा नया तहसीलदार कसा है ?

नन्दू (लाला को धीरे बोलने का इशारा करता है) अजी पूरा कलक्टर है । नयी-नयी नौकरी लगी है ना मिच है मिच ।

लाला अरे होगा मिच । तू जानता है हमने वीसों तहसील दारो को मिच की तरह पीस कर रख दिया है । इन्हे भी देख लेंगे । और यह ले तेरी फीस ।

(लाला जेब से रुपये निकालकर देता है । नन्दू लेन स इन्कार करता है ।)

चपरासी नही-नही लालाजी फीस नही । आपको साव से यो ही मिलवा दू गा फीस नही ।

लाला अरे वाह ! सौ चूहे खाकर बिल्ली हज करने चली क्या ? अरे यह तो तेरा हक है । कोई गैर-हक का थोडे ही मागता है तू ? (चपरासी शीघ्रता से रुपये लेकर

रख लेता है। तहसीलदार का प्रवेश। लाला तहसीलदार को नमस्कार करता है। चपरासी लाला को नेपथ्य की ओर चले जाने का इशारा करता है। लाला चला जाता है। तहसीलदार घंटी बजाता है, नन्दू भीतर तहसीलदार के पास जाता है।)

तह० दो अमीचन्द को आवाज लगाओ।

नन्दू (बाहर आकर आवाज लगाता है) लाला अमीचन्द हाजिर हो ।
(लाला का प्रवेश)

लाला नमस्कार साहब। मैं तो आपको रिसीव करने कल बस अड्डे पर भी गया था लेकिन उस भीड़ मे कहो बात ही नही हो पायी।

तह० दो अमीचन्दजी, यह जो आप पच्चीस कमरों की हवेली बेच रहे हैं यह सिर्फ बीस हजार मे। एक लाख का मकान सिर्फ बीस हजार मे!

लाला अजी साहब, मेरा रोना भी तो यही है। आजकल मकानो के पूरे दाम तो कोई देता ही नही। लुट रहा हूं हुजूर

तह० दो तो फिर आपकी इस हवेली को 25 प्रतिशत ज्यादा मे यानी पच्चीस हजार मे सरकार खरीद लेगी। आप इसकी रजिस्ट्री सरकार के नाम कर दीजिए। नन्दू, रजिस्ट्री बाबू को बुलाओ।

लाला वाह जी वाह! पांच हजार के लोभ मे क्या मैं अपनी जबान बदलूंगा? मर्द की तो एक ही जबान होती है साहब। और साहब मैं हरभजन से पांच हजार की पेशगी भी तो ले चुका।
(रजिस्ट्री बाबू का प्रवेश)

तह० दा बाबूजी ! लाला अमीचन्द अपनी एक लाख की कोठी को बीस हजार मे बेचकर रजिस्ट्री के स्टम्प और सरकार के और-और टैक्स की चोरी करना चाहते ह । इस हवेली का 25 प्रतिशत ज्यादा देकर पच्चास हजार मे सरकार खरीदना चाहती है । आप इस बाबत कागज तैयार करें ।

लाला साहब मैंने ता इसकी फीस भी सारी दे दी है ।

तह० दो आपकी फीस लौटा दी जायेगी । बाबूजी इन्होने कितनी फीस दी है । (रजिस्ट्री बाबू सहम जाता है ।) कितनी फीस दी है इन्हाने ?

रजि०बाबू साहब, ऐसे तो ढाई सौ रुपये दिये है और

लाला साहब पूरे पच्चीस सौ रुपये दिये हैं । उठाकर पूछ लीजिए इनसे । पच्च स सौ रुपये कोई कम थोडे ही हाते है साहब ?

तह० दो बाबूजी

रजि०बाबू साहब जबदस्ती दे दिये ।

लाला यह लो ढाई हजार भी जबदस्ती हो गये । (रजिस्ट्री बाबू से) और मैंने कहा नही था कि कम लेंगे तो सौ दो सौ और ऊपर नीचे कर लगे ।

तह० दो जेल जाना है क्या ?

लाला (बनते हुए) वाह तहसीलदार साहब वाह ! आप तो छूटते ही मजाक करने लगे । अजी जेल जाकर मुझे कौनसी नेतागिरी करनी है । हमने तो खन्ना साहब के हिसाब से ढाई हजार दिये हैं । आपकी रेट ज्यादा है तो वह बोल दीजिए । हजार-पाच सौ मे कौनसा फर्क पडता है

तह० दो लालाजी, इस तहसील की चारदीवारी मे फीस सिफ सरकारी होती है। हमारी अपनी कोई फीस नही। आप हमे रिश्वत देने की कोशिश करते है?

लाला राम राम! रिश्वत जैसा गन्दा शब्द आप अपनी जबान पर लाते ही क्या है? यह तो आपस का घ-धा है साहब। हम देनेवाले और आप लेनेवाले। लेकिन आप कुछ तो गुल खोलिए, आखिर

तह० दो न-दू! इ-हे कमरे से बाहर करो।

लाला वाह साहब, न-दू मुझे कमरे से बाहर कैसे करेगा? न दू को पाच का नोट कमरे के अ-दर आने का देता हू बाहर निकालने का थोडा ही? आप एक बार पूछ तो लीजिए इन सबसे? यहा हर रजिस्ट्री पर न-दू को पाच रुपये, रजिस्ट्री बाबू को पचास रुपये तहसीलदार को पच्चीस सौ रुपये देता हू। आप तसल्ली कर लीजिए इनसे। इस पूरी तहसील म ऐसा है कोई माई का लाल जो लाला अमीचन्द मे ज्यादा देता हो? फिर बेकार मे गम होने से फायदा?

तह० दो न-दू बाहर से सिपाहियो को बुलाओ।

लाला बुला लीजिए सिपाहियो को भी। उनसे भी पूछ लीजिए। दो दो रुपये से तो उनको भी कम देने का रिवाज नही।

न-दू (तहसीलदार के नजदीक आकर) साब लालाजी यहा के बहुत-बडे सेठ है। ये एम एल ए के पक्के दोस्त है।

रजि०बाबू साहब, पहले भी एक तहसीलदार साहब का इन्होने ही ट्रान्सफर करा दिया था। मेरी मानो तो घर बैठे गगा आई है, हाथ धो ही लीजिए। (नाहर सिंह का चुपचाप प्रवेश)

तह० दो बाबूजी, यह आप नही बोल रहे, लाला अमीचन्द के पचास रुपये बोल रहे हैं। लौटाओ इनके रुपये इस तहसील मे अब आगे से यह नही चलने का। सुन रहे हो नन्दू

नाहरसिंह एक मामूली - सी रजिस्ट्री पर इतनी बडी हुज्जत हो रही है ? और लालाजी आप भी सारी कजूसी आज ही दिखायेंगे। अजी फेंको हज़ार - पाच सौ और। (तहसीलदार से) और साहब शरीफ आदमी हुज्जत नही किया करते। तहसील मे मालिनो की तरह लेन-देन थोडे ही चलता है। सौ-दो सौ ऊपर या नीचे। और फिर यहा भी ऐसी ही हुज्जत होती रही तो तहसील और सब्जी बाज़ार मे फर्क क्या रह जायेगा ?

तह० दो कौन है आप ? बिना पूछे कैसे आ गये ?

नाहरसिंह जब आप का चपरासी दरवाजे पर खडा ही नही था तो अन्दर आने की फीस किस को देता ?

तह० दो (तमक कर) मैं पूछता हू आप बिना पूछे अन्दर कैसे आ गये ?

नाहरसिंह वाह जी वाह ! यहा आदमी भी कभी पूछ कर आता है ! वह तो बिना पूछे ही आता है और बिना पूछे ही चला जाता है।

तह० दो (प्रावेश म) यह तहसील है तहसील। कोई नाटक-घर नही।

नाहरसिंह नाटकघर तो तहसील को आपने बना दिया है। बिना बात का हगामा खडा कर दिया। आपको सीधे अपनी रेट बताने मे झप आती है तो रजिस्ट्री बाबू किस काम के हैं ? इनको माफत बता दीजिए।

तह० दो लाला अमीचन्द ! आप दोना मुझ वरगलाना चाहते है। आप जाइये और अपने इस नुमाइन्दे को भी ले जाइये वरना गिरफ्तार करवा दूगा।

नाहरसिंह देखिये साहब, मिजाज को उबालिये मत, गौर से समझने की बात कह रहा हू। पेट आपके भी है और हमारे भी पहली बात। दूसरी बात, आप के भी बाल-बच्चे हे और हमारे भी। और तीसरी बात हम भी इसी मे गाव रहते ह और आप को भी इसी गाव मे रहना है।

तह० दो और ? और चौथी बात ?

नाहरसिंह और चौथी बात आप फरमा दीजिए ?

तह० दो यह रजिस्ट्री गलत है। मेरी इस कलम से यह रजिस्ट्री कभी नही हो सकती।

नाहरसिंह (पन देते हुए) आपकी कलम से नही हो सकती तो मेरी कलम ले लीजिए।

तह० दो नन्दू सिपाहियो को बुलाओ।

नाहरसिंह (कडककर) एक सा ढाई हजार की रिश्वत मागते हो और ऊपर से सिपाहियो को बुलाते हो। बेईमानी

की भी हद होती है। चलिए लालाजी, कल ही एम० एल० ए० से कहकर इसकी बदली नहीं करवा दी तो मेरा नाम भी नाहरसिंह नही। ऐसे अडियल तहसीलदार को यहा टिकने कौन देगा? पता नही नये नये लौडा को तहसीलदार कौन बना देता है? बात को समझते ही नही।

लाला उठाकर कहे देता हू, आप भी दूसरी तहसील मे ही रजिस्ट्री करगे, यहा नही। समझे?
(चले जात है)

तह० दो (रजिस्टी बाबू) इनकी हवेली का वेल्युयेशन करने म खुद जाऊगा। आप फौरन इनके रुपये लौटा दो और कागज तैयार करो। यह कोठी सरकार खरीद लेगी। मै कलेक्टर साहब से बात करता हू
(रजिस्ट्री बाबू जान लगता है। फायल देखकर घटी दबाता है।) कालिया वल्द घोलिया।

तह० दो (टेलिफोन एक्सचेंज स कलक्टर का नम्बर मागन लगता है।)

नन्दू (बाहर आकर आवाज लगाता है) कालिया वल्द घोलिया हाजिर हो कालिया वल्द घोलिया हाजिर हो

[अधकार]

दूसरा दृश्य

स्थान वही कार्यालय समय कुछ दिन के बाद की दोपहर

(तहसीलदार की कुर्सी खाली है। टेबिल पर फाइलो का ढेर। बाहर स्टूल पर बैठा ऊंघ रहा है। इसी बीच किसान का प्रवेश)

किसान (चपरासी से) राम-राम ! (चपरासी ऊंघ रहा है।) राम-राम ! (किसान जोर से कहता है।) अजी राम राम !

चपरासी (ऊंघते हुए ही) राम-राम। (फिर सो जाता है।)

किसान तहसीलदार साहब आज भी

चपरासी (हडबडाकर उठता है) तहसीलदार साब ? कहा है तहसीलदार साब ?

किसान म्हा याही तो पूछू छू कि नया तहसीलदार साब आज भी कोनै आया काई ?

चपरासी पटेल, बीडी है क्या ? (किसान बीडी का बण्डल ही दे दता है।)

किसान साब आज तो आवेला न ?

चपरासी अरे माचिस भी तो दे।

किसान (माचिस देते हुए) साब आज भी दौरा माले गया छ काई ?

चपरासी (बडल म से एक बीडी को निकालकर पीने लगता है तथा बण्डल म दो-तीन बीडियो को छोडकर शेष सब निकाल कर जेब मे रख लेता है और बण्डल लौटाने लगता है।) ले तीन - चार बीडी ले लेता हू। अच्छी तरह सभालले अपना बण्डल।

किसान	(बण्डल लेते हुए) साब आज भी आवला कि कोने ?
चपरासी	आयेंगे। अभी तो ग्यारह बजे है। ज्यादा से ज्यादा बारह बजे होगे।
किसान	दिन ढलगो। हालथाई भाराई बज्या छै काई ?
चपरासी	तो सब्र तो राख।
किसान	सबर भी तो कत्तरोक राखा ? कोई हद भी तो हो। एक खेत की रजिस्ट्री कराणी छै। जी के ताई दस दन सू चक्कर काटर्यो छू। कदे तो साब छुट्टी चले जावै, कदे साब के पावणा आजावै, कदे साब दौरा मालै चले जावै, तो कदे साब ठाल मनालै
चपरासी	तो साब तेरे बाप के नौकर है जो तेरी रजिस्ट्री के लिए तहसील मे बठे रहेंगे ? साब तो साब हैं कोई भजाक थोडे ही है ? (किसान के लडके उदय का प्रवेश)
उदय	(चपरासी से) तहसीलदार साहब अभी नही आये क्या ? डढ बज गया।
चपरासी	डेढ बज गया ? बीडी पीते पीते ही डेढ बज गया। अब तो लञ्च टाइम है। लच टाइम के बाद आयेंगे। दो बजे। तुमको क्या काम है ?
किसान	या ष्।कोई टाबर छै।
उदय	रजिस्ट्री करानी है खेत की।
चपरासी	आज तो नही हो सकती।
उदय	क्यो ?
किसान	आज भी कोन होली काई ?

चपरासी — कोई एक दिन मे रजिस्ट्री होती है क्या ?

उदय — दस मिनट का काम नही और कहते है एक दिन मे होती है क्या ? आने दो साब को।

(तीसरे तहसीलदार का रौब के साथ प्रवेश। चपरासी झुककर सलाम करता है। किसान भी 'राम राम' करता है। तहसीलदार नमस्कार का जवाब दिये बगैर कुर्सी पर जाकर बैठ जाता है। सीगरेट पीने लगता है। फाइलो के ढेर को एक तरफ कर देता है। फिर टेलिफोन करने लगता है।

तीसरा तह० — हैलो टलिफोन एक्सचेंज ? एस डी एम साहब का नम्बर देना जई। हैलो एस डी एम साहब बोल रहे है ? (चापलसी स्वर) है हैं है नमस्कार साहब। कसल बोल रहा हू हे हैं क्या साहब ? हा हा, सब ठीक है साहब। नही-नही, आज तो मैं खुद ही सोच रहा था, लेकिन क्या बताऊ साहब ? नही नही वह बात नही दरअसल आजकल कोई मुर्गा नही फस रहा है। वो तो ठीक है, लेकिन साहब अब गाववाले भी पटनेवाले नही रहे। नही-नही, भूला नही हू साहब। कल तक पहुचा दू गा। क्या साहब ? घर ही मिलेंगे ना ? हा ठीक तो क्या है ? हमे भी कहा इस मिट्टी मे फेंक दिया ? (हसता है) इस मिट्टी से और तेल ? अजी कहा साहब कही गगा नगर की तरफ भेजते तो कोई बात होती। अच्छा साहब, हा, कल आ रहा हू। (झुझला कर टलि-

फोन का चोगा डाल देता है। बड़बड़ाने लगता है। फिर घण्टी बजाने लगता है। चपरासी आता है।)

तीसरा तह० (चपरासी से) पानी लाओ।

(चपरासी पानी लेने जाने लगता है तो किसान टोकता है।)

किसान अब साब सूं मिल ल्यूं ?

चपरासी (अकड़ कर नकल करते हुए) साब सूं मिल्यूं। अभी तो साब वाटर पीयेंगे।

किसान काई पीवेला ?

उदय पानी पीवैला, पानी।

चपरासी पानी नहीं। पानी तो तुम लोग पीते हो। साब लोग वाटर पीते हैं।

(चपरासी चला जाता है और एक गिलास में पानी लाकर टेबिल पर रख देता है। फिर स्टूल पर आकर बैठ जाता है।)

चपरासी साब से मिलना है क्या ? फीस लाये हो ?

किसान कतरी फीस ?

उदय फीस किस बात की ?

चपरासी (व्यंग्य) तहसील में नये रंगरूट आये हो क्या ? फीस कीस बात की ? साब से मिलने की। सभी देते हैं।

उदय रहने दो। हम खुद मिल लेंगे साहब से।

किसान अरे देख्यादे बेटा। कोई आपरा ब्याव की ही मांगता हुआ। ले। एक रुप्यो।

चपरासी — एक रुपया ? कोई मुफ्त में दे रहे हो क्या ? दो रुपये से कम की तो रेट ही नही है यहा ।

किसान — (दूसरा रुपया देत हुए) ले या दूसरो भी ले ।

(उदय झुंझलाने लगता है । चपरासी किसान से नाम पूछता है ।)

चपरासी — क्या नाम है तेरा ?

किसान — बोद्यो

चपरासी — बाप का नाम ?

किसान — दूबल्यो

(चपरासी तहसीलदार के पास जाता है ।)

चपरासी — साब, आप से कोई मिलना चाहता है ?

तीसरा तह० — (झुंझलाकर) आकर बैठा नहीं और मिलना चाहता है । पहले इस रजिस्ट्रीवाले को आवाज लगाओ ।

चपरासी — वह भी रजिस्ट्रीवाला ही है साब ।

तीसरा तह० — कहा न अवाज लगाओ, । बोदू वल्द दूबला

(चपरासी बाहर आकर आवाज लगाने लगता है ।)

चपरासी — बोद्या बल्द दूबल्या हाजिर हो बोद्या बल्द दूबल्या हाजिर हो

उदय — अरे अन्धे हो क्या ? या चीखने की बीमारी है ? खडे तो है तेरे सामने । फिर ?

चपरासी — तुम तो बिलकुल ही रगस्ट हो । आवाज लगाना तो कानून की बात है ।

उदय — सामने खडे तो हैं, बिना बात चिल्लाने मे कौनसा कानून है ।

किसान अरे बेटा है तो हेलौ कोई रोलो मचावा को कानून ।

चपरासी मेरा सर मत खाओ । जाओ ।

किसान (झुंझलाकर उदय से) म्हां तोनें पैली ही बोल्यो छो कि तू फालतू मे रेवार मत कर्या कर । तू इठें ही रैह । म्हां मिल्याऊ छू ।

(किसान तहसीलदार के पास जाता है ।)

किसान राम-राम ।

तीसरा तह० क्या काम है ?

किसान साब एक खेत की रजिस्ट्री कराणी छै ।

तीसरा तह० क्यो ?

किसान साब म्हारी छोरी का पीला हाथ करणा छै ।

तीसरा तह० रजिस्ट्री नही हो सकती ।

किसान , साब अयूया मत करो ।

तीसरा तह० तुमने रजिस्ट्री बाबू की फीस दी ?

किसान साब वू रजिस्ट्री की फीस के अलावा पाच सौ रुप्या और मागे छै । म्हारो हाथ तो पैल्याई तग छै ।

(उदय दरवाजे पर खड़ा यह सब सुनकर अब तहसीलदार के पास जाता है ।)

उदय नमस्कार साहब ।

तीसरा तह० कौन हो तुम ?

उदय — साहिब नमस्कार ।

तीसरा
तह० — (रूखे ढंग से) नमस्कार । तुम हो कौन ?

किसान — साम म्हारा ही छोरो छै ।

तीसरा
तह० — तेरा छोरा है तो क्या मेरे सर पर बैठेगा ?

उदय — साहब दस दिन से रोज तहसील मे चक्कर काट रहे है रजिस्ट्री कराने के लिए । तीन दिन के बाद बहिन की शादी है । खेत को बेचनेवाला तैयार, खरीदनेवाला तयार फिर यह खेत क्यो नही बिक रहा ?

तीसरा
तह० — वह तो सुन लिया लेकिन रजिस्ट्री बाबू की फीस क्यो नही देते ?

उदय — यहां खेत बेचकर ही रुपये पूरे नही पड रहे है । फिर इनके पाच सौ रुपये कहा से द ?

तीसरा
तह० — (व्यंग्य) पाच सौ रुपये कहा से दे ? यहा लोग पाच पाच हजार अपनी नाक रगड कर रख जाते है । तुम्हारी ही कोई नयी रजिस्ट्री हो रही है क्या ?

उदय — तो आप पाच सौ रुपये की रिश्वत लिए बिना खेत की रजिस्ट्री नही करेंगे

तीसरा
तह० — रिश्वत ! कहा पढ़ते हो ?

उदय — कॉलेज मे ।

तीसरा
तह० — (व्यंग्य) कॉलेज मे ! लगता है तुम्हे कॉलेज मे बोलने की तमीज भी नही सिखाई जाती । कैसे

फसे गलत गलत शब्द सिखा दिये जाते है। तुम्हें मालूम होना चाहिए कि इस चारदीवारी के भीतर जो रुपया दिया जाता है चाहे वह टेबिल के ऊपर या टेबिल के नीचे, उसका नाम फीस है फीस। समझे।

उदय — आपको सरकार से तनख्वाह मिलती है फिर यह ऊपर से पाच सौ रुपये की फीस कहा से टपक पड़ी ?

तीसरा तह० — (डाटते हुए) ठीक से पेश आओ। तुमने इन पाच सौ रुपट्टी के खातिर दफ्तर का सर पर चढा रक्खा है। तहसील के तौर तरीके आते नही और चले आते है यहा। ले जाओ यह रजिस्ट्री, नही होगी यहा। (कागज फेंक देता है। घण्टी बजाता है। चपरासी आता है।) इन्हे बाहर करो।

किसान — (गिडगिडाते हुए) नही साब अयया मत करो। मू ने माफ करो। या तो नादान छ। (उदय को) थारो तो कालेज मे पढ पढर दिमाग फैल होगो। तू तो तहसीलदार साब सू अयया बात करै छ जयया कोई कालेज का मास्टर सूँ बतलाव छ। तू घरा जा। ओर काडै म्हारा जीवा ने नयो गोधम करै लो। (तहसीलदार से) साब सब बाता म छोडो। थे तो म्हारी कन्या को ख्याल राखर ही रजिस्ट्री कर द्यो।

तीसरा तह० — तुम्ह कहा ना सही रजिस्ट्री नही होगी ?

किसान साव खेत का रुप्या मे मू पाच सौ भी ले लीज्यो। ल्यो अब तो करद्यो।

तीसरा तह० अब पाच सौ मे भी नही होगी।

उदय मैं एस० डी० एम० को शिकायत कर दूगा। देखता हू रजिस्ट्री कैसे नही होती।

किसान तू बैठ्यो रह चुपचाप।

तीसरा तह० तुम कलेक्टर से शिकायत क्यो नही कर देते। पाच सौ रुपये क्या मैं अपनी खुद की जेब मे ही रखता हू। यह रजिस्ट्री हर्गिज नही होगी।

किसान म्हाराज म्हारी छोरी कुँवारी र जावैलो।

तीसरा तह० तेरी छोरी कु वारी रह जायेगी तो मैं क्या करू ? तेरी लडकी का मैं तो दूल्हा बनकर आन से रहा।

उदय : (आवश म) तहसीलदार, मु ह सभाल कर बात कर। मेरी बहिन का दूल्हा तो आज तुझे जरूर बनाऊ गा !

(उदय तहसीलदार को ओर जाने लगता है तो उसे किसान पकड लेता है।)

किसान तू नकल ईठासू । घरा जा । तू चोखी ई कराले‌सी अबार रजिस्ट्री।

तीसरा नन्दू, निकालो यहा से इस बदतमीज को।

(चपरासी भी किसान के साथ-साथ उदय को बाहर की ओर ले जाने लगता है, किन्तु उदय को व बाहर धकेलने मे असफल रहते हैं।)

उदय — बदतमीज़ हो तुम। तुम। मक्कार! हरामखोर! कुर्सी पर इसलिए बैठे हो कि गरीबो का खून चूसो? रिश्वत से अपनी जेबे भरो? ये बेचारे कुछ जानते नही तो तुम इन्हे लूटो, खसोटो?

तीसरा तह० — नन्दू इन्हे तहसील के बाहर करके दरवाजा बन्द कर दो।

उदय — तहसील का दरवाजा तेरे बाप का नही जो बन्द कर दो। स्साली जनता की बिल्ली और जनता को ही गुर्राती है!

तीसरा तह० — नन्दू बाहर से गार्ड को बुलाओ। (नन्दू गार्ड को बुलाने जाता है। तहसीलदार टेलीफोन करने लगता है।) हैलो, एक्सचेंज! पुलिस स्टेशन का नम्बर दो पुलिस स्टेशन

किसान — नही, पुलिस नै मत बुलाओ। रजिस्ट्री मत करो भलाई, पण थाणाँ मे मत भेजो।

तीसरा तह० — थानेदार साहब है? नही है तो फिर अभी इंचार्ज कौन है? तो आप ही चार पुलिसमैन तहसील मे भेज दो। जल्दी। दो डाकू कैश लूटते हुए पकडे गये। भेजो जल्दी।

लोग तालिया बजाते, हा हा, ही-ही करते अपने घोसलो मे दुबकने चले जाओ ? जैसे इस नाटक का अन्त किसी नाटककार या मेरे जसे किसी अभिनेता के पास हो ? (तहसीलदार को छोडकर) आप क्यो डरते है तहसीलदार साहब ? मेरा बाप आपके तलवे चाट रहा है यहा तहसील के बाहर सन्नाटा छाया हुआ है, और फिर इतने रक्षक खडे है आपके । मै क्या कर लू गा आपका ? फिर आप तो इस नाटक के सूत्रधार है । इस नाटक का अन्त वही होगा जो आप चाहते हैं । ये दशक तो आपके हर नाटक पर तालिया पीटने और हिनहिनाने को तैयार है । डरिये मत, आप तो ऑडर दीजिए अपने सिपाहियो को कि ले चले मुझे जेल मे । मेरे डायलोग का आप कब तक इन्तजार करेगे आखिर ?

(स्टिल' समाप्त । सिपाही तेजी स आते हैं और तहसीलदार के इशारे पर उदय और किसान को गिरफ्तार करके ले जाते हैं ।)

[अन्धकार]

समय रात्रि आठ बजे   स्थान मानसिक चिकित्सालय का
एक मरीज कक्ष

(मानसिक चिकित्सालय का मरीज-कक्ष जिसमें पाँच चारपाइयों पर पाँचों मरीज नींद का इंजेक्शन लगा होने के कारण सोई हुई हैं। अत्यन्त धीमे प्रकाश में ज्यों ही पर्दा खुलता है तो मरीज 'एक' चौंकती है, उठती है और बड़बड़ाने लगती है –)

एक नहीं नहीं यह दरवाजा मत खोलो। मत खोलो यह दरवाजा। (दर्शकों को भयमिश्रित आश्चर्य से देखकर) हैं ? ये सब कौन हैं ? कौन हैं ये सब ? ये सब आलू हैं आलू, पिलपिले आलू। नहीं नहीं, ये आलू के बोरे मुझे नहीं चाहिए (पीछे गलरी की ओर भागते हुए) ये बोरे मुझे नहीं चाहिए नहीं चाहिए (एकान्त में चली जाती है। इसी बीच मंच पर तेज प्रकाश होता है। सभी अपनी अपनी चारपाइयों में कुनमुनाने लग जाती हैं। कोई उठकर बैठ जाती है कोई अपलेटी रहती है। 'दो' हड़बड़ाकर चारपाई से नीचे खड़ी हो जाती है और आँखें मलने लगती है।)

दो (घबराई-सी) रोशनी ? रोशनी ? यह रोशनी बन्द करदो। बन्द करदो यह रोशनी। इस रोशनी से मुझे डर लगता है। (डरकर पीछे हटते हुए) इस रोशनी में भूत रहते हैं। (छतों की ओर इशारा करते हुए) भूत भूत ये भूत . नोच डालेंगे (बाहर से 'एक' को पकड़ कर ला

हुई नम से टकरा जाती है और चीख मारकर अइ ई ई भूत भूत' कहती हुई अपनी चारपाई के पास दुबक जाती है)।

एक (दशमा को देखकर) फिर वही आलू । इन आलुओं से मुझे बचाओ। ये आलू मुझे पकड़ने आये हैं।

नस ओफ ये आलू नहीं है। ये आदमी हैं आदमी

एक नहीं नहीं, ये आदमी नहीं है। ये आदमी हो ही नहीं सकते।

नस चोप! ये आदमी ह आदमी। तुम्हे देखने आये हैं।

एक (ठिठके स्वर म) ? ये मुझे देखने आये ह ? (पागल की हँसी) है है है आप लोग मुझे देखने आये हैं लो देखो, देखो मुझे। (अदा के साथ) मैं सुन्दर हूँ ना ? मेरी आखें बटन जैसी छोटी नहीं है ? मेरे बाल भी पूछ जैसे आछे नहीं है ? और मेरा रग भी काला नहीं है। देखो मै चलती भी हू। (नजाकत के साथ कुछ कदम चलकर) आता है ना मुझे चलना ? (थोड़ा सोचते हुए) हा, मैं पकौडी भी बहुत अच्छी बनाती हू मुझे गाना भी आता है। गाऊ गाऊ ? (और फिर आक्रोश के स्वर म गाने लगती है)—जिस देश के लडके आलू हैं वह देश रसातल जायेगा। वह देश रसातल जायेगा, जिस देश के लडके आलू हैं -आलू है (अचानक गम्भीर होते हुए) नहीं नहीं मैं शादी नहीं करूगी। पापा, म शादी नहीं करूगी मैं इन

विकाऊ आलुओ से शादी नही करू गी। ये सरे आम विकते है आलू की तरह (बोली लगानवाली मुद्रा म हाथ उठा कर क्रमश ऊचे उठते स्वर मे) दस हजार बीस हजार पचास हजार एक लाख। एक लाख एक एक लाख दो और एक लाख तो ई न। यह बिक गया बिक गया हटाओ इस आलू के बोरे को, यह तो एक लाख मे बिक गया बिक गया (क्रमश म द होता स्वर सूनी फली आखें। जब 'एक' बोली लगान लगती है तो इस बीच 'दो' चौकती है और धीरे-धीरे नही नही ' कहती रहती है जब तक कि एक' का उक्त कथन समाप्त नही हो जाता।)

दो (कातर स्वर मे) नही नही। मेरी बोली मत लगाओ, मुझे मत बेचो। मुझे गाय भस की तरह मत बेचो। मुझे औरत ही रहने दो। मै किसी एक आदमी के साथ रहना चाहती हू एक की पत्नी बनना चाहती हू। मैं औरत हू औरत, कोई धमशाला नही हू। अरे औरत का औरत ही रहने दो, धमशाला मत बनाओ। (तीव्र वदना स भरा हुआ स्वर चढता है और उतरता जाता है) औरत कोई साझे की शराब नही है औरत कोई साझे की शराब नही है औरत कोई शराब नही है शराब नही है (धीरे धीरे जमीन पर झुकते झुकते बठ जाती है।)

तीन (चौंक कर तेजी से दो' की ओर बढते हुए) शराब शराब! तू फिर आज शराब पीकर आ गया?

तूने फिर शराब पी है न आज ? ये मुह म झाग वदबू ! नहीं नहीं तू ने फिर शराब पी है आज ? अब तू खाना मागेगा ? मैं खाना कहा से लाऊ ? खाना बनाती भी कहाँ से ? अनाज के रुपय तो तुम ले गय थे। (एकाएक रँआसे स्वर म) मेरे बच्चे भी भूखे ही सो गये मेरे बच्चे भूखे ही सो गये। (धीरे-धीरे सर पकड कर जमीन पर बठ जाती है। 'चार' 'पाच' की लकडी स खलते खलत उसे जमीन पर जोर से पटकती है। 'तीन' भय की मुद्रा म 'चार' की ओर बढती है। उस आते देख कर 'चार' डण्डा हाथ म लकर घबराई हुई सी इधर उधर बचने क लिए चलन लगती है। 'तीन' अधिक भयभीत होकर 'चार' का पीछा करती हुई कहती है–)

तीन नही नही । मत मार मुझे। ओ कसाई मुझे मत मार। मेरे पास कहा था अनाज ? कहा था मेरे पास ओ शराबी मत मार मुझ। मैं तेरी औरत हू, तेरे बच्चे की मा हू। (तीन चार' को झिझोडन लगती है। 'चार' डर कर चीखती हुई लकडी फेंक कर 'दो' के पास दौड जाती है।)

चार (शिकायती स्वर म) अई ई पापा । यह मम्मी मारती है। मुझे छुडालो पापा आ आ (रान लगती है)। पापा मुझे इस मम्मी से बचाओ। यह मम्मी मुझे रोज मारती है। भैया को तो प्यार करती है और मुझे मारती है। पापा आ यह भैया मे और मुझ मे फक क्यो करती है ? ('दो' को झिझोडत हुए और तुनकते स्वर म) मैं लडकी

नही हू मैं लडकी नही हू । मैं लडकी नही ना पापा आ (पुलक कर) मैं भी भैया की तरह लडका हू ना ? राजा बेटा ? राजा बेटा ? (राजा बेटा के नाम पर 'पाच' चौकती है और धीरे धीरे जमीन से लकडी के सहारे चारपाई से उठकर आगे आती हुई)

पाच राजा बेटा ? कहा है मेरा राजा बेटा ?

एक (आश्चय की मुद्रा के साथ पाच की ओर आती हुई) राजा बेटा ! (कुछ सोचकर) अच्छा वह पिलपिला आलू ? वह तो बिक गया । एक लाख मे बिक गया ।

दो (एक' को आख दिखाकर) क्यो बहकाती है बुढिया को ? ('पाच' को समझाते स्वर म) तुम्हारा राजा बेटा मिल जायेगा अम्मा, जरूर मिल जायेगा । जायेगा कहा ? (व्यग्य स) किसी कोठे पर शराब पी कर मास नोच रहा होगा ।

पाच नही नही । मेरा राजा बेटा तो कभी का मारा गया । (दशको की ओर सकेत करत हुए) इन राक्षसा की लडाई मे मारागया । (वीरचक्र को गले म से दिखाती हुई) यह देखो मेरा राजा बेटा इस वीरचक्र मे छिपा बठा है वो । (वीरचक्र को चूमती है) निकलो बाहर । बहुत दिन हो गये अब निकलो बाहर । (मनुहारी स्वर म) निकलो बाहर । निकलो । नही निकलोगे ? नही ? । (प्रतीक्षा म रुककर आक्रोश के साथ) नही ई मुझे यह वीरचक्र नही चाहिए । (गले से वीरचक्र

तोड लेती है) मुझे वीरचक्र नही चाहिए। ले लो तुम्हारा यह वीरचक्र। (वीरचक्र फेंक देती है) मुझे मेरा बेटा दे दो। मुझे मेरा बेटा चाहिए, मेरा दूध चाहिए मेरा दूध —

('दूध' सुनकर 'चार' 'दो' के पास आती है)

चार (ठुनकते हुए स्वर मे) दूध! मेरा भी दूध दो। मैं चाय वाय नही पीऊगी। मैं कोई लडकी हू जो चाय पीऊगी। मैं लडका हू लडका। हम भी टाफी बिस्कुट दो। हमे भी अच्छे-अच्छे कपडे पहनाओ। हैप्पी बथ डे भया की तरह हमारा भी मनेगा ना पापा। यस यस अब हमारा भी हैप्पी-बथ डे मनेगा। (गाती है) हैप्पी-बथ डे टू मी ई हैप्पी बथ ड टू मी ई ई। (अब डकर घूमते हुए) अब हम भी पिक्चर देखेंगे, बाजार मे घूमने जायेंगे। मैं कोई लडकी हू जो घर के कोने मे दुबकी रहू। अब हम लडका है। (स्कूली बच्चो की तरह रटते हुए चारो ओर घूमती हुई—) बी ओ वाय ब्वाय ब्वाय यानी लडका बी ओ वाय ब्वाय ब्वाय यानी लडका ('तीन' 'चार' को आश्चर्य से देखती हुई जमीन से धीरे धीरे उठने की कोशिश कर रही है। 'दो' 'तीन' को उठाते हुए गौर से देखती हुई—)

दो यह कौन निकल रही है धरती मे से! सीता? अरे कोई इस सीता का गाड दो। गाड दो कोई इस सीता को फिर से। नही, सीता, धरती मे से मत निकल, धरती पर तुम्हारे लिए कोई जगह

नही है। (व्यग्य से हसकर) सोचा होगा कि अब शायद तुम्हारा राम बदल गया है। अरी बुद्धू ! राम भी कोई बदलनेवाला है। राम तो पोचू पत्थर है, पोचू पत्थर

एक नही, राम पत्थर नही, वह तो पिलपिला आलू है ..

दो नही, राम पत्थर है।

एक (ऊचे स्वर मे) नही, राम आलू है।

दो (और ऊचे स्वर मे) नही, राम पत्थर है।
(दोनो एक दूसरे के हाथो को पकडकर झपटती हुई क्रमश धीमे स्वर मे 'राम पत्थर है', 'राम आलू है' कहती जाती है। 'तीन' का तेज होता स्वर –)

तीन (सूनी आखो से चारो ओर देखते हुए) आलू ? आलू कहा है ? कहा है आलू ? मैं आलू की सब्जी बनाऊगी। मेरे बच्चे भूखे है। मैं रोटी बनाऊगी। (थोडा विराम) नही तो शराबी फिर मारेगा मुझे। उसको पीटने के लिए औरत और पीने के लिए शराब चाहिए। उस औरतबाज को शराब चाहिए शराब शराब। अरे यह किसने पैदा की है शराब ? यह शराब किस जल्लाद ने पैदा की है ? किस जल्लाद ने पैदा की है यह शराब ? (धीमे होते स्वर मे) यह शराब किस जल्लाद ने पैदा की है ? किस जल्लाद ने पैदा की है .. (और सर पकडकर जमीन पर घुटनो के बल बैठ जाती है।)

एक (घृणा के साथ) उस जल्लाद का नाम ? उस जल्लाद का नाम दुश्शासन है दुश्शासन। वह

मरा नहीं है, वह आज भी जिन्दा है, दुश्शासन यहां के हर मद मे जिन्दा है। वह आज भी औरत को छेडता है, उसकी इज्जत लूटता है। दुश्शासन मरा नहीं है, वह आज भी जिन्दा है

(इसी बीच 'चार' खेलती हुई 'एक' की पीठ से टकरा जाती है। 'एक' डर कर जोर से चिल्लाती है और 'दो' 'एक' की साडी का पल्लू खींचती है।) हाय! बचाओ बचाओ इस दुश्शासन से

दो (जोर से पागलों की तरह काफी लम्बी हंसी हंसती है) है हैं ह अरे कोई कृष्ण बचाओ बेचारी इस द्रौपदी को! (दर्शकों से पूछती है) कोई कृष्ण है? (व्यंग्य से) कृष्ण बचायेगा। जरूर बचायेगा (एक को समझाने के स्वर में) अरी पगली! रोते-रोते राधा बुड्ढी हो गई पर कृष्ण लौट कर नहीं आया। (प्रश्न करते हुए ऊंचे स्वर में) राधा रोते-रोते बुड्ढी हो जाती है पर कृष्ण क्यों नहीं लौटता? (सोचते हुए) राधा रोते रोते बुड्ढी हो जाती है पर कृष्ण क्यों नहीं लौटता? राधा रोते-रोते बुड्ढी

चार ('चार' तालों बजाकर खिलखिलाते हुए) लौटेगा कहाँ से किशन? वह तो भैया के साथ पिक्चर देखने गया? ('एक' के पास आकर अकड़ कर) पापा! भैया की तरह हम भी पिक्चर देखेंगे। देखेंगे ना पापा? बताऊं कौन कौन सी? (क्रमशः एक एक ऊंगली को गिनते हुए) हाथी मेरा साथी, मेरा नाम जोकर,

एक फूल दो माली गीत गाता चले, मा और और शही ई द

पाच (चौंक कर) शहीद ? (खीज के स्वर से) नही ई शहीद कोई नही होता। यह शब्द धोखा है, छलावा है। शहीद कोई नही है शहीद सिफ मौत है। आदमी शहीद नही होता आदमी मर जाता है। कहते हैं मेरा बेटा शहीद हो गया ! हैं हैं हैं साफ-माफ क्यो नही कहते कि मरा बेटा मारा गया। लडाई मे मार दिया उसको। (दर्शकों की ओर सकेत करके) तुमने मार दिया उसको। तुमने मार दिया (दर्शकों से घूमते हुए 'तीन' की ओर आती है।)

तीन (घबराकर) नहीं नहीं मन आपके बेटे को नहीं मारा। वह तो शराब पीकर मर गया। जहरीली शराब पीकर मर गया। (व्यग्य के साथ) है हैं पीओ और पीओ शराब। जहरीली शराब और पीओ। तुम्हारे लिए जहरीली शराब के अलावा पीने को है ही क्या ? यहा के कुओं मे शराब है, नदिया मे शराब है, समन्दरा मे शराब है (गर पकडकर पीछे मुडती हुई भल्लाकर) शराब पीओ और लडो

पांच शराब पीओ और लडा। पर बिना बात कब तक लडोगे ? आदमी तुम बिना बात कब तक लडते रहोगे ? यह मा का दूध मा के दूध मे कब तक सड़ता रहेगा ? एक राखी दूसरी राखी से, एक

है। भूत! भूत!! (नस 'दो' का बाजू पकड़ कर सबकी ओर घूरते हुए)।

नस — चोप, भूत की बच्चियो। सो जाओ। अबके आवाज़ की तो डण्डा मारूँगी (पर पटकते हुए तेजी से चली जाती है।)

तीन — (चौंक कर) डण्डा? डण्डा मारोगे? तुम फिर शराब पीकर आ गये? तुम तो कोयले लाने गये थे ना? लाओ कहा है कोयले? बच्चो का भूख लगी है, म खाना बनाऊँगी। कहा है कोयले? रुपये मुझे दे दो। (विराम) नही है रुपये? रुपयो की शराब पी आये। मेरे बच्चो की रोटी की शराब पी आये? कमीने। (आक्रोश के साथ 'एक' को झिझोडती है और 'एक' डरकर 'दो' की तरफ चली जाती है।) निकल जा यहा से

दो — ('एक' को अपनी ओर आते हुए देखकर) और शराब पीकर अब तुम मेरे पास आए हो? (व्यंग्य से) हैं है है आइये आइये। (तीव्र आक्रोश मे) निकल जा यहा से निकल जा हरामजादे। शराब पीकर आया है तो अपनी औरत के पास जा। मैं भी किसी बाप की दुलारी बेटी हू किसी भाई की प्यारी बहिन हू। मैं भी किसी की पत्नी हो सकती हू किसी की मा हो सकती हू! कुत्ते! औरत का जिस्म पाक जिस्म है, कोई चाट का दोना नही कि मर्द ने चाटा और फेंक दिया। औरत मर्द का ताजमहल है, कोई चौराहे का पेशाबघर नही

चार (चौंक कर 'दो' की तरफ आती है, इसी के साथ 'तीन' पिंडली खुजाने लगती है। उसको देखकर 'एक' भी अपनी कमर खुजाने लगती है। 'दो' भी 'एक' और 'तीन' को देखकर गदन खुजाने लगती है। 'चार' के इस कथन के अन्त तक सब पागलों की तरह खुजाने लगती है।) पेशाब? पेशाब मैंने नही किया मम्मी। बिस्तरो मे पेशाब तो भैया ने किया है। तुमने दूध भी तो भैया को ही पिलाया था (रूआसी होकर) पापा, देखो न पापा पेशाब भैया ने किया है और मम्मी मारती मुझे है। (और 'एक' 'दो' तथा 'तीन' को देखकर 'चार' भी खुजाने लगती है।)

पांच (सबको खुजाते हुए देखकर) खुजली! खुजली! खुजाओ मत। खुजाने पर घाव हो जायेगा। मेरे बेटे ने कहा था—मा युद्ध भी खुजली है। युद्ध आदमी की बड़ी पुरानी खुजली है। आदमी खुजाये बिना रह नही सकता और खुजाते-खुजाते घाव कर लेता है। मेरे बेटे ने कहा था—यह खुजली कुरुक्षेत्र मे चली कलिंग और हल्दीघाटी में चली, प्लासी और पानीपत मे चली। यह खुजली हिरोशिमा और वियतनाम मे, इस्राइल और ईरान मे चली। ओ मेरे बेटो! तुम्हारे पहले के घाव ही नही भरे कम से कम अब तो मत खुजाओ अब तो मत खुजाओ अब तो मत (कहते कहते हाथ की लकड़ी जमीन पर गिर जाती है और स्वय भी लुढ़क जाती है। लकड़ी की आवाज सुन कर 'तीन' चौंकती है।)

तीन देख, अबके डण्डा उठाया तो बुरा होगा। डण्डा उठाया तो मैं तुम्हारा खून पी जाऊंगी। हरामी! कुत्ते! कमीने! तुने मुझे बहुत मारा है

चार ('एक' को कहती हुई) हा, तुमने मुझे बहुत मारा है। ('तीन' से 'एक' बारे में शिकायत करती हुई) पापा, देखो पापा, इस मम्मी ने मुझे बहुत मारा है। (ठुनकते हुए) पापा पापा मेरा एक छोटा-सा काम कर दो ना? मुझे लड़की से लड़का बना दो। बनादो ना पापा.. (जिद्द करती हुई) बना दो ना

एक (व्यंग्य से ठहाका लगाती है) हे है हे तू लड़की से लड़का बनना चाहती है? ('चार' स्वीकृति में भोलेपन के साथ गरदन हिलाती है) अरी बुद्धू तूने यह बात पैदा होने से पहले क्यों नहीं कही? तुझे पदा करके तो बेचारे पापा भी फस गये। तू कम-ठाक जैसे ही जन्मी, पापा की बीस हजार की जेब कट गई

तीन जेब कट गई? आज ही तो तनख्वाह मिली और आज ही जेब कट गई? हे भगवान! अब महीना भर खायेंगे क्या? नहीं-नहीं जेब नहीं कटी। तुम झूठ बोलते हो। तुम सारी तनख्वाह ठेके और कोठे पर फेंक आये।

दो (चौंक कर) कोठे पर? फिर वही कोठे पर? ओ भूखे नंगे बच्चों के बाप! ओ प्यासी औरत के कापुरुष मर्द! तुम्हारे घर के पीछे का हर

दरवाजा गोठ की तरफ ही क्या खुलता है ? तुम्हारे मोहल्ले की हर गली काठे की तरफ ही क्या मुडती है ? गली कोठे की तरफ ही क्या मुडती है ? गली काठे की तरफ ही

एक (सोचते हुए) गली कोठे की तरफ ही क्या मुडती है ? (ठहाका लगाकर) है हैं ह बताऊ ? क्योकि मोहल्ले की गली उधर ही मुडती है जिधर ढलान होती है । और ढलान पर काठा बना लेना मद की सबसे बडी कमजोरी है ।

तीन (व्यग्य से) वाह रे मद वाह ! तुम कोठे पर हुक्के का दम खीचते हो और अपने घर की चढाई म तुम्हारा दम फूलने लगता है ? घर पर बीवी भूखी रहे तो कुछ नही, और तुम भूखे रहो तो बीवी का मारते हो ?

पाच (पीडा स बोझिल स्वर) बेकसूरो को क्या मारते हा कसाई ! ओ आदमी, तुम इतने शरीफ क्यो नही हो कि सिफ भूख लगने पर ही किसी को मारते । (थाडा रुककर सोचती हुई) मेरा वेटा ठीक कहता था कि नागासाकी पर बम भूखा ने नही डाला। हिरोशिमा पर भी बम भूखो ने नही डाला । न हिटलर भूखा था न मुसोलिनो और न इन बमा की भट्टिया मे ही भूखो के लिए खिचडी बन रही है ।

चार (बिगड कर 'पाच' से) मैं खिचडी विचडी नही खाने की मम्मी । अब हम भी भैया की तरह खीर खायेगे, हा खीर । (इसी बीच नस का पर पटकते

हुए गुस्से के साथ प्रवेश)।

नर्स खीर जरूर बनेगी तुम्हारे लिए! चोप! कितनी देर से नाक मे दम कर रखा है तुम सबने। सुनो। बडे डॉक्टर साहब आ रहे हैं—चुपचाप रहना।

दो (आश्चय और भय के साथ) बडे डॉक्टर साहब आ रहे है! बडे डॉक्टर साहब औरत है या मद?

नर्स (अकडकर) मद। मद।

दो (भयभीत होकर) मद! मद आ रहा है! (सब से) अरे मद आ रहा है—मर्द। (सब डर कर अपनी-अपनी चारपाइयों मे दुबक जाती हैं। डाक्टर का प्रवश)।

डॉक्टर (चारो तरफ दखते हुए) सिस्टर, ये तो सबकी सब सो रही ह बेचारी।

नर्स नो सर, अभी अभी तो सब चिल्ला रही थी।

डॉक्टर तो फिर एक साथ सब कसे सो गयी?

नस सर ये सोई नही हैं। आप बुरा न माने तो एक बात कहू सर।

डाक्टर यस यस ?

(इसी बीच पीछे से 'दो' चुपचाप डाक्टर के पीछे आकर तीव्र स्वर म कहती है—)

दो कुत्ते। हरामजादे। मदु ए। दूर हट यहा से । (डॉक्टर चौकता है और 'दो' की तरफ मुडता है। अब

डाक्टर के पीछे से 'तीन' चीखती है—)

तीन शराबी, हत्यारे । अब क्यो आया है यहा ?
(डाक्टर चौंक कर 'तीन' की तरफ मुडता है और फिर उसके पीछे से 'एक' चिल्लाती है—)

एक पिलपिले आलू । तू फिर आ गया यहा ?
(डॉक्टर घबराकर एक' तरफ मुडने लगता है कि पाँच चिल्लाती है—)

पाच मेरे बेटे के हत्यारे । चला जा यहा से ।
(डाक्टर 'पाच' की तरफ मुडने ही लगता है कि 'चार' उसका हाथ खीचते हुए भगडने लगती है ।)

चार भैया क्यो आये हो, चले जाओ मम्मी के पास ।
(इसके बाद पाचो एक साथ अपने इन्ही कथनो को दोहराती हुई डाक्टर पर टूट पडती हैं और मारने लगती हैं । डाक्टर इन सब से घिर जाता है और जमीन पर गिर जाता है । नर्स डाक्टर को बचाने का प्रयास करती रहती है ।)

(पटाक्षेप)

आज का नाटक

पात्र

दुर्गा रानी

पहला पुरुष

दूसरा पुरुष

तीसरा पुरुष

चौथा पुरुष

नायक

मुनादीवाला

फरमान वाहक दा सिपाही

(मच सारी तरह सजा हुआ है। पर्दा खुलते ही दर्शकों को चीरती हुई दुर्गा रानी अपने समर्थकों द्वारा लगाये जानेवाले नारों "मत दो नेता दुर्गा रानी, दुर्गा रानी जिन्दाबाद" आदि के साथ तीव्रता से मच की ओर जाती है और मच पर चढ जाती है। चारो ओर हाथ जोड कर अभिवादन करती है। पहले पुरुष के आग्रह पर मच पर रखी एक भव्य कुर्सी पर बैठ जाती है। पहला पुरुष माइक पर बोलने लगता है)

पहला पु० परम आदरणीया श्रीमती दुर्गा रानीजी और उपस्थित दर्शको। आज की यह रात हमारे लिए परम सौभाग्य की बात है कि आज हमारे बीच हमारी मण्डली की प्यारी, प्रियदर्शिनी सचालिका श्रीमती दुर्गा रानी विराजमान है। मैं आप सभी की ओर से और अपनी ओर से भी दुर्गा रानी का गहनातिगहन तल से अभिनन्दन करता हू। (स्वय ही ताली बजाने लगता है और दर्शको को भी ताली बजाने के लिए प्रोत्साहित करता है) जैसा की आपको मालूम है, श्रीमती दुर्गा रानी फौलादी महिला है, या कहिये कि हम सब महिलाओ के बीच एक मात्र पुरुष है। इनके दिल मे खून नही बहता, वहा तो फौलाद की चट्टान जमा हैं चट्टानें। इनका दिमाग कोई मास का लोथ नही है, वह तो एक फौलाद का दण्ड है—जैसे राजदण्ड, जिससे किसी भी अकड़ू रीढ को तोड दिया जाता है।

इनके बालो मे सफेद चमचमाती गगा की धारा है जैसे (इसी बीच श्रीमतीजी गुस्से मे शीघ्रता से माइक छीन लेती हैं और स्वय बोलने लगती है।)

दुर्गारानी मेरे प्यारे दशको! मैं नही चाहती कि मेरे अलावा कोई और माइक पर बोलने का अभ्यास करे। मैं नही चाहती कि कोई और भी आप लोगो को बहकाने मे कौशल प्राप्त करे। आप वर्षो से जानते है कि मुझे तो बोलना अच्छा लगता है और आप को सुनना। मै वर्षो से बोलती आयी हू और आप वर्षो से ही सुनते आये है। मुझे सुनने की आदत नही है और आप लोगो को तो अभी बोलना आता ही कहा है। लेकिन फिलहाल आप लोगो के बोलने का समय भी नही है। बोलने से अनुशासन बिगडता है और इस समय हमारा यह नाटक-घर घोर सकट के दौर से गुजर रहा है। चारो तरफ लडाई के बादल मडरा रहे है नाटक-घर के दरवाजे-दरवाजे पर दुश्मन खडे है। (तमक-कर) और कुछ ऐसे नाटक-विरोधी लोग भी है जो बोलने से बाज नही आते। आप लोग तो दशक हैं, और सिर्फ दशक ही बने रहिए। आप लोग तो नौजवान है, और नौजवानो को चुप ही रहना चाहिए। आप को अभी से मौन रहने की आदत डालनी चाहिए। आप नवयुवको को तो नाटक की राजनीति से भी दूर रहना चाहिए, आन्दोलन और हडतालो से दूर रहना चाहिए, आपको तो ईमान दार होना चाहिए, चरित्रवान होना चाहिए

दूसरा पु० (दर्शकों के बीच से उठता हुआ—आवेश में) क्या लगा रखी है चाहिए चाहिए चाहिए । जब देखो तब चाहिए चाहिए चाहिए । (मंच पर शीघ्रता से चढ़ जाता है और दुर्गारानी उसको देखकर ठिठक जाती है।) पैंतीस वर्षों में इन्होंने एक शब्द बनाया है—चाहिए । कभी यह चाहिए, यह नहीं चाहिए कभी वह चाहिए, वह नहीं चाहिए । हम कहते हैं यह चाहिए चाहिए हमें नहीं चाहिए ।

दुर्गारानी लो आप भी तो बोल गये न "नहीं चाहिए" में 'चाहिए" ।

दूसरा पु० (सोचता हुआ) हैं ! तो फिर चाहिए में भी चाहिए और नहीं चाहिए में भी चाहिए ! चाहिए में भी चाहिए और नहीं चाहिए में भी चाहिए (दुर्गारानी भी दूसरा पुरुष के साथ बोलती रहती है)—हां चाहिए में भी चाहिए और नहीं चाहिए में भी चाहिए । (तीन चार बार दोनों क्रमश: मन्द स्वर में बोलते रहते हैं फिर उसका ध्यान बटाती हुई दूसरे पुरुष से पूछती है)

दुर्गारानी सुनो, तुम आज यहां नाटकघर में क्यों आये हो ?

दूसरा पु० मैं आज यहां नाटकघर में क्या आया ! तुम्हारे प्रश्न को समझा नहीं ।

दुर्गारानी (एक एक शब्द पर जोर देकर) तुम आज यहां नाटकघर में क्यों आये ?

दूसरा पु० क्या मतलब ! तुम और मुझसे यह सवाल पूछती हो ! अरे तुम्हीं ने तो घोषणा की थी कि इस

नाटक मे आज तुम हमारा नायक दिखाओगी।

दुर्गारानी नायक! वो क्या होता है?

दूसरा पु० तो तुम नायक का अर्थ भी भूल गई! नायक माने हीरो हीरो

दुर्गारानी ओ आई सी हीरो हीरो

दूसरा पु० हा हीरो तो आप तो हमारी भाषा भी भूल गई!

दुर्गारानी मैंने सीखी ही कब थी तुम्हारी भाषा जो भूलूं गी हा तो आप हीरो का देखने तशरीफ लाए हे यहा।

दूसरा पु० तो क्या तुम भूल गई, सैंतीस वर्ष पुराने तुम्हारी नाटक-मण्डली के वादे को। अरे तब तुम-हम साथ-साथ ही तो बैठे थे वहा पर। (दर्शकों मे अपने स्थान की ओर इशारा करके) ठीक उसी जगह, जहा से मैं उठकर आया हू

दुर्गारानी क्या! (हिकारत) में वहा बैठी थी! मुझे कुछ याद नही आ रहा

दूसरा पु० अरे! तुम इतनी जरूरी बात भूल गई! क्या तुम्हें यह भी याद नही कि सैंतीस साल पहले एक और नाटक मण्डली यहा नाटक करती थी। ऐसे बेहूदे नाटक कि देखकर दिल दहल जाता था और हम लोगो ने मिलकर उसे कितना हूट किया था। नाको दम आ गया था उसके। छोड कर भाग गई थी

दुर्गारानी ओ तो तुम सपने की बात कर रहे हो। है ना! हा हा याद आया शायद यह सपना तुमने पहले भी सुनाया था है ना!

दूसरा पु० अरे, तुम हमारी हकीक्त को सपना समझती हो!

दुगारानी अरे छोडो हकीक्त का चक्कर फिर क्या हुआ?

दूसरा पु० फिर एक बार तो हमने उसे इतना लूट लिया कि उन्होंने हमारे ऊपर गोली चलाई। एक साथ हम दोनो के गोली लगी (पिण्डली म निशान बताता हुआ) यह देखो मेरी पिण्डली मे अभी भी निशान बना हुआ है। और तुम्हारी कोहनी मे ही देखलो, वही गोली का निशान (दुर्गारानी की कोहनी म निशान दखन लगता है। निशान नही पाकर) अरे! निशान कहा गया?

दुर्गारानी (हसते हुए) वो बना ही कहा था।

दूसरा पु० लेकिन मैंने अपनी आखो से तुम्हारे यहा पट्टी बधी देखी थी।

दुर्गारानी अरे पट्टी का क्या है। उसे तो कभी भी बाध लो और कभी भी खोल लो। खर एक बात तो है, तुम बातें बहुत इण्ट्रेस्टिंग करते हो।

दूसरा पु० कमाल है! तुम चाहो तो तुम को मै अभी चलकर वह जगह बतला दू जहा मेरे खून से लाल हुई धरती अभी भी ज्या की त्यो है।

दुर्गारानी तो क्या हुआ। जब खून बहेगा तो धरती लाल तो होगी ही, और फिर हमने ताम्रपत्र भी तो बाटे हैं तुम लोगो को।

दूसरा पु० सुनो, तुम्हारे दिए हुए ताम्रपत्र मे मैंने अपने खून को समेटना चाहा और 'वह खन छन कर फिर से धरती मे चला गया।

दुर्गारानी कहा ?

दूसरा पु० वहा (दूसरा पुरुष श्रीमतीजी को मच से नीचे ले जाने का प्रयास करता है) आश्रो, आश्रो अभी बतला दू

दुर्गारानी नहीं, नही अब मैं वहा नही जाऊगी। वहा तो अब बदबू आती होगी।

दूसरा पु० पता नही बदबू का तो। हमारी तो वहा रहते-रहते आदत पड गई है।

दुर्गारानी एक बात तो है, तुम्हारा किस्सा बहुत दिलचस्प है। आगे सुनाश्रो।

तीसरा पु० (दर्शकों के बीच स उठ कर आवेश के साथ कहता है) ठहरो, आगे मैं सुनाता हू यह नही सुना सकेगा। (बसाखियो के सहारे मच की ओर माने लगता है) मैं किधर से आऊ ?

दुर्गारानी (मच के बीच से चढने का इशारा करती हुई) इधर से।

तीसरा पु० इधर से कैसे ? तुमने मुझ इधर से चढने के काबिल तो छोडा ही कहा है। मुझ चढाओ।

दुर्गारानी मै तुम्ह चढा तो दूगी लेकिन इस शर्त पर कि तुम किस्सा सुनाकर वापिस तुम्हारी जगह चले जाओगे।

तीसरा पु० मैं वादा करता हू। और सुनो मैं तुम्हारी तरह वादा फरामोश भी नही हू। (दुर्गारानी तृतीय पुरुष की मदद करने के लिए पहले को इशारा करती है। पहला हाथ का सहारा देकर तीसरे को चढाता है। दूसरा भी मदद करता है।)

दुर्गारानी हा, अब सुनाओ।

तीसरा पु० तुमने फिर से वादा किया कि तुम ऐसी नाट मण्डली बनाओगी जो नाटक कर सके

दूसरा पु० तुमने नारा दिया — "बनाओ ऐसी नाट मण्डली"

तीसरा पु० जो नाटक कर सके।

दूसरा पु० और बनाई नाटक मण्डली।

तीसरा पु० तुमने छछुन्दरों की नाटक मण्डली बनाई अं अभी तक भी उसने कोई प्रदशन नहीं किया

दूसरा पु० सब फ्लॉप

दुर्गारानी (अब तक दुर्गारानी बेचन सी पहले पुरुष के साथ म पर एक छोर से दूसरे छोर तक घूमती है और कि योजना का सकेत करके उसे मच से बाहर भेज देती है फिर ठहाका मार कर हसती है।) बहुत सुदर बहुत सुदर!! तुम्हारा किस्सा बहुत सुदर बताओ क्या इनाम चाहते हो? तुम्हारी किस्साग के लिए तुमको पद्मभूषण की उपाधि दे जाय

तीसरा पु० तुम इसको किस्सागोई समझती हो!

दूसरा पु० उपाधि और इनाम देती हो!

तीसरा पु० नही चाहिए हमे तुम्हारी उपाधि और इनाम हम सिर्फ हमारा नायक चाहते हैं

दूसरा पु० हमारा हीरो!

दुर्गारानी (व्यग्यात्मक हसी) समझदार होकर कैसी बाते कर हो? किस्सा किस्सा होता है असलीयत असलीय होती है। तुम नीरे बुद्ध हो। दुनिया मे क्या को

ऐसा नाटक है जिसमे नायक भूखा ही न हो, जिसमे खलनायक ही नही हो ?

दूसरा पु० लेकिन तुमने हम से वादा किया था

तीसरा पु० हा वादा। और उस वादे को पूरा करने के लिए ही सिर्फ इसीलिए हमने तुम्हे यहा मच पर भेजा था।

दुर्गारानी अब तुम जिद्द ही करते हो तो मैं मान लेती हू। चलो, किया होगा मैंने कोई वादा और मुझे भेजा भी होगा मच पर तुम लोगो ने, लेकिन मेरे पास कोई जादू की छडी नही है कि घुमाई और तुम्हारा नायक हाजिर। अभी तो नाटक की पटकथा ही लिखी जा रही है, नाटक आज तो नही हो सकता (दर्शको को) आप लोग सब जा सकते है। जाओ जाओ जय हिन्द जय हिन्द

तीसरा पु० (दर्शको मे) ठहरो। कोई नही जाएगा यहा से। (दुर्गारानी से) हम जानना चाहते है कि तुमने हमारे नायक की भूख का इन्तजाम किया ?

दुर्गारानी बिल्कुल। हम तुम्हारे नायक को गोहाटी की गलियो मे गर्म गर्म गोलिया खिला रहे हैं। कुछ पता है आप लोगो को कि एक गोली पर कितना खर्च आता है। दो सौ रुपये। कितनी महगी होती है गोली, फिर भी खिलाते हैं हम तुम्हारे नायक को। मुरादाबाद और अमृतसर मे तुम्हारे नायक के लिए मुफ्त मे कफन बाटे है हमने। कितने कफन जुटाये है हमने, कितना करती हू मैं,

कितना करती रही हू मै, सब कुछ तुम्हारे नायक के लिए

दूसरा पु० लेकिन अब हमे हमारा नायक चाहिए

तीसरा पु० ये सब लोग उसे आज देखने आये है।

दुर्गारानी तो ये सब लोग हमे देखल। इस नाटक की सचालिका श्रीमती दुर्गारानी को देखले

दूसरा पु० नही, हम हमारे नायक को ही देखना चाहते हैं

तीसरा पु० तुम्हारे नायक को !

दुगारानी सब्र करो, दिखा दू गी तुम्हारे नायक को भी

तीसरा पु० लेकिन कब ?

दूसरा पु० कब तक ?

दुर्गारानी अगली बार। बस, अगली बार अवश्य दिखा दू गी

चौथा पु० (दशको म स उठकर आगे बढन लगता है। आक्रोश के स्वर म बोलने लगता है।) नही, अगली बार नही, आज ही, आज ही अभी ही अभी ही

दुर्गारानी (भयभीत सी– हडबडाहट के स्वर मे) तुम तुम तुम बैठ जाओ। अभी तुम बच्चे हो

चौथा पु० (स्वत ही शीघ्रता से मच पर चढ जाता है।) नही, मैं नही बैठ सकता। तुमको ये (दूसरे और तीसरे की तरफ इशारा) बर्दाश्त कर सकते हैं। यह तुम्हारे पुराने मित्र है, हम उम्र ह। मुझे तो इनकी नीयत पर भी शक हो चुका है। हम सब देख रहे हैं कि तुम सतीस साल से इस मच पर निकम्मी बैठी हो। तुम हर बार झूठे आश्वासन देकर, बहाना

बनाकर हमको टालती रही हो। कभी कहती हो पटकथा लिखनी है कभी कहती हो सवाद लिखने हैं, कभी रिहर्सल करनी बाकी है तो कभी पोशाक बनानी शेष है

दुर्गारानी तो तुम हथेली म सरसो उगाना चाहते हो नादान ?

चौथा पु० सैंतीस वर्ष हथेली नहीं होती। एक लम्बा चौडा खेत होता है। तुम चाहती तो अब तक सरसो की सतीस फसल काट सकती थी, सतीस।

दुर्गारानी तुम बच्चे हो, नासमझ हो। खेती की रीत नहीं जानते। (चौथे के हाथ लगाकर दर्शकों की ओर भेजते हुए) *तुमको इस नाटकवालों से भी दूर रहना* चाहिए। जाओ जाओ

चौथा पु० (दुर्गारानी का हाथ झटकते हुए) नहीं, अब तक ही बहुत बहक चुके हैं हम। (दर्शकों की ओर सकेत) आज हम सबके हाथो मे ईंट हैं पत्थर हैं, गोले हैं बम हैं। या तो दिखा दो हमारा नायक वरना एक इशारे की देर है ढेर होती नजर आओगी (दुर्गारानी परेशान होकर सोचने लगती है। इसी बीच अपनी अपनी स्थिति म सब जड हो जाते हैं और नेपथ्य से आवाज आती है 'अब कौनसा बहाना बनाया जाय। इसके बाद यथावत् सब क्रियाशील हो जाते है।)

दुर्गारानी (नेपथ्य की ओर जाते हुए घबराहट के साथ) ठहरो ठहरो ग्रीन रूम मे जाकर मैं अभी तुम्हारे नायक को भेजती हू। तुम उसका इन्तजार करना

चौथा पु० इन्तजार इन्तज़ार, कितना भ्रामक शब्द है यह इन्तज़ार

(उत्सुकता और उल्लास के साथ सबकी ओर पागल की हंसी हंसते हुए नायक का प्रवेश)

नायक है हैं है (सब से पूछता है) आप लोगों ने मुझे बुलाया ? (सब पागल को अचानक मंच पर देख-कर आश्चर्य करने लगते है)

तीसरा पु० तुम कौन हो ?

नायक (आंखे निकाल कर गम्भीर होते हुए) मैं कौन हू ? मैं कौन हू ? (एक-एक कर सबकी ओर इशारा करता है) मैं हू तुम तुम और तुम। (दर्शको की ओर इशारा कर के परो के बल चारो तरफ घूमता हुआ) म म सब हू सब।

चौथा पु० बताते क्यों नही तुम कौन हो ?

नायक (चौथे की ओर गौर से देखता हुआ पागल की तरह धीरे-धीरे हसता हुआ, जोर से हसने लगता है। फिर गर्व के साथ अकडकर गर्वीले स्वर म) हम कौन है ? हम हम हम हम इस नाटक के हीरो है हीरो ।

तीसरा पु० बकवास बन्द करो और चले जाओ यहा से।

नायक (अचानक पागलो की तरह रोता हुआ दर्शकों से शिकायत करते हुए।) लो, हीरो को डाटता है, हीरो को।

चौथा पु० (व्यग्य और मजाक के स्वर मे) हीरो साहब, आपकी हीरोइन कहा है ?

नायक (चौथे पुरुष की ओर देख कर हसता हुआ) मैं जानता

था तुम यह प्रश्न मुझसे जरूर पूछोगे। नादान हो ना। (चौथे पुरुष को और उसके बाद सभी को नजदीक आने का इशारा करते हुए) आओ-आओ मैं तुम्हें मेरी हीरोइन दिखाता हूं (अपने फटे पाजामे की कतरना को फाड़कर फेंकते हुए और उसे अपनी हिरोइन बताते हुए) यह रही मेरी हीरोइन यह रही यह रही मेरी हीरोइन। (फटे हुए बनियान को ऊपर करके अपने पिचके हुए पेट को दिखाते हुए) और देखोगे यह रही मेरी हीरोइन। भूखी है भूखी भूखी। (नायक रोता हुआ भूखी– भूखी करता रहता है और दूसरा पुरुष तथा चौथा पुरुष उसे धक्का देकर मंच के बाहर धकेल देते हैं। विराम के बाद नेपथ्य में नायक को पीटे जाने और उसके ऊंचे स्वर में चिल्लाते रहने की आवाज आती है।

नायक नहीं नहीं नहीं मुझे मत मारो, मुझे मत मारो, मुझे मत मारो। अरे मुझे तो पहले ही लोगों ने बहुत मारा है। मुझे शकों ने मारा है, हूणों ने मारा है, तुर्कों और मुगलों ने मारा है। अरे मुझे अंग्रेजों ने मारा है। सुनो, वे तो पराये थे, तुम तो मेरे अपने हो, कम से कम तुम तो मुझे मत मारो। (क्रमशः ढलता हुआ स्वर) मुझे मत मारो मत मारो मत मारो – मत मारो

(मंच पर तीनों स्तब्ध हो जाते हैं)

चौथा पु० (आक्रोश के साथ जोर से) सुनती हो, भेजो हमारे नायक को।
(नेपथ्य से आवाज) सुनो तुम्हारा भूखा-नंगा नायक मुरादाबाद, गोहाटी और अमृतसर की गलियों में मर चुका है। तुम चाहो तो उसकी

नगी लाश को ले जा सकते हो (सभी स्तब्ध हो जाते है।)

तीसरा पु० क्या? हमारा भूखा-नगा नायक मर चुका है ?

चौथा पु० उसने मार दिया नायक को।

दूसरा पु० अरे वह पहलेवाली नाटक-मण्डली भी खराब थी, उसने भी भूखा–नगा रखा, उसने भी मारा। पर वह तो पराई थी

तीसरा पु० ओफ घर के आदमी का धोखा कितना जबदस्त होता है।

दूसरा पु० (सोच कर निर्णय लेता हुआ, पूरे उत्साह के साथ) हम उसकी लाश को लायेंगे।

तीसरा पु० (उत्साहपूर्ण स्वीकृति) हा।

चौथा पु० नही। मच पर लाश का लाना वर्जित है। आपको मालूम नही, अपने नायक की लाश को देखकर ये सब लोग (दर्शक) सहम जायेंगे भयभीत हो जायेंगे। अपने नायक की मौत को सुनकर इनकी धमनियो का खून मर जायेगा। उसका उधर ही जला दिया जाये।

दूसरा पु० (तीसरे से सहमति की अपेक्षा मे) नही, उसे जलायेंगे नही।

तीसरा पु० (पूर्ण सहमति के स्वर मे) हा उसका इलाज करायेंगे।

चौथा पु० (उपहास करते हुए) लाश का इलाज करवाओगे ?

दूसरा पु० हा, हम उसके साथ वर्षो से रह रहे थे।

चौथा पु० तो क्या ? वह तो मर चुका। और उसकी मौत के जिम्मेदार आप भी हैं

दूसरा पु० तीसरा पु० (एक साथ) हम ? हम ?

चौथा पु० हाँ आप। आप अपनी दोस्ती के नाते हर बार उन मक्कारो को माफ करते रहे। वे हर बार आपको धोखा देते रहे और आप उनके बहकावे मे आते रहे। आप उनसे लडे क्यो नही ?

तीसरा पु० हम ? हम तो पहलेवाली नाटक मण्डली की लडाई मे ही थक चुके थे। उसी मे टूट चुके थे। देखते नही ये बसाखिया। ये बसाखिया खुद की मौत की जिम्मेदार तो हो सकती हैं, भला ये दूसरा को क्या मारगी। और तुम जवान होकर भी इन बैसाखियो से उम्मीद करते हो कि अभी भी ये ही लडाई लडे ? शम आनी चाहिए ऐसी औलाद को जो खुद जवान होकर अपने बूढे बाप को लडाई मे भेजना चाहती हो ?

चौथा पु० लेकिन आप हमे उन मक्कारो मे लडने से क्यो रोकते रहे ?

तीसरा पु० लडनेवाले किसी के रोके नही रुकते और फिर तुमको तो आपसी टुच्चे मुद्दो पर लडने से फुसत ही कहा थी ?

दूसरा पु० वे तुम्हारे नौजवान भविष्य को कब्रो मे दफना रहे हैं, भालो की नोको पर चीर रहे हैं, और तुम खम्बे नोच रहे हो। है इस धरती पर और कोई इतिहास जिसे नौजवानो ने न बनाया हो ? तुम खुद ही चमगादडो की तरह उलटे लटके रहोगे और दोष दोगे हमे

चौथा पु० लेकिन

तीसरा पु० फिर लेकिन । जवान मुह से केंचुए सा शब्द निकलता है–लेकिन । क्या होता है यह लेकिन ? आग लगा दो इस शब्द को या इस मुह को । (हिराक्त से) लेकिन

चौथा पु० तो यह भाषा भी तो आप ही ने सिखाई है ।

दूसरा पु० कोसो मत । कैदियो और वेश्याओ की तरह कोसो मत । गलत भाषा सिखाई है तो बदल डालो भाषा को भी । हर नौजवान पीढी अपने नाटक की भाषा नई चुनती हैं । तुम भी छील डालो भाषा के जर्रे-जर्रे को ।

तीसरा पु० भाषा को छीलेंगे ये ? हू । ये तो मनायेंगे घू घट घु घरू, घूमर पनिहारिन ! सबके ख्वाब उन्ही मध्यकालीन ऐयाशियो के । औरत के इर्दगिर्द । (व्यग्य मे) नाटक करेंगे ! हू

दूसरा पु० सुनो, वह इससे ज्यादा कुछ नही कर सकती । और तुम उल्लुओ के सामने तो वह यो ही नौटकी करती रहेगी । हर सठियाई मण्डली ऐसी ही नौटकी तो करती है । तुम मे हिम्मत है तो तुम रचो नया नाटक । आज का नाटक । दिखाओ न तो अपना जौहर नया नायक बनाने का

चौथा पु० तो, सुनलो दोस्तो

तीसरा पु० हा, कहा–तो' 'तो' कहो 'तो', तो सुनलो दोस्तो

चौथा पु० तो सुनलो दोस्तो ! अब यहा नया नाटक रचेगा ।

अब नया ही नायक बनेगा। इन हाथो से अब नया ही नायक बनेगा। बोलो नया नायक

दूसरा और

तीसरा पु० जिन्दाबाद!

चौथा पु० हमारा नायक

दूसरा और

तीसरा पु० जिन्दाबाद!

(इसी बीच दो सिपाही आते हैं और मच के तीनो पुरुषो को पकडकर ले जाते हैं। आपस मे सघर्ष होता है, किन्तु नेपथ्य मे घसीट लिए जाते हैं। इसके बाद मुनादी वाला गले मे ढोल लटकाये उसे बजाता हुआ आता है और मुनादी करता है)

मुनादीवाला सुनो, सुनो मुनादी सुनो। डके की चोट नाटकघर का गजट सुनो। दुर्गारानी के ग्रीन-रूम का फरमान सुनो। फरमान है कि मच पर दगा करने के आरोप मे मच सुरक्षा कानून के अन्तगत कुछ दगाइयो को गिरफ्तार किया गया है। सुनो, सुनो, मुनादी सुनो। दुर्गारानी के ग्रीन-रूम का फरमान सुनो। फरमान मे दशको के लिए सख्त हिदायत है कि वे दशक ही बने रहे, मच पर आने की हिमाकत न कर। वरना उन्हे भी दुर्गा-सुरक्षा कानून के अन्तगत गिरफ्तार किया जायेगा। सुनो, सुनो, मुनादी सुनो। डके की चोट नाटकघर का गजट सुनो। दुर्गारानी के ग्रीन रूम का फरमान सुनो। (इसी बीच तेजी से एक व्यक्ति दूसरा फरमान लेकर मुनादीवाले के पास आता है)

फरमान
वाहक ठहरो मुनादीवाले ठहरो। ग्रीन रूम का यह दूसरा गजट सुनाओ।

(फरमानवाहक चला जाता है। मुनादीवाला दूसरी मुनादी को पढ़कर ढाल बजाते हुए सुनाने लगता है)

मुनादीवाला सुनो, सुनो, मुनादी सुनो। डके की चोट नाटकघर का गजट सुनो। गजट पर दूसरा गज़ट सुनो। गजट का नया फरमान सुनो। फरमान है कि दुर्गारानी के ग्रीन रूम का घेराव कर लिया गया है और नाटक की नयी मण्डली का चुनाव कर लिया गया है। और आज के नाटक का यही पड़ाव कर दिया गया है। सुनो, सुनो मुनादी सुनो, डके की चोट नाटकघर का गजट सुनो,
(मुनादीवाला ऐसी ही मुनादी करता हुआ मच के बाहर चला जाता है।)

[अन्धकार]

हिटलर

पात्र	तनय	छात्रावासी लडका
	शरद दीपक समर	तनय के मित्र
	जमादार	
	डाकिया	
	पकजराय	तनय के पिता
	विवेकी रसद चम्पक	पकजराय के मित्र
	मगू	पकजराय का नोकर

प्रथम दृश्य

स्थान छात्रावास का कमरा   समय अपराह्न

[तनय का कमरा। कमरे की दीवारों पर फिल्मी तारिकाओं की तस्वीरें। कुर्सियों और मेज पर सस्ते उपन्यास और भरी - अधभरी - खाली शराब की बोतलें फैली हुई हैं। अस्त-व्यस्त बिस्तर। कोने में अटैची पर गन्दे कपड़े। जूते इधर-उधर पड़े हुए। पाठ्यक्रम की पुस्तकें एक कोने में पड़ी हुई। तन्नो टेप रिकार्डर पर पश्चिमी शैली का नृत्य कर रहा है। दरवाजे पर खट-खट होती है। वह नाचना बंद कर झुंझलाता हुआ दरवाजा खोलता है।]

तन्नो (दरवाजा खोलते हुए) क्या डिस्टर्ब करते हो।

डाकिया (तार देता हुआ) तार है आपका।

तन्नो (हड़बड़ाहट के साथ) तार ! मतलब टेलिग्राम ! मेरा ! कहा से ?

(डाकिया चुप रहता है और तनय को हस्ताक्षर करने के लिए एक कागज पकड़ा देता है। तनय हस्ताक्षर करता है और डाकिया चला जाता है।)

तन्नो (तार खोलते हुए) तार अच्छा हो तो भी खलबली मच जाती है। (पढ़ता हुआ) रीचिंग मण्डे मॉर्निंग ? परसों सुबह रीचिंग! मारे गये तन्नो .. गजब हो गया ..

(तनय विपतव्यमूढ़ सा हो जाता है और कुछ क्षण के पश्चात् दरवाजे की ओर जाकर जोर से पुकारता है)

तनय — अरे गौतम ! अरे इस जमादार को भेज देना यार अभी

(गलेरी से आवाज—क्या, उल्टी वरदी क्या ?')

तनय — अरे भेज यार प्लीज सीरियसली

तनय एक नजर कमरे की मार दौड़ाता है। और कमरे की सफाई में लग जाता है। फिल्मी-तारिकाओं के कलण्डर उलट देता है जिनके पीछे की तरफ गणेश, शकर, लक्ष्मी सरस्वती आदि के चित्र हैं। इतने में ही झाड़ू और टोकरी लिए हुए जमादार का प्रवेश।)

जमादार — वादवाकी मे, मुझे बुलाया साव ?

तनय — हा हा, कमरे की सफाई करनी है।

जमादार — (बहाना बनाते हुए) अभी तो वाडन साहब ने बुलाया-वादवाकी मे

तनय — (जेब से टटोलकर एक रुपया निकालकर जमादार की हथेली में थमाते हुए) अरे वाडन के मार झाड़, पहले मेरे कमरे की सफाई कर।

(जमादार सफाई करने लगता है। तनय शीघ्रता के साथ चीजो को सजाने लगता है। वह जमादार की टोकरी में शराब की बोतलें, उपन्यास और कूड़ा आदि डालता है)

तनय — (शराब की बोतलें जमादार को देते हुए) इनमे थोड़ी बच गई है, पी लेना। और यह ले उपन्यास, रद्दी मे बेच देना।

जमादार एक बात पूँछू साब ?

तनय पूछ पूछ, जल्दी पूछ।

जमादार वादवाकी में, आज सफाई क्यों हो रही है साब ?

तनय (बिगडते हुए) सफाई क्यों हो रही है ? इस कूडे के ढेर में रहूँ मैं ?

जमादार साब पहले तो कभी भी वादवाकी में

तनय अबे परसों हिटलर आ रहा है।

जमादार हिटलर ? समझा नहीं वादवाकी में

तनय वादवाकी के बच्चे! तू बक-बक मत कर। काम तो करता नहीं ऊपर से दिमाग और चाटता है। (तनय शीघ्रता के साथ कमरे को व्यवस्थित करता है। कोने में पडी हुई कोर्स की किताबों को उठाकर झाडता है। उन्हें गौर से देखते हुए—)

तनय चूहे काट गये! आजकल तो चूहे ही किताबें पढते हैं। (किताबों को टेबिल पर सजाता है, फिर इधर-उधर से कपडे बटोरकर लाता है और जमादार के सामने ढेर कर देता है।)

तनय इन्हें धोबी को दे देना और यह देखो उसे समझा देना कि कुर्ते पाजामे के दाग वाग अच्छी तरह देखले।

जमादार देखेगा क्या ? आप जानो साफ ही कर लायेगा वह।

तनय मेरा मतलब —

जमादार समझ गया आपका मतलब समझ गया। बादशाही में, एक बात और पूछू आपसे

तनय क्या ? बात ? वह बाद म पूछना।

(जमादार कपड़ों की गाठ बाधता है और तनय अस्त-व्यस्त जूतों को इधर उधर से निकालकर जमादार के आगे डालता है।)

तनय देख, जूतों के पालिश भी करानी है। चमाचम। मोची को दे देना। कल सुबह तक चाहिए। जरूर।

जमादार (जूतों को टोकरी म रखता हुआ) सफाई तो हो गई बादशाही मे

तनय ठीक है (जूते कपड़ों की ओर इशारा करते हुए) इन्हे ले जाओ और कल सुबह और सफाई कर जाना।

(जमादार गरदन हिलाकर चला जाता है और तनय तेजी से दरवाजा बन्द कर देता है। अलाम घड़ी को पोछता है बिस्तर ठीक करता है। इतने म ही बाहर ठहाका लगाते हुए लोगों की आवाज, फिर जोर की की दस्तक। ठहाके चलते रहते हैं।)

तनय स्साले सब अभी मरेंगे। (दरवाजा खोलता है तेजी से शरद, समर और दीपक ठहाका लगाते हुए प्रवेश करते हैं, और दरवाजा बन्द कर देते हैं।)

समर (किसी पुराने प्रसग को जारी रखते हुए) और उसके बाद वह ऐसी कटी कि उसने मेरी तरफ देखा तक नही। (इस बात पर तीनो जोर से हसते हैं। तनय क्षुब्ध बना रहता है। उसके दोस्त सजे हुए कमरे को तरफ देखकर आश्चर्य करने लगते है।)

समर है ? ठीक तो पहुच गये न यार ?

शरद मुझे भी कुछ गडबड ही लगती है ।

दीपक (चारो ओर गौर से देखते हुए) यार तनो ! या तो यह कमरा तेरा नही और तेरा है तो फिर तू तनो नही ।

समर क्या वेचारे कमरे की ऐसी-तैसी कर दी तू ने ?

(वे जमी हुई कुसियो को घसीटते हुए अव्यवस्थित रूप से बठते है । एक मज पर ही बैठ जाता है । समर सिगरट पीने लगता है ।)

तनय कुसियो को ग्रस्त-पस्त करते देखकर) ये क्या कर रहे हो यार   ?

शरद अरे बैठ ही तो रहे हैं ।

दीपक (मजाकिया स्वर म) हा ता भई इरादे तो नेक हैं तुम्हारे ? किसी को फसाने वसाने के चक्कर मे तो नही हो यार ?

समर   और किसी को फसाओ तो अपना टक्स पहले

तनय (झ झलाकर) तुम सुना तो सही यार

शरद (समर स) अरे इस फटीचर को कोई सू घे भी नही यार । क्यो वेचारे की मजाक करते हो ?

दीपक लगता है यार, तुम्हारे भी इश्क का कुछ बुखार बुखार चढ रहा है ।

तनय (झु झला कर) अरे इश्क गया भाड मे-

समर भाड मे गया ! तब तो बहुत बुरा हुआ, चलो इस गम को गलत करने के लिए एक पग ही हो जाये ।

दीपक ठीक है यार, सारा ही बीच सूखा निकल गया।
(तनय के टेप-रिकार्डर को बजाकर सगीत के साथ नृत्य करने लगते हैं।)

तनय (झुंझलाकर) यहा तो स्साला तनो मर रहा है और तुम्हें डांस की सूझ रही है।

समर (झुंझलाहट) अबे तो बोल ना, क्या हो गया ?

तनय परसों हिटलर रीचिंग ?

समर (आश्चर्य के साथ) परसों हिटलर रीचिंग ?
(तीनों एक दूसरे की तरफ देखकर एक साथ जोर से ठहाका लगाते हैं और 'परसों हिटलर रीचिंग' गाते हुए नाचने लगते हैं।)

तनय प्लीज़ स्टाप दिस ना मस (सब रुक जाते है)

दीपक तो परसों हिटलर आ रहा है ? तेरा दिमाग तो ठीक है ?

समर मालूम है हिटलर कौन था ?

शरद मैं बताऊँ ?

दीपक अरे तुम क्या बताओगे हिटलर के बारे में ? वह प्रसिद्ध सगीतकार हिटलर जब बादल राग गाता था तो आकाश से बादल बरसने लगते थे, और जब दीपक राग गाता था तो चारों तरफ दीपक जगमगाने लगते थे।

शरद (हसते हुए) वाह भाई वाह! तुम्हारा भी मुकाबला नहीं। क्या बेचारे तानसेन की रेड मारी है तुमने। अरे हिस्ट्री की क्लास मे क्या कान बन्द करके बैठे रहते हो ? पिछले महीने ही तो प्रोफेसर गुप्ता

ने बताया था कि हिटलर यूनानी दार्शनिक एरिस्टोटल का बटलर था बटलर

समर यस, यू आर हण्डरेड परसेण्ट करैक्ट

शरद और वह लहसुन की चटनी इतनी बढ़िया बनाता था, इतनी बढ़िया बनाता था (अंगुलियां को चाटने का अभिनय करते हुए) कि प्लेटो उसे चाटता रहता था और सोचता रहता था चाटता रहता था सोचता रहता था चाटता रहता था सोचता रहता था

समर अरे चाट लिया यार। तुम भी शायद पूरी हिस्ट्री नही जानते। एरिस्टोटल के मरने के बाद हिटलर प्लेटो का खाना बनाने लगा। वह ऐसा मुर्गा पकाता था कि प्लेटो उसे चूसता रहता था और लिखता रहता था चूसता रहता था ... लिखता रहता था चूसता रहता था

तनय (झुंझलाकर) ओफ हो मान गया भइ तुम सब हिस्ट्री के प्रोफेसर हो लेकिन मेरा हिटलर तो दूसरा है

दीपक (झुंझलाकर) अबे बोल ना तो कौन है ?

तनय (जोर से) मेरे फादर।

शरद ओ ! आई सी तो तुम्हारे फादर आ रहे हैं ?

तनय और नही तो क्या ?

समर यह फादर भी क्या सड़ियल चीज होती है यार ! जब चाहे तब धर-दबोचे ..

शरद ऐसी बात तो नही है हां आं ... आ

दीपक हां क्या ? उनके सामने न बोलो, न चलो, न हँसो, न रोओ। बस, हनुमानजी बनकर बैठ रहो।

समर अरे यार, फादर की बला से तो टला जाय वही अच्छा। और मैं तो यही सलाह दूंगा कि अगली सात पीढ़ियां तक कोई फादर बने ही नहीं।

दीपक अरे हम तो फादर को यहां बुलाने का चक्कर ही नहीं रखते, घर ही मिल आते हैं। और फिर तना, तू कोई दूध पीता बच्चा तो है नहीं जो फादर तुझे दूध पिलाने आयगे

शरद और दूध भी पिलाना हो तो फादर पिलाते है या मम्मी पिलाती है।

समर (सोचते हुए) अच्छा तना, एक बात बता। तुम्हारे फादर परसों आ रहे है ना ?

तनय हां, परसों सुबह।

समर और घर से कब चलेंगे ?

तनय कल रात को।

समर कल रात को ? तो मेरी बात सुन। आज तो शनिवार ही है। हमारे साथ चल तारघर। एक देदे अर्जेन्ट टेलिग्राम—'रीचिंग सण्डे नाइट'।

दीपक (खुशी से उछलते हुए) आइडिया है आइडिया ! (तनय समर को बाहों में भर कर उठा लेता है और सब खिलखिलाते और उछलने लगते है तथा नृत्य के साथ 'रीचिंग सण्डे नाइट' गाने लगते हैं।)

[अंधकार]

दूसरा दृश्य

स्थान पकजराय का ड्राइगरूम समय रात्रि 8 वजे

(ड्राइङ्गरूम मे अर्द्ध नग्न स्त्रियो के क्लेण्डर । पकजराय अपने तीन मित्रो के साथ सोफो पर बठे ताश खेल रहे हैं । जुआ चल रहा है । नौकर मगू उवले हुए अण्डे और नमकीन की प्लेटें रख जाता है । विवेकी ताश के पत्ते बांट रहा है । बीच म ही वह एक अण्डा उठाकर खा जाता है तथा दूसरा अण्डा हाथ म लेकर कहता है—)

विवेकी (अण्डे को दिखाते हुए) यह अण्डा भी क्या चीज है पकजराय कि

पकज कि खाने को जी ललचाता है ।

विवेकी वो तो है ही । अजी भगवान श्रीकृष्ण ने गीता मे कहा है कि हे अर्जुन अगर तुम मोक्ष प्राप्त करना चाहते हो तो अण्डे खाओ । खूब खाओ । क्या ? (सब को प्रश्नात्मक दृष्टि से देखता है) क्योकि अण्डे खाने से शरीर मोटा होता है । शरीर से दिमाग और दिमाग से बुद्धि मोटी होती है । और मोटी बुद्धि से आदमी सब कुछ भूलता हुआ मोक्ष को प्राप्त होता है ।

रसद (झुझलाकर) अरे तुम पत्ते तो बाटो कृष्ण-भगवान के बाप ।

(विवेकी पुन पत्ते बाटन लगता है ।)

चम्पक अरे वाह भाई विक्की, क्या उल्टी गंगा बहाई है ! (अण्डा खाते हुए) तुम कहते हो अण्डा खाकर आदमी सब कुछ भूल जाता है ? अरे एक यह अण्डा ही तो है दुनिया में जिसे खाकर लोग भगवान को याद रखते हैं वरना दुनिया में भगवान का पत्ता कभी का साफ हो गया होता ।

पंकज (जोर से) अरे मंगू

मंगू (नेपथ्य से) आया बाबूजी

पंकज (झुंझलाकर) यह कम्बख्त ठीक मौके पर तो काम करता ही नहीं ।

(मंगू आता है)

पंकज कहां मर गया था तू, सारा मजा किराकिरा हो गया ।

मंगू बिना मिट्टी डाले ही किरकिरा हो गया बाबूजी ।

पंकज चोप । ब्लडीफूल

मंगू बड़े फूल ? बड़े फूल तो नहीं है बाबूजी ।

पंकज क्या नहीं है ?

मंगू बड़े फूल ।

पंकज अबे एक बाटल लेकर आ अन्दर से ।

(मंगू शराब की बोतल लेने जाता है ।)

पंकज इस जमाने में तो नौकर रखने से तो अच्छा है खुद ही नौकर हो जाय ।

(मगू बोतल लाता है। पकज राय मगू से बोतल छीन लेते हैं और गिलासो म भरते लगते हैं।)

रसद (पत्ता फेंकते हुए) क्या पत्त बाट हैं विवेकी ? अबके तो मारे गये सफा।

चम्पक क्या फेंका भई ?

विवेकी चिडी का बादशाह।

रसद (शराब पीते हुए) यह शराब भी क्या जन्नत है दोस्त। हमारे कुरान शरीफ मे मोटे मोटे अल्फाज मे लिखा है

पकज (रसद से) तुम चलोगे भी यार

रसद (पत्ता फेंकते हुए) उसमे लिखा है कि हर मुसलमान को शराब पीनी चाहिए जरूर पीनी चाहिए क्यो ? क्योकि शराब की बेहोशी मे ही तो अल्लाह-ताला इन्सान की रूह को जन्नत बख्शता है।

पकज (पत्ता जोर से फेंकते हुए) अरे हमारे ऋग्वेदजी भी तो यही कहते है कि जब तक तुम सोम रस नही पीओगे तो ईश्वर की पूजा का यज्ञ कर ही कसे सकते हो। (और शराब का घूट खीच लेता है।)

विवेकी स्साला ढग का पत्ता तो एक भी नही आया।

चम्पक अरे यही तो वजह है कि हिन्दुस्तान उन्नति कर रहा है। क्या कर रहा है ? उन्नति। यहा का मुसलमान अण्डे खाकर कृष्ण को पूजता है और हिन्दू शराब पीकर कुरान को मानता है। (शराब पीता है)

रसद गुलाम से ऊंचा तो एक पत्ता ही नहीं दिया भाई ने।

(घंटी की आवाज होती है।)

पंकज (कठोर स्वर में) कौन है भई ?

(घंटी फिर बजती है। पंकजराय झूमते हुए दरवाजा खोलने जाता है।)

पंकज (दरवाजा खोलकर नशे में) क्या भई, क्या काम है ? तंग क्यों कर रहे हो ?

डाकिया (तार देता हुआ) तार है आपका।

पंकज मेरा तार है ? ओह ! लाओ।

(पंकज तार लेता है और कागज पर हस्ताक्षर कर देता है।)

विवेकी (झुंझलाकर) क्या यार खाने-पीते वक्त भी बिजनेस, बिजनेस, बिजनेस। यह स्साला बिजनेस हुआ कि आफत हुई।

पंकज (सहज स्वर में पढ़ता हुआ) रीचिंग सण्डे नाइट मेल, तन्नो

(वह आश्चर्य के साथ पुनः पढ़ता है)

पंकज रीचिंग सण्डे नाइट मेल ! देखना विवेकी यह क्या लिखा है इसमें ?

विवेकी (तार लेकर पढ़ता है) रीचिंग सण्डे नाइट मेल तन्नो

पंकज (हड़बड़ा कर) ओफ ! मारे गये ! और सफा मारे गये। भई आज का यह ताश का प्रोग्राम कैन्सिल।

चम्पक (नाराजगी दिखाता हुआ) ना भई पकज। तुम्हारे और प्रोग्राम जाये भाड मे (और वह पत्ते फेंक देता है।) तुम आज जीत गये तो अब खेलोगे नही।

रसद (चम्पक के पत्ते फेंकने पर परेशान होते हुए) अरे पत्ते क्यो फेक दिये ? यह बाजी तो खेल ला यार ।
(रसद चम्पक के पत्ते उठाकर देता हुआ) लो सभालो।

पकज क्यो इतना गुस्सा हो रहे हो चम्पक। यहा तो खाली आफत आ रही है।

विवेकी क्यो, हुआ क्या ?

पकज हुआ क्या कहू। अभी मेरा हिटलर आ रहा है।

विवेकी (आश्चय के साथ) हिटलर ?
(विवेकी, चम्पक और रसद तीनो एक दूसरे को तरफ आश्चय के साथ देखकर एक साथ व्यग्यात्मक ठहाका लगाते है।)

विवेकी तुम भी कमाल के आदमी हो। अरे हिटलर तो कभी का मर गया। पता है हिटलर तो ससार-प्रसिद्ध एक तेज तर्रार घोडा था घोडा। चलने मे हवा का मुकाबला करता था। साव (सबको सम्बोधित करते हुए) महाराणा प्रताप जब हिटलर पर बठकर जाते थे तो मुगल सेना थर्रा थर्रा उठती थी, और

चम्पक अरे यार, क्यो बेचारे उस चेतक की आत्मा पर मिट्टी डाल रहे हो ? लगता है तुमने कभी खेती-

वती भी नही। जनाब (सबका संबोधित करते हुए) हिटलर तो अमेरिकन गह की एक वेरायटी है जिससे डबल रोटी बहुत बढ़िया बनती है।

रसद तुम सब बेवकूफ हो। अरे हिटलर ता

पंकज (झल्लाकर) ओफ हो, तुम्हारे हिटलर जहन्नुम म गये। मेरा हिटलर दूसरा है

विवेकी (झुझलाकर) तो कौन है ?

पंकज मेरा लडका तन्नो।

विवेकी ता तुम्हारा लडका आ रहा है।

चम्पक मतलब आपके साहबजादे पधार रहे हैं। और इसी नौ बजे वाली मेल म ?

रसद ये लडके लडकिया भी बडी आफत होती है यार

चम्पक और क्या ! न उनके सामने कुछ खाओ न पीओ न खेलो। छींकना भी तो स्साले कहेंगे (नकल करते हुए) पापा न छींक दिया।

विवेकी अजी हम तो अपने लडका से हास्टल मे ही मिल आते है। पंकजराय तुम भी अगर

पंकज मैं भी तो अभी ग्यारह बजे थी उस से मिलने ही तो जा रहा था। लेकिन वह भी तो आखिर औलाद ता हमारी ही है ना। वो खुद ही यहा पधार रहे हैं।

चम्पक खर चलो, (घडी देखकर) अभी तो पन्द्रह मिनिट है। यह बाजी तो खेल लो।

विवेकी और फिर ट्रेन कौन-सी राइट-टाइम ही पहुचती है।

पकज अरे नही यार मारा जाऊगा सफा। यह देखो कमरा (चारो तरफ दिखाता हुआ)

रसद (पकज का हाथ पकडकर बिठाते हुए) अरे दठो जनाब अभी तो बहुत टाइम पडा है।

पकज नही भई, देखते नही यह सब

रसद तो फिर चलते हे करने दो बेचारे को तयारी।

पकज अरे नही, थोडी हैल्प तो कराओ यार

विवेकी नही पकज। अब चलते है। मै तो भूल से न्यू फिल्म की टेप मेज पर ही छोड आया था। मेरा लडका देखेगा तो सोचेगा कि पापा भी

चम्पक यार मैं भी आजकल कामसूत्र पढ रहा हू जो लेट्रिन मे ही रह गई, बच्चे चले गये होगे तो

रसद और भई मेरा भी एक खास फोन आनेवाला है। बच्चे उठायेगे तो

(तीनो जाने लगते है)

पकज जाओ, तुम सब चले जाओ। (मगू को जोर से आवाज लगाता है) मगू अरे मगू ...

मगू (नपथ्य से) लाया बाबूजी

पकज अरे कुछ मत ला, वैसे ही आ जा।

मगू (नपथ्य से) मछली तो पकते ही परोगी बाबूजी....

पकज अरे मछली को डाल चल्हे मे, यहा आ।

मगू वो तो कभी की डाल दी बाबूजी। अब तो निकाल ही रहा हूँ

पंकज (झल्लाकर) अबे पहले यहां आ।

पंकज (मगू आता है) सुनता नहीं हम बुला रहे हैं। मछली वछली सब बन्द। उनको उठाकर फेंक दो या तुम खा लेना।

मगू राम राम बाबूजी। नीली छतरीवाले की कसम। कसी बातें कर रहे हैं आप? मछली खाकर मैं अपना धरम भिस्ट करूंगा।

पंकज कुत्तों की तो कमी नहीं है ना यहां? उन्हें दे देना पहले यह कमरा साफ कर।

(मगू मुंह बिचकाता है और अन्दर जाने लगता है।)

पंकज (डांटते हुए) फिर अन्दर ?

मगू झाडू भी तो लाऊं?

(बडबडाता हुआ चला जाता है और झाडू लाता है। इसी बीच पंकज कलेण्डर बदलता है जिनके पीछे से देवी-देवताओं की तस्वीरें निकलती हैं।)

पंकज पहले ये बोतल और प्लेटें उठा। जल्दी

मगू बाबूजी, प्लेटों में तो यों ही रखा रह गया।

पंकज रह जाने दे। सुन, अगरबत्ती ला। सारे घर में मछली की बदबू आ रही है।

(मगू अगरबत्ती जलाकर लाता है। पंकज भी कमरे की सफाई करता रहता है।)

पंकज अरे जरा इलायची तो ला, मुंह बदबू मार रहा होगा।

(मगू अन्दर से इलायची लाता है। पंकज इलायची खाता है। अपने कपड़े ठीक करता है। फिर कुर्सी पर बैठकर 'रामचरित मानस' पढ़ने लगता है—'रघुकुल रीति सदा चलि आई। जय हनुमान ज्ञान गुण सागर। रघुकुल रीति सदा चलि आई। जय हनुमान ज्ञान गुण सागर। घंटी बजती है। पंकज मगू को दरवाजा खोलने का इशारा करता है। दरवाज़ा खुलता है। तनय सफेद कुर्ते पाजामे में प्रवेश करता है। एक हाथ में एक पुस्तक दूसरे में अटेची। वह पंकजराय के पांव लगता है।" पंकज अन्त में 'सियावर रामचन्द्र की जय" कह कर 'रामचरित मानस' बन्द कर देता है।)

पंकज (कृत्रिम पुलक के साथ) अरे आओ, आओ बेटे। अभी-अभी तो तुम्हारा तार मिला है। कहो कैसे हो ?

तनय (बनावटी विनम्रता) आपके आशीर्वाद से बहुत ठीक हूं।

पंकज कितने दिन हो गये तुम्हें गये। मुझ से तो रहा ही नहीं जाता बेटे। इसीलिए मैं खुद ही आ रहा था पर

तनय मैंने सोचा पिताजी कि सर्दी का तो मौसम है। फिर ट्रेन में फर्स्ट क्लास में तो आसानी से रिजर्वेशन हो नहीं पाता और सैकिण्ड क्लास ! ओफ हो कितनी भीड़ होती है ! आप ट्रेन में खड़े तक नहीं रह सकते। आप ऐसी भीड़ में आते कैसे पिताजी ! इसलिए मैंने सोचा कि मैं ही

पकज अरे झाड मारो ट्रेन को। तुमसे मिलने तो हम प्लेन से आ जाते। रुपये ही ता लगते

तनय ना ना ना पिताजी। यही तो मैं सोच रहा था कि आप कही प्लेन से न आ जाय। आप सुनते नही आजकल एयर क्रेश कितने होते है?

पकज अरे एयर क्रेश हो जाये तो हो जाये। लाग यही तो कहते कि पकजराय अपने बेटे से मिलने गये थे तो शहीद हो गये।

तनय (अपने मुह पर हाथ रखकर) नही-नही-नही। कसी बाते करते हैं पिताजी

पकज खैर, अबकी बार हम तुम्हारे मेहमान होगे। हा तो बेटे, पढाई वढाई कसी चल रही है?

तनय (हक्का बक्का होकर) पढाई ! है है है पढाई बहुत अच्छी चल रही है। पढाई बहुत अच्छी परीक्षा नजदीक है ना तो यह समझिये कि पढाई बहुत अच्छी न दिन का पता है न रात का। और यह समझिये कि पढाई बहुत अच्छी सपने मे भी किताब ही किताब दिखती है ना, तो यह समझिए कि पढाई बहुत अच्छी

पकज (हसते हुए) क्या नही बेटे क्या नही। हमारी ता भई कोई परीक्षा-वरीक्षा है नही। फिर भी यह रामायण है जब भी बिजनेस से फुरसत मिलती है इसे ही पढते रहते हैं। (शक के साथ) यह तुम्हारे हाथ म किताब कौनसी है बेटे?

तनय पिताजी यह तो कोर्स की नही है।

पकज कोर्स की नही है ! तो कौनसी है फिर ? (तनय से किताब लेकर देखता है फिर प्रसन्न होकर—) अरे यह तो गीता है। वाह बेट वाह ! बहुत अच्छे। बाप रामायण पढ तो बेटा गीता क्यो नही पढेगा। तो कौनसा काण्ड चल रहा है आजकल ?

तनय बस, लका काण्ड खतम कर लिया।

पकज भई तुम्हारा लका काण्ड जल्दी पूरा हुआ। मेरी तो इस रामायण का अभी द्रोपदी काण्ड ही पूरा नही हुआ।

तनय मैं थोडा स्पीड से पढता हू ना ..

पकज तब ही, चलो छोटो (जोर से आवाज लगता है) हाथ मु ह धोलो, फिर भोजन करना। अरे मगू ओ मगू

मगू (नपथ्य से) आया बाबूजी ई ई

पकज तनो के लिए खाना बनाओ

तनय नही पिताजी, खाना तो मैंने ट्रेन में ही खा लिया था।

पकज अरे यह क्या ?

तनय मैंने सोचा पिताजी कि अगर मगू घर चला गया होगा तो खाना बनायेगा कौन ?

पकज अरे वाह, हम खुद बनाकर खिलाते अपने बेटे को। तो फिर चलो, तुम आराम करो। मुझे तो थोडी माला फेरकर सोने की आदत है।

तनय ओफ हो ! पिताजी यही तो हाल मेरा है । जब तक थोडी बहुत पूजा नहीं कर लू मुझे भी नीद ही नहो आती ।

पकज यह तो बहुत अच्छी बात है बेटे । चलो जल्दी से पूजा करके सो जाना, अच्छा ! पूजा कहा करोगे ?

तनय यही आपके साथ ।

पकज मेरे साथ ? चलो, ठीक है । बैठ जाओ ।

(दोनो माला निकाल लेते हैं और दशका की ओर मुह करके पद्मासन मे बठ जाते है और आखें बन्द करके होठ हिलाते हुए मन्त्र जपने लगते हैं । थोडी देर बाद तनय आखें खोलकर पकजराय की तरफ देखता है । कुछ क्षण बाद पकजराय भी तनय की तरफ देखकर पुन आखें बन्द कर मन्त्र जपने लगता है । दोनो ही द्वारा एक बार पुन इसी प्रकार किया जाता है । तीसरी बार ऐसा करते हुए तनय और पकजराय की आखें मिल जाती है और दोना हक्के बक्के रह जाते हैं तथा तेजी से होठ हिलाते हुए जाप करते रहते हैं ।)

(पटाक्षेप)

शम्बूक - वध

पात्र : राम
लक्ष्मण
शम्बूक
ब्राह्मण
नारद
द्वारपाल

प्रथम दृश्य

समय पूर्वाह्नकाल स्थान राम दरबार

(राम दरबार। राम और लक्ष्मण आसनो पर बैठे है। इसी बीच प्रतिहारी का प्रवेश)

द्वारपाल महाराज! राजद्वार पर एक वृद्ध ब्राह्मण बहुत विलाप कर रहे है।

राम (आश्चर्य के साथ उठ पडते है) वृद्ध ब्राह्मण और मेरे द्वार पर विलाप कर रहे है! क्या क्या हुआ?

द्वारपाल (चुप रहता है, सर झुकाए हुए)

राम चुप क्यो हो द्वारपाल? क्या चाहते है ब्राह्मण देव?

द्वारपाल बहुत बुरा हुआ महाराज।

लक्ष्मण बहुत बुरा हुआ! क्या?

द्वारपाल मैं मैं नही सुना सकता।

राम तो जाओ, ब्राह्मण देव को सम्मान के साथ ले आओ।

(द्वारपाल चला जाता है। राम और लक्ष्मण थोडी देर मौन रहते हैं फिर लक्ष्मण राम की ओर देखते हुए–)

लक्ष्मण आर्य, आप तो ब्राह्मणो की कुशल मगल पूछने नगर मे प्रतिदिन जाते है। फिर फिर यह ब्राह्मण देव के विलाप का क्या कारण हो सकता है?

राम यही तो मैं सोच रहा हू लक्ष्मण! लगता है मुझसे कोई भयकर भूल हो गई है।

द्वारपाल के साथ ब्राह्मण का विलाप करते हुए प्रवेश। ब्राह्मण अपने बच्चे का सफेद वस्त्र में लिपटा हुआ शव हाथ में लिए हुए है।)

ब्राह्मण महाराज! बहुत बुरा हुआ। मेरा लडका मर गया। मेरा इकलौता लडका मर गया। अनर्थ हो गया महाराज।

राम क्या! आपका लडका मर गया? पिता के सामने पुत्र की मौत! मेरे राज्य मे तो यह असम्भव है।
(अपने बच्चे के मुह से कपडा हटा कर दिखाते हुए।)

ब्राह्मण असम्भव? यह देखिये मेरे चौदह वर्ष के बच्चे का शव। अब भी असम्भव?

लक्ष्मण आपने कोई पाप तो नही किया?

ब्राह्मण पाप? मैंने कोई पाप नही किया? मैं तो नगर के बच्चो को वेद पढाकर अपनी जीविका कमाता हू। वेद पढाना भी कोई पाप है महाराज?

लक्ष्मण लेकिन रामराज्य मे आज तक किसी पिता ने अपने पुत्र को अग्नि नही दी फिर यह आज कैसे हो गया!

ब्राह्मण महाराज, राजा के दुष्कर्मों का फल पापो का फल बेचारी जनता ही तो भोगती है। राजमहल का कूडा-कर्कट महल की खिडकी से जनता पर ही तो पडता है।

राम ओह! फिर राजा की निन्दा! एक बार निन्दा करने पर तो सीता को निकालना पडा। समझ मे नही आता आज किसको निकालना पडेगा?

ब्राह्मण चिंता मत कीजिए राजन्। आपके घर में से किसी का नहीं निकालना पड़ेगा। आज तो अयोध्या के राज-मार्ग से इस बाप के कंधों पर पुत्र का शव ही निकलेगा

लक्ष्मण नहीं, यह नहीं होगा

ब्राह्मण ऐसे जन-उदासीन राजा के राज्य में तो यही होगा। लेकिन मेरा बच्चा जिंदा नहीं हुआ तो मैं और इसकी मां भी राजद्वार पर रोते रोते प्राण दे देंगे, हमसे अपने बच्चे की मौत सहन नहीं होती।

राम नहीं, यह आपके पुत्र की मौत नहीं है। यह मेरे शासन की मौत है मेरे राजधर्म की मौत है।

ब्राह्मण महाराज, मैं शासन और राजधर्म कुछ नहीं जानता। मुझे तो मेरे बेटे के प्राण चाहिए।

लक्ष्मण आर्य, जब से आपके राजतिलक होने की बात चली थी तब से आप पीड़ा ही पीड़ा सहते जा रहे हैं। यह राजदण्ड कितना भारी है कि उठाये नहीं उठ रहा।

ब्राह्मण महाराज मेरा बच्चा

(नारदजी का प्रवेश, सब झुककर प्रणाम करते हैं। नारद 'आयुष्मान' कहते हैं।)

नारद राम, तुम्हारी भृकुटियों में फिर चिंता झलक रही है? क्या बात हुई लक्ष्मण?

ब्राह्मण मेरे बच्चे का शव देख रहे हैं महाराज?

नारद है! तुम्हारे बच्चे का शव है यह? ऐसा अनर्थ कैसे हो गया? (राम से) राम, इस बच्चे की मौत तो तुम्हारे राजमुकुट पर काला धब्बा है।

राम मुनिराज ! मैं अब इस राज्य के रथ को नही चला सकता। सीता को घर से निकालने के बाद मेरा चित्त स्थिर नही रह पाता। बार बार भूल कर जाता हू। आपने ही तो एक बार बताया था मुनिराज कि जब राजा का चित्त स्थिर नहीं रहे तो उसे सिहासन त्याग देना चाहिए।

नारद अभी इस बात को छोडो राजन, अभी तो तुम्हारे सामने पहला धर्म है इस बच्चे को जीवित करना।

लक्ष्मण मुनिराज, मुझे लगता है यमराज से कही गलती हो गई है। मैं उससे युद्ध करके इस बच्चे के प्राण वापिस ले आऊगा।

नारद नही लक्ष्मण, उतावले मत हो। (राम से) राम तुम्हारे राज्य मे कही न कही वर्ण और आश्रम धर्म की हानि हो रही है। सारे राज्य मे तलाश किया जाय कि कौन नागरिक अपने वर्ण को छोड कर दूसरे वर्ण मे प्रवेश ले रहा है। कौन नागरिक अपने आश्रमो का पालन नही कर रहा ?

राम जो आज्ञा महर्षि। मैं आज ही पता लगाता हू। लक्ष्मण जाओ, सारे राज्य मे दूतो को भेज दो। (नारद और राम के समक्ष लक्ष्मण नत मस्त होकर चले जाते हैं।)

नारद (ब्राह्मण से) और आप ब्राह्मण देव, अपने पुत्र के शव को तेल से भरे कडाह मे रख दीजिए, जिससे आपके पुत्र का शरीर नष्ट न होने पाये। आपका पुत्र अवश्य जीवित हो जायेगा।

ब्राह्मण (चरणों में गिर जाता है) धन्य हो मुनिराज, धन्य हो।

नारद नारायण नारायण !! (जाने लगते हैं)

[अन्धकार]

दूसरा दृश्य

(नेपथ्य से अनेक व्यक्तियों का स्वर— 'महाराजा राम की—जय !' 'महाराजा राम की— जय' !!)

(स्वर धीरे धीरे तीव्र होता हुआ क्रमश: कम होता जाता है। राम अपने कक्ष में बेचैन से घूम रहे हैं।)

राम नहीं नहीं यह राम की जय नहीं, यह तो राम की पराजय है, पराजय ! यह जनता सम-झती क्या नहीं, राम तो कई बार हार चुका है। (लक्ष्मण का शीघ्रता से प्रवेश)

लक्ष्मण आर्य, जनता आपके दर्शन करना चाहती है। उस ब्राह्मण का पुत्र जीवित हो गया है।

राम (व्यथित स्वर में) लक्ष्मण ! ब्राह्मण - पुत्र जीवित हो गया इसकी तो जनता को इतनी बड़ी खुशी ! और शम्बूक की मैंने हत्या करदी इसका जनता को बिल्कुल भी शोक नहीं ? वह शम्बूक भी तो आदमी ही था शूद्र हुआ तो क्या ? अयोध्या की सारी जनता राम के चेहरे पर क्या देखना चाहती है ? गर्भवती सीता को घर से बाहर निकालने का पहला धब्बा तो मिटा ही नहीं और संन्यासी

शम्बूक की हत्या का यह दूसरा धब्बा और चिपक गया ? लक्ष्मण यह जनता कैसी नासमझ है ? सीता का निर्वासन और शम्बूक की हत्या करने पर मेरे विजय-तिलक करना चाहती है ? नही यह विजय तिलक नही है यह तो राजा के चेहरे पर कलंक का तिलक है ।

लक्ष्मण महाराज, जनता की इच्छा तो आपके दर्शन करने की ही है ।

राम ओह ! जनता की इच्छा ! जनता की इच्छा ! ! इस जनता की इच्छाओ के आगे तो मै सारी मनुष्यता भूलकर जड पत्थर बनता जा रहा हू । यह जनता क्या नही समझना चाहती कि राम कोई यन्त्र नही है । वह भी एक मनुष्य ही है, जीता जागता मनुष्य । वह किसी का पति है तो किसी का पिता भी हो सकता है

लक्ष्मण महाराज

राम लक्ष्मण ! जनता से कह दो कि राम राम स्वस्थ नही है ।

(लक्ष्मण नत मस्तक होकर चला जाता है)

राम (थोडे विराम के बाद घूमते हुए) ओह ! यह राज सिंहासन कितनी मजबूत बेडी है मेरे लिए ! मै इस सिंहासन के नीचे कुचल पडा हू । जनता तुम्हारा यह राजा राम सिंहासन के नीचे कुचला पडा है । धीरे धीरे मेरे शरीर के अग गलते जा रहे है । देखो देखो मेरा यह बाया हाथ—यही

वह पापी हाथ है जिसने गर्भवती सीता को झटक कर अलग कर दिया था, और यह वही दाया हाथ है जिसने तपस्या करते हुए शूद्र शम्बूक की हत्या की है। इन हत्यारे हाथोवाला राम, यह राम इस पवित्र राजदण्ड को कसे उठा पायेगा ?

(पर्दे पर शम्बूक की छाया आती है)

शम्बूक (छाया जोर स ठहाका लगाती है) हैं हैं हैं शम्बूक की हत्या की कोई चिन्ता नही, और राजदण्ड उठाने की इतनी चिन्ता है ?

राम कौन ? कौन शम्बूक ? तुम मेरी तलवार से मर कर भी स्वग नही पहुच सके।

शम्बूक इतना घमण्ड है तुम्हारी तलवार पर राम ? तुम्हारी तलवार तो मेरे खून से सनकर कभी की भाटी हो चुकी है।

राम इसे तो मैं भी जानता हू। शूद्र की हत्या करके मुझे लगता है मैंने इस समाज के परो को ही काट दिया है। लेकिन लेकिन तुम्हे तो स्वग जाना ही था।

शम्बूक स्वग कैसे जाता ? ज्यो ही मैं स्वग के लिऐ उडने लगा मुझे ब्राह्मण, क्षत्रिय और वेश्या ने घेर लिया। उन्होने कहा—अगर तुम स्वग मे चले गये तो इस धरती पर हमारे मल को कौन उठायेगा ? अयोध्या की सडती नालियो को कौन साफ करेगा ?

लक्ष्मण का प्रवेश। लक्ष्मण छाया को देखकर स्तम्भित हो जात है।)

लक्ष्मण हैं छाया ! आर्य, यह किसकी छाया है ?

शम्बूक लक्ष्मण ! तुम इस काली छाया को नही पहचानते ! यह तुम्हारी छाया है, तुम्हारे राम की छाया है, तुम्हारी इस नगरी की छाया है तुम्हारे राजतन्त्र की छाया है ।

लक्ष्मण (राम से) महाराज

राम हा, लक्ष्मण शूद्र की हत्या करने के बाद, तुम यह समाज छाया ही रह गया है निर्जीव छाया । यह शम्बूक है

लक्ष्मण शम्बूक ! और एक शम्बूक की मौत से सारा राज्य निर्जीव छाया रह गया ?

शम्बूक लक्ष्मण यह केवल एक शम्बूक की ही हत्या नही है । एक निर्दोष व्यक्ति की हत्या है ? बोलो राम निर्दोष को दड देकर तुम्हारा यह राजदण्ड कितने दिन बच पायेगा ?

लक्ष्मण राजदण्ड पर आक्षेप करनेवाले शम्बूक, तुमने मेरे बाण का नुकीलापन नही देखा ?

राम लक्ष्मण तुम समझते क्यो नही ?

शम्बूक लक्ष्मण इसको आज नही समझ सकता राम । तुमने जो मेरी हत्या की है उसके खून की बदबू से तुम्हारी जनता सदियो तक सडती रहेगी और मेरे खून का कीचड हजारो वर्षो तक नही सूख पायेगा ।

लक्ष्मण उस कीचड को मैं एक बाण से सुखा दूगा ।

शम्बूक शूद्र के खून को तुम नही सुखा सकते। ज्यो ही तुम वाण मारोगे वह उछल कर तुम्हारे ही शरीर पर आ गिरेगा और तुम कोढी हो जाओगे। तुम्हारा राम कोढी हो जायेगा, तुम्हारा समाज कोढी हो जायेगा और तुम्हारा यह कोढ बढता ही जायेगा बढता ही जायेगा बढता ही जायेगा

राम ओह यह तो तपस्वी शूद्र का शाप है। लक्ष्मण! मै तुम और यह समाज अब इस शाप से बच नही सकते। ओह! यह क्या हो गया था मुझे? मेरी बुद्धि को लकवा कसे मार गया था? उस शूद्र के प्राण लेने से तो अच्छा था कि मैं अपने प्राण देकर ब्राह्मण पुत्र को जीवित करता। कम से कम जनता के सामने एक आदर्श तो रह जाता कि एक ब्राह्मण पुत्र के लिए रघुवंश के राजा राम ने अपने प्राणो को भी त्याग दिया था।

लक्ष्मण लगता है आप भावना मे बह गये है आर्य। रावण ने राजनीति सिखाते समय मुझे बताया था कि राजनीति भावनाओ पर नही चलती, उसका रास्ता तो तलवार की धार पर है।

राम हू तलवार की धार पर! लेकिन तलवार की धार पर चलनेवाली उस राजनीति का क्या भरोसा? पता नही वह तलवार की धार को कब जनता की तरफ मोड दे।

लक्ष्मण तब तलवार की राजनीति के विरुद्ध जनता को विद्रोह कर देना चाहिए।

राम हू ! राम की जनता और विद्रोह करेगी !
लक्ष्मण अयोध्या की जनता विद्रोह करना कहा जानती है ! अयोध्या की जनता ने अन्याय से टक्कर लेना सीखा ही कब है ? रावण को भी तो हम ने सुग्रीव की सेना से ही पराजित किया था। लक्ष्मण अयोध्या की जनता की असलियत देखना चाहते हो तो उधर देखो—उधर उधर
(राम सामने दर्शकों की ओर दूर ऊपर आकाश म दिखाता है।)

लक्ष्मण उधर ! यह क्या ! यह क्या देख रहा हू म ! वहा तो शूद्रो को गावो से बाहर निकाला जा रहा है, उन्ह अछूत समझा जा रहा है ! यह जनता पागल हो गई है क्या !

राम (मच के दाहिनी ओर दिखाते हुए) अब इधर देखा

लक्ष्मण क्या ! ब्राह्मण, क्षत्रिय और वश्य कल तक शूद्रो के साथ मिलजुलकर काम कर रहे थे। अब वे शूद्रो को कुआ और मन्दिरो पर चढने भी नही देते !

राम (मच के बाई ओर दिखाते हुए) और इधर भी कुछ दिखता है लक्ष्मण ?

लक्ष्मण (गौर से देखते हुए) आर्य, सब साफ साफ दिखता है। पर मेरी आखें यह देख क्या रही हैं ! शूद्र अपने धम को छोडकर दूसरे धर्मों को अपनाते जा रह हैं। लेकिन आर्य इस तरह तो यह समाज खोखला हो जायेगा।

राम (मच के पीछेवाले पर्दे पर दिखाते हुए) और इधर क्या दिखाता है ?

(सर पर परात रखे हाथ मे भाड़ लिए कुछ स्त्री पुरुषो की छाया पर्दे पर दिखाई पडती है और उन्ही के साथ शम्बूक की छाया नजर आती है।)

लक्ष्मण इधर ! इधर ये शूद्र अपने सिर पर ओह एक आदमी के मैले को दूसरा आदमी अपने सर पर ढो रहा है। और उन्ही मे वह रही शम्बूक की छाया। (शम्बूक की छाया नजर आती है) शम्बूक ! शम्बूक !! लौट जाओ शम्बूक, हम तुम्हे मन्त्रो से जीवित कर देंगे।

शम्बूक अब तो बहुत देर हो चुकी है लक्ष्मण। इस जगल मे अब तो मेरे शरीर को भेडिये और गिद्ध खा भी चुके है। देखो वे मेरी सूखी हड्डिया आपस मे टकराकर जगल मे आग लगा चुकी है और इस आग मे तुम्हारे ऋषियो के आश्रम, क्षत्रियो का पौरुष और वैश्यो का व्यापार सब धू-धू जल रहे हैं।

लक्ष्मण ओह ! यह कैसा जहरीला धुआ है ! इस धुएँ से तो मेरा दम घुटने लगा है। मनुष्य की हड्डियो की जलन की दुर्गन्ध मुझ से बर्दाश्त नही होती।

राम शम्बूक, इस धुआ को समेट लो। यह तुम्हारा हत्यारा राजा तुम से क्षमा चाहता है। इस हत्यारे राम को क्षमा करो। ओ देवताओ ! शम्बूक की

हत्या पर बरसाये गये तुम्हारे फूल मुझे तीर की तरह चुभ रहे हैं। मुझे ऐसा विवेक दो कि अब किसी और शम्बूक पर मेरी तलवार न उठ पाये

लक्ष्मण देवताओ, मुझे यह ज्ञान दो कि मेरा धनुष शम्बूक की रक्षा के लिए कवच बन जाये

राम शम्बूक की यह हत्या मेरी तलवार से किसी निर्दोष की अन्तिम हत्या रहे

शम्बूक राम जब तक शूद्र दूसरे मनुष्य का मल अपने सर पर ढोता रहेगा, तब तक तुम्हारे समाज की आग बुझ नही सकेगी। तुम्हारा यह समाज, यह राज-धर्म ये सब जिन्दा जलते रहेंगे जिन्दा जलते रहेंगे ।

(छाया आगे बढती हुई विलीन हो जाती है)

[अन्धकार]

रोटी का जाल

पात्र	समर	बेरोज़गार युवक
	प्यारेलाल	सनकी प्रेमी
	केदारनाथ	एक किशोर
	नाटककार	

समय झुटपुटी सध्या स्थान पार्क की बच

(समर बैंच पर बठा हुआ 'रोजगार समाचार' पढ रहा है।)

समर क्लर्क चाहिए! (उत्सुकता के साथ) बी ए बी काम या बी एस सी हो ठीक है। हिन्दी और अग्रेजी की टाइप जानता हो चलो यह भी ठीक है। और किसी कार्यालय मे काम करने का पाच वर्ष का अनुभव हो। (बिदककर) हू! अनुभव कहा से लाये? यहा तो बेरोजगारी का अनुभव है, वह तो पाँच साल की बजाय छ साल का ले लो। स्साले झूठे! अपने किसी भाई-भतीजे को लेना होगा। लेलो, फिर अखबारो मे विज्ञापन छापकर दुनिया को उल्लू बनाने की क्या जरूरत है? हू।

(अखबार फेंक देता है। प्यारेलाल का किसी की प्रतीक्षा की मुद्रा के साथ प्रवेश। समर को बैंच पर बैठा देखकर सुनदा के भ्रम मे प्यारेलाल खुशी से उछल पडता है।)

प्यारेलाल हाय! सुनन्दा !

(प्यारेलाल समर को पहचान कर ठिठक जाता है। उत्सुकता और झुझलाहट के साथ पूछता है—)

प्यारेलाल तुम यहा और इस वक्त क्यो बठे हो?

समर (समर परेशान-सा रहता है।)

प्यारेलाल सुना नही तुमने ?

समर (चुप।)

प्यारेलाल (तीव्र स्वर में) मैंने कहा, सुना नहीं तुमने ?

समर (झुंझलाकर) सुन लिया।

प्यारेलाल क्या ?

समर कि मैं यहां और इस वक्त क्या बैठा हूं ?

प्यारे जब तुमने मेरी बात को इतना गौर से सुना है, तो जवाब क्यों नहीं देते ?

समर (झुंझलाहट) क्यों ? जवाब देना क्या ज़रूरी है ? यह जगह और यह वक्त मैंने कोई तुम्हारे गिरवी रख रखा है ?

प्यारे बात को बेबात बढ़ाओ मत। (शक के साथ) मुझे लगता है तुम किसी की इंतजार कर रहे हो।

समर (चुप।)

प्यारे (शंका और व्यग्रता) तुम किसी की इंतजार कर रहे हो ?

समर (चुप।)

प्यारे सुनन्दा की ना ?

समर (चुप।)

प्यारे मैं समझ गया तुम सुनन्दा की इंतज़ार कर रहे हो।

समर (झुंझलाहट) जहन्नुम में गई सुनन्दा।

प्यारे (आश्चर्य) जहन्नुम में गई सुनन्दा ! वो इस वक्त वहां कैसे जा सकती है ! उसने तो मुझे यहां का टाइम दिया है। (समझते हुए) जहन्नुम में गई ! ए मिस्टर। जरा तमीज से बात कीजिए। आप मेरी सुनन्दा के बारे में बात कर रहे हैं।

समर (ग्राक्रोश) मै किसी सुनन्दा वुनन्दा की वात नही कर रहा। न करना चाहता हू, न करूगा।

प्यारे (चिढाते के स्वर म) तो सुनन्दा के नाम से इतवी मिच लग गई तुम्हे ? तुम जरूर सुनन्दा को जानते हो।

समर (चुप।)

प्यारे मैं कहता हू तुम सुनन्दा को जानते हो और इस वक्त उसकी ही इन्तजार कर रहे हो।

समर मैं किस-किस को जानता हू तुमको इससे मतलव ?

प्यारे बिलकुल मतलव। तुम मेरी सुनन्दा को जानते हो। तुम उससे चोरो-छिपे मिलते हो। तुमने उसके साथ वेसिर पैर की वात की होगी। उसको पिक्चर दिखाई होगी, गोलगप्पे खिलाये होगे

समर (तीव्र झुझलाहट) ए गोलगप्पू ! मेरा सिर मत खाओ। भगवान के लिए मुझ अकेला छोड दो इस समय। तुम जाओ यहा से, फूटो।

प्यारे मैं फूटनेवाला नही। मैं सव समझ गया। तुम यही तो चाहते हो न कि मैं तो यहा से चला जाऊ और तुम यहा सुनन्दा से मेरा मतलव तुम और सुनन्दा सुनन्दा और तुम यहा अकेले मे (जिद्द के साथ) मैं नही जाने का यहा से। आने दो सुनन्दा को। आज दो टूक वात करूगा। आखिर यह माजरा क्या है ? (घबडाहट के साथ) वह तुम्हे तुम्हे प्यार करती है या (पुलक के साथ) फिर हमे प्यार करती है ?

(बड़बड़ाहट) और वह तुम्हें प्यार करती है तो ठीक है ठीक है (आक्रोश) लेकिन वह तुम्हें क्यों प्यार करती है ? (थोड़ा मौन-फिर अवरोही स्वर में) वैसे तुम मुझे सच-सच बताओगे तो नहीं, फिर भी पूछे बिना मन नहीं मानता। तुम्हें सनन्दा की कसम, सच सच बताओ, तुम यहां सुनन्दा से कितनी बार मिल चुके हो ?

समर (झुंझलाहट) ओफ हो। मैं तो यहां आया ही पहली बार हूं।

प्यारे तो ठीक है, और कहीं मिले होगे ? होटल में, पार्क में, सिनेमा में या फिर कहीं

समर (झुंझलाहट) मैं कहीं भी नहीं मिला।

प्यारे तो ठीक है तुम नहीं मिले तो वह मिली होगी तुमसे ? मुझे शक तो पहले से ही था कि यह सुनन्दा की बच्ची जरूर डबल डबल प्यार करती है।

समर ओफ हो तुम आदमी हो या गाद ?

प्यारे (मुंह बिदकाकर नकल करते हुए) हुं आदमी हो या गोद। क्या मैं तीसरी चीज नहीं हो सकता, सुनन्दा का मजनूं !

समर ओ सुनन्दा के मजनूं साहब

प्यारे देखो झूठ-मूठ बनाओ मत। सुनन्दा के असली मजनूं तो तुम ही हो। हम तो यों ही एक्स्ट्रा में हैं..

समर ओफ हो ! मेरी एक बात सुनकर मुझे मुक्ति दोगे ?

प्यारे कौन सी बात ?

समर यही कि मैं तुम्हारी सुनन्दा देवी को नही जानता।

प्यारे तो फिर तुम यहा रोज क्यो आते हो ?

समर मैं यहा रोज नही आता, आज ही पहली बार आया हू ।

प्यारे किस की इन्तजार मे ?

समर तुमको इससे क्या मतलब ? मैं सुनन्दा देवी की इन्तजार मे

प्यारे तो फिर दुनिया भर की झूठ बोलने की क्या जरूरत थी ? ठीक है, करो सुनन्दा का इन्तजार। हम भी करते हैं तुम भी करो। लेकिन आज यह फैसला होकर रहेगा कि

समर (तीव्र झुझलाहट) तुम आदमी बडे पोचू हो। बात पूरी तरह सुना तो करो। (थोडा रुककर तेज स्वर म) में सुनन्दा को बिल्कुल नही जानता। मैं सुनन्दा से कभी नही मिला। सुनन्दा भी मुझसे कभी नही मिली ? मैं, आज, यहा, इस वक्त, सुनन्दा का इन्तजार नही कर रहा। मैं यहा पहली बार आया हू। बस ? और कुछ जानना है तुम्हे ?

प्यारे (दो क्षण मौन) तो फिर यहा बैठे क्यो हो ?
(इसी बीच केदारनाथ का प्रवेश। किसी को ढूढते हुए, अन्त म समर से पूछता है।)

केदार सुनिए

समर (क्रोध के साथ अक्खड आवाज मे) आप भी सुनाइये।

केदार आप सुनन्दाजी का इन्तजार कर रहे हैं ना ? वे आज नही आयगी। उनके यहा मेहमान आये है।

समर यह आज सबका दिमाग एक साथ कैसे खराब हो गया।

केदार (स्वर म कडुवाहट लाते हुए) इसमे दिमाग खराब होने की क्या बात है ? सीधा सी बात है, सुनन्दाजी का इन्तजार न करे। क्या किसी के मेहमान नही आ सकते ? और मेहमान के आने पर कोई इन आलतू फालतू कामो के लिए कसे आ सकता है!

समर लेकिन मै पूछता हू, यह बच सुनन्दा के प्रेमियो के लिए ही रिजर्व है क्या ? इस पर और कोई नही बैठ सकता ?

प्यारे आप मुझसे बात करो ना ? अपना भेजा इस पत्थर से क्यो तोड रहे हो ?

समर हा हा उस मूसलचन्द से ही तोडो (और वह उठा कर चला जाता है)

प्यारे आइये मैं ही सुनन्दा की इन्तजार कर रहा हू।

केदार आप ही का नाम प्यारे है ना ?

प्यारे प्यारे नही, प्यारेलाल मजनू कहो, प्यारे लाल मजनू

केदार (कडे स्वर मे) उन्होने तो सिर्फ प्यारे नाम ही बताया है।

प्यार — ठीक हे ठीक है नाम तो हमारा प्यारेलाल ही है। लेकिन सुनन्दा ने प्यार मे सिर्फ प्यारे कह दिया होगा। हैं हे है प्यार मे नाम जरा छोटा हो जाता है ना? जैसे अगर आप का नाम लादूराम है तो बाहर तो आप होगे लादूराम और घर मे होगे आप लद्दू। वगैरह वगैरह

केदार — (कड़ुवेपन के साथ) नही मेरा नाम लादूराम नही, केदारनाथ है।

प्यारे — हा ठीक है अजी नाम मे क्या फर्क पडता है? अब मानलो, आप का नाम केदारनाथ है

केदार — मानलो कैसे, में हू ही केदारनाथ।

प्यारे — हा ठीक है, केदारनाथ समझ लीजिए।

केदार — अजी समझ कैसे लीजिए जब मेरा नाम है ही केदारनाथ।

प्यारे — ठीक है, आप का नाम केदारनाथ है। है ना?

केदार — बिल्कुल।

प्यारे — तो बाहर तो हुए आप केदारनाथ और घर मे आप होगे कद्दू, केदारनाथ से कद्दू।

केदार — (कडुवे मुह के साथ) कद्दू? क्या मैं कद्दू हू? नही, मैं कद्दू नही हू। मैं कद्दू नही हू। वाह साहब, आप भी

प्यारे — कमाल है! सीधा सा गणित का सवाल है — चूकि प्यारेलाल मजनू से प्यारे और लादूराम से लद्दू, इसलिए केदारनाथ से कद्दू। (बात बदलते हुए) हा तो वह सुनन्दावाली बात

केदार (आक्रोशपूर्वक कड़कती आवाज में) उन्होंने कहलाया है कि उनके घर पर मेहमान आए है, वे आज नही आ सकती।

प्यारे (अफसोस के साथ) है। वह आज नही आ सकती! बिल्कुल भी नही आ सकती?

केदार कमाल है! मेहमान आए है तो कैसे आ सकती हैं!

प्यारे (समझते हुए) तो यह रहा कि वह नही आएगी। सुनो, तुम सुनन्दा को जानते हो ना?

केदार (सामान्य स्वर मे) बहुत अच्छी तरह। हमारे पडोस मे ही तो रहती है।

प्यारे है! सुनन्दा आपके पडोस मे रहती है? यानी बिल्कुल पडोस मे? (सनकी मुद्रा मे) है है हैं कितनी अच्छी बात है, सुनन्दा आपके पडोस मे रहती है, हे हे है कितनी अच्छी बात है सुनन्दा आपके पडोस मे रहती है, है हैं हैं कितनी अच्छी बात है सुनन्दा आपके पडोस मे रहती है

केदार बिल्कुल (नीचे जमीन की ओर पास पास घर बताने का हाथ से इशारा करते हुए) यह घर हमारा और यह सुनन्दा का।

प्यारे (उसी सनक मे दोनो हाथो की तर्जनियो से नीचे जमीन की ओर घरो का इशारा करते हुए केदारनाथ उसके इशारो को गौर से देखते हुए) हं है हं कितनी अच्छी बात है यह घर तुम्हारा और यह

सुनन्दा का। कितनी अच्छी बात है (अफसोस की सास फेंकते हुए) लेकिन हमारा घर ? हमारा घर तो बहुत दूर है (बात बदलते हुए) चलो फिर सुनन्दावाली बात। तो सचमुच उसके घर मेहमान आए हैं ?

केदार हा उनके बम्बईवाले भाई साहब आये है।

प्यारे कही घिस्सा तो नही मार रहे हो ?

केदार क्या ?

प्यारे इसमे भी कोई चक्कर तो नही है ?

केदार (खीझकर) आप उनके घर चलकर देख लीजिए।

प्यारे (हडबडाकर) नही नही नही। घर-वर तो नही जायेंगे। ठीक हे, समझ गया म, उसके भाई साहब आए हे वहावाले कहावाले ?

केदार बम्बईवाले।

प्यारे हा-हा, बम्बईवाले। आए होगे, आए होगे। इसलिए नही आ सकती वह। कहा होगा कि यहा प्यारेलाल मजनू मिलगे ?

केदार नही प्यारे मिलेंगे।

प्यारे हा-हा, प्यारे मिलगे। और सुनन्दा ने कहा होगा कि उन्ह यह जरूर कह देना कि मैं आज नही आ सकती। नही, नही, कहा होगा। जरूर कहा होगा। अच्छा आपको बहुत बहुत धन्यवाद। (केदारनाथ जाने लगता है। प्यारेलाल कुछ सोचते हुए केदारनाथ को पुन बुलाता है।)

प्यारे एक बात और

केदार (एक कर नजदीक आते हुए) क्या ?

प्यारे कल-वल के बारे मे भी कुछ ?

केदार (रूखे स्वर म) जितना कहा उतना कह दिया आपको ।

प्यारे है है है कितनी अच्छी बात है, जितना कहा, उतना कह दिया तुमने । हैं हैं है किननी अच्छी बात है जितना कहा, उतना कह दिया तुमने

(केदारनाथ चला जाता है । इसी बीच समर का प्रवेश । प्यारेलाल को देखकर उसका माथा ठनक जाता है, फिर भी वह बैंच पर जाकर बठ जाता है ।

प्यारे माफ कीजिए भाईसाहब ! आप पर बेबात मे शक किया । दरअसल अभी प्यार की जरा मेरा मतलब बिगनिंग है ना । थोडा यो समझो कि (अपने दिल की ओर इशारा करते हुए) यह दिल है ना ? मेरा मतलब दिल यानी यह मेरा दिल, बिना बात ही (अपने हाथ के पजे को सिकोडने और फलाने का अभिनय करते हुए) पपिंग करने लग जाता है । मेरा मतलब आप आप - समझ गये होंगे ?

समर (झुझलाहट के साथ) बहुत अच्छी तरह समझ गया । बोल कर बताऊ ? दरअसल आपके प्यार की बिगनिंग है ना । थोडा यो समझो कि आपका दिल है ना ? आपका मतलब आपका यह दिल, बिना बात ही पपिंग करने लग जाता है । मैं समझ गया ना ?

प्यारे हैं हैं हैं कितनी अच्छी बात है, आप समझ गये। कितनी अच्छी बात है आप समझ गये। आप कितने समझदार है। मेरा मतलब आप कितने समझदार हैं। लेकिन आप तो फिर आ गये यहा ? घर नही चलेंगे ?

समर नही।

प्यारे अरे इतनी देर हो गई और घर नही चलेंगे ?

समर (बिगडकर) देखो चिपकू महाराज। आपका आज का सुनन्दा-काण्ड समाप्त हुआ। हुआ ना ?

प्यारे हुआ।

समर तो अब आप अपने घर पधारिये और मुझे यही छोड दीजिए।

प्यारे ठीक है ठीक है। हम तो जाते ही है। अच्छा, नमस्कार। (हाथ हिलाते हुए जाने लगता है) फिर मिलेंगे।

समर (फुसफुसाते हुए) फिर मिलेंगे ! (बच से उठकर सामान्य स्वर मे) एक मिनट मजनू जी इधर आइये।

प्यारे (मुस्कराकर) हैं है आपने मुझे इतने प्यार से बुलाया ! कहिए।

समर (बिगडकर) आप मेहरबानी करके मुझ से फिर नही मिलेंगे। कहीं नही कभी नही।

प्यारे ठीक है, ठीक है। इसमे जाते हुए को टोकने की क्या जरूरत थी ? यह बात तो आप अगली बार मिलने पर भी कह सकते थे। आ के सी यू

(प्यारेलाल चला जाता है और समर माया टाल कर बा न मे एक कोने पर बैठ जाता है। इसी बीच नाटककार का प्रवेश। इधर उधर देखकर वह भी एक कोने पर आकर बैठ जाता है।)

समर (नाटककार की ओर न देखते हुए) आप सुनन्दा की इंतजार कर रहे हैं ना ?

नाटककार (चुप।)

समर (शीघ्रता के साथ बोल जाता है) मैंने कहा, आप सुनन्दा की इंतजार कर रहे हैं ना ? आज वह नही आएगी। उसके घर मेहमान आये हैं। उसके बम्बईवाले भाई साहब। उसने कहलाया है कि कोई भी उसकी इंतजार न करे। आप क्या बेकार मे टाइम वेस्ट कर रहे हैं। घर जाइये ना।

नाटककार (समझने की मुद्रा मे समर की ओर देखते हुए)

समर सुनन्दा ने इतना ही कहलवाया है। कल वल के बारे मे कुछ नही कहा।

नाटककार क्या करते है आप ?

समर (इस प्रश्न से सहम जाता है और अपना रुख दूसरी तरफ फेर लेता है।)

नाटककार आजकल क्या करते हैं आप ?

समर (चुप।)

नाटककार कमाल है! अभी तो आप बोलने मे एक्सप्रेस चला रहे थे, अब आपकी जबान ही बन्द हो गई! मैं पूछता हू क्या करते हैं आप ?

समर (खड़ा होकर बौखलाहट के साथ) आपको इसके अलावा और कोई सवाल नही सूझता ? मसलन, तुम्हारा नाम क्या है ? कहा रहते हैं ? कितने भाई-बहिन है ? कौन सी डिग्री पास की है ? या आजकल कौन सी पिक्चर चल रही है ? कॉलेज के बाहर सर्दी मे ठिठुरता कौन मर गया ? रेल से कटकर किसने आत्महत्या करली ? या आज कल इस भीड भरे शहर मे सन्नाटा क्यो है ? ढेर सारे तो (बीच म ही उठ चुका होता है) सवाल हैं। और मैं इन सबका जवाब दे सकता हू।

नाटककार (ठहाका मार कर हसता है) तुम आदमी बडे मजेदार हो तुम मेरे काम के आदमी हो सक्ते हो।

समर (आश्चर्य) मैं और काम का आदमी ? आप कोई और हल्का-फुल्का मजाक नही कर सक्ते।

नाटककार मजाक नही, सीरियसली। तुम मेरे लिए काम के आदमी हो।

समर माफ कीजिए आप गलत समझ बैठे हैं मुझे ? मैं न तो सुनन्दा को जानता हू न उसका घर ही। मैं तो उसके पास आपका कोई प्रेम-पत्र भी नही पहुचा सकता।

नाटककार मैं नाटककार हू। नाटक डाइरेक्ट भी करता हूं। दरअसल मुझे एक ऐसे करेक्टर की जरूरत है जो थोडा तेज़ तर्रार फर्राटेदार और जिन्दादिल हो। और तुम ऐसे हो। वैसे तो तुम अपने काम मे

विजी होगे, लेकिन सुवह शाम का भी वक्त दे सको तो मैं एक नाटक खेल सकता हू ।

समर — विजी होने की बात तो ऐसी है कि

नाटककार — मैं समझ सकता हू तुम्हारी मजबूरी । लेकिन रोल में फिट होने पर पाच सौ तक मिल सकते हैं सलेक्शन होने पर ।

समर — (आश्चर्य से) पाच सौ ! रुपये क्या !

नाटककार — (स्वीकृति म गरदन हिलाता है ।)

समर — (उत्सुकता के साथ) रोल कसा है ?

नाटककार — मुझे विश्वास है, तुम कर सकते हो ।

समर — थोडा आइडिया हो तो

नाटककार — समझाता हू । -- सिचुवेशन यह है कि नायक और नायिका के प्यार की शुरुआत है । शुरू मे नायिका झिझकती है, अन्त मे शादी कर लेती है । लेकिन इसमे नायक नायिका को जिस तरह फुसलाता है, वह वहुत इम्पोर्टेण्ट है ।

समर — जसे ?

नाटककार — मैं भी यही चाहता था कि तुम थोडी ट्रायल दे दो तो फिर वात पक्की हो जाये ।

समर — (अधीरता से) मैं तैयार हू ।

नाटककार — मान लीजिए कि तुम नायक हो और मैं नायिका हू । नायिका पीठ किए खडी है और आपको उसकी तारीफ करके उसे फुसलाना है । डायलॉग यह है कि— अनीता यहा वातें करेंगे तो सब

देखेंगे। चलो नीरोज मे कॉफी पीयेंगे और वही बाते करेंगे। ढेर सारी बाते।" यह स्टाट।

(वह समर को पीठ किये खडा हो जाता है)

समर (अक्खड आवाज मे) अनीता, यहा बाते करेंगे तो सब देखेंगे। चलो नीरोज मे कॉफी पीयेंगे और वही बाते करेंगे। ढेर सारी बात।

(नापसन्दगी पर मुह बिदकाने लगता है)

नाटककार नो नो। ऐसा लट्ठ डायलाग बोलोगे तो अनीता तुम से प्यार करेगी? थोडा प्रेमी हीरो के अन्दाज मे बोलिए। (नाटकीय अन्दाज म बोलने और समझने लगता है) बोलने मे थोडा प्यार हो, आग्रह हो उमग हो या समझो कि मीठे मीठे तुम्हे फुसलाना है। यस अगेन। (और पीठ फेर लेता है।)

समर (मधुर स्वर मे) अनीता, यहा बातें करेंगे तो सब लोग देखेंगे। चलो नीरोज मे कॉफी पीयेंगे और वही बाते करेंगे। ढेर सारी बाते। (फिर अचानक अक्खड स्वर मे) लेकिन अनीता कॉफी के पैसे तुम्हे देने होगे?

नाटककार (समर की तरफ अपना माथा ठोकते हुए मुडता है) ओफ हो। यह अपनी तरफ से क्या डायलॉग जोडे जा रहे हो? कॉफी के पसे सुनन्दा को क्यो देने होगे?

समर तो म कहा से दूगा? मुझे नही करनी किसी अनीता वनीता से बाते।

नाटककार कमाल है यह तो नाटक है। इसमें पैसे-वैसे देने की जरूरत ही कहा पडती है ? यस नैक्स्ट। तुमसे और खुशामद कराने के लिए अनीता अभी भी गाल फुलाकर खडी रहती है। तुम्हे उसे फिर मनाना है बोलो कैसे मनाओगे ? स्टाट (नाटककार गाल फलाकर पीठ किए खडा हो जाता है)

समर (अक्खड स्वर म) ए अनीता की बच्ची। ये बाटी जैसे गाल फुलाने की जरूरत नही है। नीरोज चलना हो तो चलो, वरना अपने घर फूटो।

नाटककार (परेशानी के साथ) ओ मैन ! फिर वही लट्ठमार बात ! अरे ऐसे तो अनीता नीरोज चलने के बजाय अपने घर चली जायेगी।

समर · घर चली जायेगी तो चली जाए। यह भी कोई बात है। फोक्ट की कॉफी पीए, ऊपर से बाटी जैसे गाल और फुलाए।

नाटककार तुम्हे उसके गाल बाटी और रोटी जसे ही दिखते हैं क्या ? कुछ और नही कह सकते (सोचते हुए) जैसे जैसे— (कोमल स्वर म) डार्लिंग, गुलाब की कली जैसे तुम्हारे गुलाबी गुलाबी गाल, देखो अब खिलकर कैसे फूल जैसे महक गये हैं। यस ट्राई ट्राई

समर (कोमल स्वर म) डार्लिंग, गुलाब की कली जसे तुम्हारे ये गुलाबी-गुलाबी गाल (झुंझलाहट के साथ) नही, मैं ऐसे नही कह सकता। जिसे महसूस नही करता, उसे कह भी नही सकता।

नाटककार (समर को फुसलाने के अन्दाज म) लेकिन तुम बहुत अच्छी एक्टिंग कर सकते हो । कमाल है ! तुम्हारी आवाज, आवाज की खनक, बोलने का अन्दाज हाथो को ये भगिमाए, आखा के जीव त एक्सप्रेशन सब कमाल ह ! तुम बहुत अच्छी एक्टिंग कर सकते हा । बहुत अच्छी । तुम हीरो बन सकते हो । नाटको मे ही नही फिल्मो मे भी । तुम बम्बई मे फिल्मी हीरा बन सकते हो ।

समर (जसे सब कुछ नकारता हुआ) हू आपको कुछ पता भी है बम्बई का किराया कितना है ?

नाटककार (बात बदलते हुए) खैर, छोडो इस बात को । यस, अब प्यार आगे बढता है । तुम अनीता के साथ नीरोज मे कॉफी पी रहे हो । अनीता या ही अपनी नाजुक उगलियो से कप का हैण्डिल पकडती है, तुम्हे उसकी उगलियो की तारीफ करनी है । यस गो ऑन

समर (कोमल स्वर म और उगलियो की तारीफ करने मे डूबते हुए) अनीता तुम्हारी ये उगलिया इतनी पतली, कोमल और नाजुक है, इतनी नाजुक है कि (एकदम चेहरे पर बौखलाहट के भाव लाते हुए अक्खड आवाज मे) कि तुम तो इनसे आटा भी नही गोद सकती ।

नाटककार ओफ हो ! फिर वही आटा और रोटी की बात ! आखिर हो क्या गया है तुम्ह ? अच्छे खासे यग हो । फिर इस महकती जवानी मे ये झुनसती

लपटें वहा से निकलती हैं ? मैंन जीम्रा जोम्रो। दिल खोलकर जीम्रो। जिन्दगी का नाम है जीना-जीना, बस सैर अब अनीता कहती है कि इन उगलियो को जिस दिन अपने हाथा म लेकर शादी करोगे उस दिन तुम्हारे प्यार का सच्चा जानू गी।

समर (चिढ़कर) यह शादी के चक्कर किसी और को पिलाना। मैं शादी नही करूगा। तमको कॉफी पीनी है तो पीम्रो वरना खिसक जाम्रो। खुद की जिन्दगी ही स्साली गले मे घण्टी की तरह लटक रही है, यह दूसरी घण्टी और ? ना बाबा ना। म इस जजाल मे फसनेवाला नहीं

नाटककार यार, तुम आदमी हो या पतझड के नौकर ! तुम किसी को लिफ्ट हो नही मारना चाहते क्या ?

समर मुझ मे इस तरह के प्लॉट का अभिनय नही हो सकता।

नाटककार लेकिन अभिनय तो वैसा ही करना होगा जैसी कहानी है।

समर तो कहानी बदल क्यो नही देते। इन ढोगी-झूठी कहानियो को बदल क्यो नही देते। किसको फुसत है प्यार करने की ? किसको सहूलियत है प्यार करने की ?

नाटककार लेकिन जिन्दगी मे प्यार का भी तो बहुत बडा रोल होता है।

समर होता है, जिनकी आतो मे रोटी पहुची होती है। आप उस आदमी की जिन्दगी पर नाटक क्यो नही

समर (हिंकारते हुए) आपवाला नाटक भी स्साला कोई नाटक है ! जिन्दगी की असली समस्या को ताक मे रखकर मैं उसमे सिर्फ कार्टून बनता फिरू ? आपको मुझसे अभिनय कराना है तो मेरी वाता की एक बात आप अपने नाटक में जिन्दगी लिखो–जिन्दगी । नाटक को जिन्दगी से टकराने दो ।

नाटककार (समझने की मुद्रा म) नाटक को जिन्दगी से टकराने दो

समर बस, नाटक को जिन्दगी से टकराने दो ।

नाटककार (सोचकर निर्णय लेते हुए) तो ठीक है । मैं किसी नये नाटक के साथ तुमसे फिर मिलूंगा । इसी बेंच पर । (जाने लगता है)

समर मैं आपका इन्तजार करूंगा । इसी बेंच पर ।

[अन्धकार]

कल का नाटक

पात्र

क

ख

ग

घ

ट

मुनादीवाला

सन्नाटा

(आज से सौ दो सौ पांच सौ हजार वर्ष बाद की वह स्थिति जब युद्ध की विभीषिका से धरती की सभ्यता खण्डहरो मे बदल चुकी हो और तब बचा हुआ एक व्यक्ति—सिर्फ एक व्यक्ति—अपने अतीत के बारे म चिन्तन कर रहा हो। उस कल के आदमी की विभिन्न मन स्थितियो के प्रतीक रूप पात्र एक-क, एक ख, एक ग, एक घ और एक ङ एक चितनशील मानस का अभिनय करेंगे। पात्रो के अभिनय मे सोच की मुद्रा और सवादो म परस्पर सम्बद्धता और त्वरा अपेक्षित है।)

(क, ख, ग घ, और ङ मे परस्पर सूत्रबद्धता प्रस्तुत करने हेतु सभी को कमर मे एक लम्बे रस्से द्वारा बाधकर क्रमश मच पर प्रस्तुत किया जा सकता है। क अफसोस की मुद्रा म रस्से का एक छोर कमर म बाधे हुए धीरे धीरे मच पर आने लगता है।)

क ओह! यह क्या हो गया था उन्हे? (धीरे धीरे मच के एक छोर से बीच मे आने लगता है—सवाद के साथ साथ) हजारो वर्षो के पसीने से बनी यह आदमी की दुनिया एक बम से पल भर मे बबाद हो गई? आदमी से खचाखच भरी इस धरती पर अब आदमी का एक खोज भी नही मिलता? मेरा नाक आदमी की उस गध के लिए तडप रहा है

ख (दस पन्द्रह फीट की लम्बाई के बाद ख भी कमर मे क के रस्से से बधे हुए क्रमश धीरे धीरे मच पर सोच की मुद्रा म प्रवेश करता है।) नही मैं जिसके लिए तडप रहा हू वह आदमी नही था वह

आदमी नही था। या तो वह एक कायर गीदड था या वह हिसक भेडिया था हिसक भेडिया — भेडिया

क नही अजन्ता और एलोरा मे दबी वे लाशे आदमी की ही तो है। देलवाडा और मीनाक्षी के मन्दिरो की देहलिया आदमी के नत मस्तक होने से ही तो घिसी है, घराशाही ताजमहल का वह चमचमाता पत्थर जो मेरी आख मे आज भी चौंधिया रहा है, आदमी का ही तो तराशा हुआ है।

ख (इस सवाद के साथ ख क की तरफ आने लगता है और क क्रमश मच के दूसरी तरफ धीरे धीरे हटने लगता है।) अतीत की तारीफ करनेवाले तुम कौन हो? कौन हो तुम? तुम्ही मेरे बाप हो ना? बताओ, तुमने मुझे क्यो पैदा किया? आखिर क्यो ?

क (मच पर ख से दूसरी तरफ हटते हुए) नही, मैं तुम्हारा बाप नही हू मैने तुम्हे पैदा नही किया।

ख (स्वय की ही कालर और गला पकडते हुए। साथ ही क भी ख के अदाज म ही अपना कालर और गला पकडते हुए) झूठे! मक्कार! कमीने! तुम्ही ने मुझे पैदा किया है। मैं तुम्हारा गला घाट दूगा।

क नही, मुझे मत मारो। मैने तुम्हे पैदा नही किया। (अपने स्वय के गले को भीचते हुए) मुझे मत मारो (और मच से हटते हुए अन्त म मच के छोर पर जाकर गिर जाता है।)

ख मर गये ! अच्छा हुआ मर गये ! तुम्हे अपने पेट मे इन्ही हाथो से मरना था (अफसोस की मुद्रा म) आफ ! यह क्या हो गया ! मेरा बाप तो कभी का मर चुका है। यह फिर मैंने किसको मार दिया ? जो अभी अभी मेरे साथ चाय पी रहा था, हस रहा था, जिसने मेरे ललाट को अभी अभी प्यार से चूमा था, उसे मार दिया ? यह क्या हो गया है मुझे ? समझ मे नही आता, मुझमे यह हत्यारा कैसे पदा हो गया ?

(दस पद्रह फीट की लम्बाई पर ख वाले रस्से का एक अन्य छोर कमर म बाधे हुए ग सोच की मुद्रा मे, अपने हाथो की उगलियो को मोडत हुए दशको की ओर मुह मच के मध्य की ओर धीरे धीरे चलते हुए प्रवेश करता है।)

ग देखो, देखो, मेरा उगलिया मुडती हैं। इनमे जान है खून है। देखा यह मेरा सिर है, मेरी ही गरदन पर रखा हुआ। मैं हू, मैं जि दा हू। म बोल सकता हू देख सकता हू, सुन सकता हू। फिर फिर मुझे यह क्या हो गया है !

(ख और ग समान वत्तिया के प्रतिनिधि हैं। अत इनम एक के बोलने के साथ-साथ दूसरा भी अनुकूल कि तु अपेक्षाकृत म द अभिनय करता है। ग क उक्त अभिनय के साथ ख भी वैसा ही अभिनय करता। है।)

ख नही मैंने अपने बाप को नही मारा।

ग तो फिर किसको मारा ? रास्ते चलते 'उसको' मारा ?

ख   जब 'उसको' मारा तो 'इसको' भी मार सकता हू, हर राहगीर को मार सकता हू। हर आदमी को मार सकता हू। पर क्यो   क्यो   (ख अपने हाथो से अपने मु ह को ढकते हुए बैठ जाता है।)

ग   क्योकि मैने अपने बाप को नही मारा।
(और ग भी अफसोस के भाव के साथ मु ह को उगलियो से ढके हुए बैठ जाता है।)
(पर्दे के पीछे से क की छाया तीव्र स्वर मे ठहाका मारती हुई नजर आती है और इसी के साथ ख और ग चीख कर, मच के दर्शक छोर की ओर दर्शको की ओर पीठ किये हुए तीव्रता से हटते है।)

क   (छाया) पहले तो तुमने मुझे मार डाला, अब मुझ ही से डरते हो!

ख   तुम कौन हो ?

क   (छाया) मेरा अब कोई नाम नही, क्योकि मैं मर चुका हू। नाम तो सिर्फ तुम्हारे लिए है क्योकि तुम जिन्दा हो—खूनी! पापी! हत्यारा!

ग   ओफ! तुम मुझे जीने भी दोगे या नही ?

क   (छाया) जीने तो तुमने मुझे नही दिया। तुम जीओ, जरूर जीओ

ख   अब क्या चाहते हो ?

क   (छाया) एक जवाब। सिर्फ एक सवाल का जवाब।

ग   जवाब   ! मरने के बाद भी!

क   (छाया) (व्यग्यात्मक हसी) हैं   है- है   अभी पूरी तरह मरा ही कहा हू? तुम्हारे जवाब के

बाद पूरी तरह मर जाऊ गा । फिर कभी नही आऊ गा ।

ख सवाल पूछो ।

क (छाया) तुमने मुझे क्यो मारा ? क्यो ?

ग म इस सवाल का जवाब नही दे सकू गा ।

क (छाया) तो म मर भी नही सकू गा ।

ख म मजबूर हू । इस नचिकेता के पास भी सवाल ही सवाल हे । ढेर सारे सवाल । जवाब एक था जो दे दिया ।

क (छाया) कौनसा ?

ख तुम्हारी हत्या । मेरे प्रश्नो की बारूद का सिर्फ एक ही बम बना था—तुम्हारी हत्या ।

ग ओफ ! मुझे तो खुद ही अफसोस है कि मैंने तुम्हे क्यो मारा ?

क (छाया) सुनो ! सवाल से कुण्ठित मेरी आत्मा तब तक भटकती रहेगी जब तक तुम जवाब नही दोगे । और सुनो ! मैं भी तुम्हे चैन से जीने नही दू गा ।

(क की छाया धीरे धीरे लुप्त हो जाती है ।)

ख ओ मेरे जनक ! पिता ! अतीत ! इतिहास ! तुमने मुझे प्रश्नो के जगल मे कहा छोड दिया है ? गुस्सा तुम पर आता है हत्या किसी और की कर देता हू ।

ग कितनी हत्यायें कर चुका हू ? कितनी और करू गा ?

घ लेकिन लेकिन इसमे मेरा दोष भी क्या है ?

ख वाह ! हत्या भी करूगा और दोष से भी बचूगा !

ग लेकिन मै क्या करूँ ? मैं एक ऐसे निर्दयी बाप की औलाद हू जिसने मुझे इन सुनसान टीलो मे भटकने के लिए छोड दिया है ।

घ मेरी समझ मे यह नही आता कि तुम अपने बाप से इतनी नफरत कैसे करने लग गये ?

ख नफरत नही करूगा तो और क्या करूगा ? तुम्ही बताओ ! अगर तुम्हारे पिता को बम बनाने का नशा हो युद्ध लडने का व्यसन हो, जो बेकसूर आदमी को मारता हो और कुर्सी के मोह मे करोडो लोगो को कैदी बना लेता हो

ग जिसकी जबान मे झूठ, हाथो मे तोप और मन मे कपट हो । जनाब ! बाप भी हो तो क्या, तुम उसे कैसे पसन्द कर पाओगे जो तुम्हारे भविष्य को गुलाम बनाने पर तुला हो !

घ मुझे लगता है तुम्हे कुछ हो गया है ! तुम पागल जैसे हो गये हो नही-नही, तुम पागल ही हो गये हो ।

ख और हो भी क्या सकता हू ।

घ पागल महाराज, अभी तो छोडो यह दर्शन और लो बैठो ।

(घ ख को कुर्सी की ओर इशारा करता है ।)

ग (कुर्सी की ओर देखकर आश्चर्य से) इस पर बैठूं ? इस कुर्सी पर ? जरूर यह कुर्सी टूटी हुई होगी। मुझे मालूम है मैं इस पर बैठा और यह चरमरा कर गिर जायेगी। नहीं मैं इस पर बैठूंगा नहीं।

घ (कुर्सी हिलाकर दिखाता है) ओफ ! कुछ भी नही टूटी है यह। यह देखो ! है साबुत ! फिर ? अब बैठो।

(ग धीरे धीरे कुर्सी की तरफ बढ़ता है फिर कुर्सी को स्वयं हिलाकर आश्वस्त होकर उठने ही लगता है कि ग कहता है—)

ग मैंने कहा न मैं नहीं बैठूंगा। मुझे तो इसमे भी शक है कि यह धरती जिस पर मैं खड़ा हूं पोली कर दी गई होगी। (दोनों पैरों से जमीन कूटने लगता है। रुककर) ऊपर से तो सख्त दिखाई पड़ती है लेकिन ऐसा हो नहीं सकता। नीचे से जरूर पोली होगी।

घ जरूर पोली होगी ! कुए खुद रहे है इस धरती मे !! तुम किसी की सुनोगे भी या नहीं।

ख आखिर तुम कहना क्या चाहते हो ?

(इसी बीच ङ का प्रवेश। हाथ मे कालपात्र लिए हुए घ के आगे के रस्से से बंधा हुआ)

सुनो ! सुनो ! खुदाई मे यह काल पात्र निकला है, जिसमे कागज ही कागज ! (सबको मौन देखकर) लेकिन तुम मुर्दे बने क्यों खड़े हो ?

ग अपनी भाषा को ठीक करो। जो मुर्दे होते ह वे खडे नही होते।

ख और जो खडे होते ह वे मुर्दे नही होते।

ग काल पात्र निकला है! इसमे क्या लिखा है? पढो-पढो।

ख नही। इसे पढने की जरूरत नही है। मैं कहता हू इसमे कुछ नही होगा। उन हिपोक्रेट व्यूसटा के झूठे दस्तावेज होगे, सिफ कायर लोगो की बदबू होगी, सडी बदबू।

ग इसे वापस गाड दो

ख इसका ढक्कन मत खोलो -

ग मुझे सडाओ मत।

ख मुझे नही चाहिए ऐसा इतिहास ऐसे पुराण झूठो की झूठी बात।

ट धन्य हो, धन्य हो! सत्यवादी हरिश्चन्द्रजी! धन्य हो! आप इतने विदक क्यो रहे ह। जी नही बिदकिये मत। यह तो हमारे पुरखो की निशानी है।

ख तो फिर इसे म्यूजियम मे सजा दिया जाय।

ग (आवेश मे) लगता है तुम घास-फूस की औलाद हो।

ख तुम्हारे दिमाग मे कचरा भरा है। तुम उन कचरा पात्रो को ही सजाना चाहते हो?

ग इतिहास के इस कूडे को गाड दो

ख जितना भी गहरा गाड सको।

घ किस किस को गाडोगे भाईजान ? रेत के टीलो की खुदाई से निकला यह रगमच, यह पाण्डाल, यह भी तो पुरखो का ही है ।

ङ गाडो इसे भी गाडो ! हुह !

(और वह मुह बिदकाता हुआ चला जाता है ।)

ग काश कि हम इसे भी गाड सकते !

ख ओह ! तब यह गुलाम कायर दशको के बैठने का पाण्डाल कैसा लगता होगा ? आज तो सोचने मे भी दम घुटता है ।

ग ऐसे निर्जीव, कमजोर मिट्टी के पुतले दशक ! जबान पर जजीरे डाले, चुपचाप यहा आकर बठ जाते थे, एक खामोशी थी, सन्नाटा था, सन्न-सन्न सन्नाटा ।

घ सन्नाटा तो आज भी है ।

ख आज तो होगा ही । आज तो यह सचमुच श्मशान है । सब मर गये ।

ग लकिन ताज्जुब करोगे, यह तब भी श्मशान था । तब भी यहा आदमी लाश की तरह पडा-पडा भौंडे नाटक देखता था ।

घ लगता है तुम निराशावादी हो । पर्सिमिस्टिक । तुम्हे सिफ बुरा ही बुरा दिखता है । कुछ आस्था रखो ।

ग (व्यग्य से) आस्था !

ग [illegible]

ग आशा।

ख प्रेम।

ग दया।

ख करुणा।

ग सहानुभूति। ये सब बडी अच्छी चीजें हैं।

ख (व्यंग्य म) आदमी को थोडी-थोडी जरूर रखनी चाहिए।

घ हा-हाँ, जरूर रखनी चाहिए, एस्प्रो-एनासिन की गोली की तरह

ख (क्षोभ के साथ) बीस वर्षों तक वियतनाम जलता रहा, कहा गई थी तुम्हारी आस्था ?

घ सालो तक अरब-इस्रायल की तोपें गोले उगलती रही, कहा गया था तुम्हारा विश्वास ?

ख विश्व युद्धो के विनाश मे कहा थी तुम्हारी करुणा ?

ग वाशिंग्टन और मास्को की भट्टिया मे जब बम रहे थे, तब कहा गया था तुम्हारा प्रेम ?

ख प्रेम को लेकर बैठे हो। पता है इस श्मशान का पेड क्या कहता है ?

घ कहता है आज भी हम मे फल आते हैं, हम ने अपना पेडपना नही छोडा और तुम ? तुम आदमी होकर अपनी आदमीयत छोड बैठे ?

ख देखो, हम अभी भी फलो के भार मे झुके हुए हैं और तुम ? आदमी, तुम सन्दको मे बम लिए बैठे हो

ग नदी नदी से मिलकर घनी होती है, बढ़ती है। आदमी आदमी से मिलकर कतराता है जलता है, टूटता है।

ख पता है ताजमहल पर मिट्टी के बोरे डाले गये थे। मुमताज कब्र से चिल्ला उठी थी कि आदमी! तुम कितने नीच हो गये हो, मेरे ज़िन्दा प्यार पर मिट्टी डाल रहे हो।

ग ओ मेरे इतिहास! मैं तुम्हारे किस किस पन्ने को पलटूं मुझे तो तुम्हारे हर पन्ने पर घाव ही घाव नजर आते हैं, कोढ ही कोढ। अच्छा है इस इतिहास के दीमक लग जाय यह फट जाय, बरबाद हो जाय।

घ अच्छा एक बात बताओ, तुम उस आदमी को कैसे नजरन्दाज कर सकते हो जो धरती से चांद पर पहुंच सका था मंगल तक की खबर ला सका था?

ग हूं धरती की पीडा तो समेटी नहीं गई और मंगल तक उछल कूद कर आये!

ख अपनी मां को बिलखता छोडकर औरो की मां के पास भटकने में आदमी को कुछ ज्यादा ही मजा आता है!

घ लेकिन गुजरी बातो पर दुखी क्यो होते हो?

ग दुखी न होऊं तो क्या होऊं? तुम्ही बताओ, अगर कभी तो तुम्हारा बाप और कभी तुम्हारी मां

सत्ता के मोह मे कुर्सी से चिपकी रहे तो तुम कमा महसूस करोगे ?

घ लेकिन पुराने राग को रान से फायदा भी क्या है।

ख मैं रा नही रहा पश्चाताप करके पुरखो का श्राद्ध कर रहा हू तपरा कर रहा हू।

ग उन्नीस सौ अस्सी-नब्बे के लोग महाभारत के बारे मे आश्चय करत थे कि महाभारत के जामने मे व कसे पति थे जो द्रौपदी को नगी होते देखकर भी चुपचाप सभा मे बठे रहे ! और भी नही तो कम से कम उनकी आखा को लकवा ही मार जाता !

ख ये आश्चय करनेवाले भी वे ही सत्तर करोड थे जो आजादी को लालकिले के डण्ड के औंधी लटकाकर ही सब्र करते रहे। वह आजादी हर हवा के झाके मे फडफडाती रही और साठ कराड के उस सारे के सारे हुजूम का साप सू घ गया। उस फडफडाती हुई आजादी को देखकर कोई टस से मस नही हुआ।

ग मुझे लगता है इस धरती पर सत्तर करोड बबूला का एक जगल था। बीहड जगल। कमाल है उनमे क्या एक भी चन्दन नही था जिसमे आजादी की वीणा बन पाती ! विश्वास करोगे सत्तर कराड ढोला मे एक भी साबुत नही था। सबके फेफडे फूटे ढाल थे जिनमे सास रोकने का दम ही नही था।

ख लालकिला अब तो खण्डहर हो गया है, लेकिन लालकिले के खण्डहरो मे आज भी एक सन सन्न की आवाज भटकती रहती है, एक पगली-सी आवाज। कहती है, मेरी सत्तर करोड सताने थी, सब की सब मुर्दा। काई भी मुझे नही बचा सकी।

ग शहीदो ने मुझे खून दिया था जिन्दा लोग मुझे पानी भी नही पिला सके। प्यासी-भटकती-पगली, वह सन सन का आवाज मुझसे तो सुनी नही जाती नही सुनी जाती नही सुनी जाती .

(ग अपना सिर को पकडे, पीडा की अभिव्यक्ति के साथ धीरे धीरे जमीन पर लुढक जाता है।)

ख ओफ! मेरे दिमाग की नसे फट रही हैं। मुझे पानी चाहिए, पानी पानी पानी

(ख भी ग की तरह सिर पकड कर धीरे धीरे बैठकर लुढक जाता है। दो क्षण के विराम के पश्चात् मुनादी-वाला गले मे ढोल लटकाए हुए उसे पीटता हुआ प्रवेश करता है। मुनादीवाले के पीछे चिथडो को लपेटे एक व्यक्ति घिसटता हुआ आता है। उसकी आखें मटमैले कपडे की पट्टी म बधी हुइ, दाना हाथ कमर के पीछे बधे हुए तथा एक पर स लगडाता हुआ मुनादी-वाले की कमर से बधा हुआ घिसटता हुआ चलता रहता है।)

मुनादीवाला (ढोल को तीन बार बजाकर) सुनो, सुनो, सुनो ! कान खोलकर सुनो ! डके की चोट सुनो ! महाराजाधिराज की तरफ से फरमान सुनो ! (प्रत्येक वाक्य के अ त म ढोल पर एक बार डका मारता है) फरमान है कि सारी जनता अमन-चैन मे है । सब प्रसन्न है । (मु ह पर तजनी रख कर सिसकारी मारते हुए सबको चुप कराता हुआ सा) सो ई ई अब कोई किसी की शिकायत न करे । अगर कुत्ते भूखे है तो उन्हे रोटिया डाल दो बिल्लिया नगी है तो उन्ह कपडे पहनादो । (घ जो मौन खडा है, उसकी ओर मुखातिब होकर पूछता है) हें हैं हैं भाईसाहब एक बीडी है क्या ? (घ अपनी जेब टटोलने लगता है । एक जेब में बीडी का बण्डल निकालता है । उसमे बीडी देखता है, मगर वह तो खाली है, उसे फेंक देता है और मुनादी वाल को मना कर देता है ।)

मुनादीवाला खैर ! सुनो, सुनो, सुनो ! कान खोलकर सुनो ! डके की चोट सुनो । महाराजाधिराज का फरमान सुनो । फरमान है कि दु ख दद पातक रोग, घूसखोरी भ्रष्टाचारी और गरीबी ई ई . अब कुछ नही है ।

(मुनादीवाला अपनी जेब मे से सिगरेट का पकेट निकालता है। उसमे से एक सिगरेट निकालकर मु ह म लगाता है और घ स माचिस के लिए पूछता है ।)

मुनादीवाला भाईसाहब माचिस है क्या ?

(घ अपने पास से माचिस देता है। मुनादीवाला माचिस लेकर उसे खोलता है किन्तु वह तो खाली है, अत वह उसे फेंक देता है और अपने पास से लाइटर निकालकर सिगरेट जलाता है तथा एक लम्बा कश खीचकर धुआ निकालता है। और फिर 'सुनो, सुनो, सुनो! कान खोलकर सुनो ' कहता तथा ढोल बजाता हुआ चला जाता है। इसके बाद ग जस नीद से जागता हुआ सा उठता है, यह कहते हुए—)

ग ओफ! कितनी ठोकरें खाई थी उन्होने ? एक के बाद एक। किन्तु वे नही समझ सके। समझदारी तो उन्हे घर जल चुकने के बाद आती थी।

ख (धीरे धीरे उठते हुए) वे कम्बख्त इतने मरियल और सुस्त कैसे थे कि इतिहास को कभी सही मौके पर काम ही नही ले पाये

ग वे इतिहास को निरथक ढोते रहे

घ अफसोस तो मुझे भी होता है कि वे कसे लोग थे ?

ख वे कमी पत्निया थी जिन्होने रिश्वत लेते अपने पतियो को नही रोका

ग वे कैसी बहने थी जो भ्रष्ट हाथो मे राखिया बाधती थी

घ उन माओ के स्तनो मे वह दूध कसा था जिसको पीकर उनकी औलाद कामचोर और मक्कार हो गई थी !

ख   लगता है अब तुम यह सवाल नही पूछोगे कि मै मेरे बाप से नफरत क्या करता हू ।

ग   क्यो न करू ? वे मा बाप, भाई बहिन, स्त्री-पुरुष, ये सब सम्बन्ध थे या घोर स्वाथ ? शादी मे दूल्हा बिकता था

ख   दुल्हन गिरवी रखी जाती थी

घ   जहा का सन्यासी स्मग्लर था

ग   और योगी विलासी ।

ख   जहा लोकतन्त्र तानाशाही लगता था

ग   और तानाशाही को लोग लोकतन्त्र कहते थे ।

ख   तुम जानते नही हो क्या ? गगा का सारा पानी एक एक कर कच्चे घडो मे भरा जाता था और सब लोग उन कच्चे घडो को हथेली लगाते रहते थे ।

ग   अरे वे घडे तो कच्चे थे गल गये, पिघल गये

ख   किन्तु वह पानी भी तो बरबाद गया

ग   वह पानी जो विधवाओ की माग का पानी था

घ   माओ की कोख का पानी था

ख   शहीदो के लहू का पानी था ।

ग   नही-नही, मुझे वह दुनिया नही चाहिए । बमो के टीलो पर लीद-सी पडी वह दुनिया नही चाहिए । मुझे वे सागर, नदिया, जगल, कुछ नही चाहिए । (ग इस कथन के साथ घ के पीछे हो जाता है ।)



डॉ राघव प्रकाश

—एम ए (हिन्दी)स्वर्णपदक प्राप्त (राज वि वि)
—पी-एच डी (राजस्थान विश्वविद्यालय)
—भाषा विज्ञान मे डिप्लोमा (डक्कन कॉलेज, पूना)
—पत्रकारिता मे डिप्लोमा (राज वि वि)
—1972 से राजस्थान के विभिन्न राजकीय महाविद्यायो मे हिन्दी व्याख्याता के रूप मे अध्यापन ।

प्रकाशन

—शैली-विज्ञान और पाश्चात्य एव भारतीय साहित्यशास्त्र (आलोचना)
—तीसरा मचान (नाटक)
—शैलीविज्ञान एव नाट्य-समीक्षा से सम्बधित अनेक लेख
—अन्नपूर्णा रेस्टोरेण्ट (दूरदर्शन से प्रसारित नाटिका)

•••